अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय
1.	वर्ण विचार
2.	वर्ण विचार (टैस्ट)
3.	सन्धि
4.	सन्धि (टैस्ट)
5.	उपसर्ग
6.	अव्यय
7.	प्रत्यय
8.	प्रत्यय (टैस्ट)
9.	शब्द रूप
10.	धातु रूप
11.	कारक
12.	कारक (टैस्ट)
13.	वाच्य
14.	समास
15.	समास (टैस्ट)
16.	छन्द
17.	सूक्ति

Digital Learning Classes

शिक्षण विधियाँ

Unit - I	संस्कृत शिक्षण विधियाँ
Unit - II	भाषा कौशल
Unit - III	शिक्षण सिद्धांत
Unit - IV	अभिरूचि प्रश्न
Unit - V	सहायक साधन
Unit - VI	मूल्यांकन

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय
1.	वर्ण विचार
2.	वर्ण विचार (टैस्ट)
3.	सन्धि
4.	सन्धि (टैस्ट)
5.	उपसर्ग
6.	अव्यय
7.	प्रत्यय
8.	प्रत्यय (टैस्ट)
9.	शब्द रूप
10.	धातु रूप
11.	कारक
12.	कारक (टैस्ट)
13.	वाच्य
14.	समास
15.	समास (टैस्ट)
16.	छन्द
17.	सूक्ति

शिक्षण विधियाँ

Unit - I	संस्कृत शिक्षण विधियाँ
Unit - II	भाषा कौशल
Unit - III	शिक्षण सिद्धांत
Unit - IV	अभिरूचि प्रश्न
Unit - V	सहायक साधन
Unit - VI	मूल्यांकन

Digital Learning Classes

1. भाषा की उत्पत्ति एवं विकास

*** भाषा की उत्पत्तिः**

भाषा शब्द में भाष् धातु और टाप् प्रत्यय अतः भाषा शब्द नित्य स्त्रीलिंग होता है अर्थात्

भाष् + ट् आ प् = भाषा

भाषा शब्द का शब्दिक अर्थ 'बोलना' अथवा 'कहना' होता है।

भाषा की परिभाषा 'व्यक्तावाचि' वर्णा येषां तं इमें व्यक्ता वाचि,

अर्थात् स्वयं की अभिव्यक्ति के द्वारा समझना और दूसरों की अभिव्यक्ति को समझना ही भाषा कहलाती है।

निष्कर्तः– विचार विनमय के वाचिक साधान को भाषा कहते है।

भाषा दो प्रकार की होती हैः–

(i) **मौखिक भाषा** – भाषा के वाक्य जहाँ **ध्वनिबद्ध** होते है, वह मौखिक भाषा कहलाती है।

(ii) **लिखित भाषा**– भाषा के वाक्य जहाँ **लिपिबद्ध** होते हैं। वह लिखित भाषा कहलाती है।

प्रत्येक भाषा के दो अंग होते है।

1. साहित्य 2. व्याकरण

1. साहित्य – हितेन युक्तं काव्यं साहत्यम्

अर्थात् हित से युक्त काव्य रचना होती हैं। अथवा लोककल्याणकारी काव्य को साहित्य कहते हैं। यह भाषा में रूचि उत्पन्न करता है।

2. व्याकरण :– व्याकरण शब्द में वि और आङ् उपसर्ग है कृ धातु है तथा ल्युट् प्रत्यय है ल्युट् प्रत्यय का यु शेष रहता है और युवोरनाकौ सूत्र से यु के स्थान अन हो जाता है तथा ल्युट् प्रत्यय से बना हुआ शब्द नित्य नपुसंकलिंग होता है।

अर्थात् –

वि + आङ् + कृ + ल्युट्

उपसर्ग धातु प्रत्यय

वि + आ + कृ + यु

वि + आ + कृ + अन = व्याकरणम्

व्याकरण परिभाषा :– **''व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा : अनेनेति व्याकरणम्''**

अर्थात् जो शुद्ध शब्दो की रचना करता है तथा शुद्ध शब्दो का निर्माण करता है वह व्याकरण है।

शब्दानुशासनं व्याकरणम्

अर्थात् शब्दों के अनुशासित रूप को व्याकरण कहते है। व्याकरण के दो प्रकार है –

(i) वैदिक व्याकारण (ii) लौकिक व्याकरण

(i) वैदिक व्याकरण – जो वेदों में शुद्ध और अशुद्ध का ज्ञान करवाता हैं वह वैदिक व्याकरण है। यह व्याकरण पाणिनीय शिक्षा पर आधारित है ।

पाणिनीयशिक्षा के अनुसार वर्णों की संख्या 63/64 होती है।

पाणिनीय शिक्षा में स्वर – 21/22

कुल वर्ण– 63/64

1. **मूल/ह्रस्व/लघु/लृजु स्वर – 5** (अ, इ, उ,ऋ, लृ)
2. **गुरू स्वर – 8** (आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ औ)
3. **प्लुत् स्वर – 9** ($अ_3$, $इ_3$, $उ_3$, $ऋ_3$, $लृ_3$, $ए_3$, $ओ_3$, $ऐ_3$, $औ_3$)
4. **व्यंजन – 33**
5. **अयोहवाह – 4** { अनुस्वार (ं) विसर्ग (:) उपध्यमानीय (ᳲप ᳲफ) जिह्वामूलीय (ᳲक ᳲख)
6. **द्विस्पर्शी वर्ण** – ळ(दन्त/मूर्धा)

यदि लृ को प्लुत न माना जाए तो वैदिक व्याकरण में वर्णो की संख्या 63 होती है, तथा लृ को प्लुत् माना जाए तो वैदिक व्याकारण में वर्णों की संख्या 64 होती है।

निष्कर्ष : – **वैदिक व्याकारण में स्वर 21/22 होते हैं।**

मात्राएँ – उचारण में लगने वाले **समय** को मात्रा कहते हैं।

(ii) लौकिक व्याकरण – वर्तमान में प्रयोगिक व्याकरण लौकिक व्याकरण है। यह व्याकरण त्रिमुनि (पाणिनि,कात्यायन, पतज्जलि) की रचनाओं पर आधारित है।

1. पाणिनि –

मूलनाम – ओदनीय पाणिनी (आहिक)

पिता का नाम – पाणिन

माता का नाम – दाक्षी

गुरू – उपवर्ष/वर्षाचार्य

समय – 500 ई. पू. (लगभग)

उपाधि – सूत्रकार/शब्द संक्षेपक

सर्वश्रेष्ठ रचना – अष्टाध्यायी

कुल रचना – **7**

अष्टाध्यायी – इस रचना में आठ अध्याय है जिनमें से सवा सात (7/1/2) अध्याय वर्तमान में प्रायोगिक है। अतः अष्टाध्यायी का दूसरा नाम **सपादसप्तपदी** है।

* इस रचना में लगभग 4000 सूत्र है। जिनमें 3965 सूत्र वर्तमान में प्रयोगिक है। इस रचना के प्रत्येक अध्याय में 4 चरण है। अतः कुल चरण 32 है जिनमें से 29 चरण प्रायोगिक है।
* इस रचना का प्रथम सूत्र **'वृद्धिरादैच्'** है तथा अन्तिम सूत्र **'अ 'अः'** है।

2. कात्यायन–

मूलनाम – वररूचि

गरू – उपवर्ष/पाणिनी

उपाधि – वार्तिककार

रचना – वार्तिकमाला [इसमें लगभग 5000 वार्तिक है जिनमें से 836 प्रायोगिक है।]

समय – 400 ई. पू. (लगभग)

वार्तिक – पाणिनी की अष्टाध्यायी सूत्रों में आवश्यक परिवर्तन/ परिवर्धन और संशोधन करने के लिए जो नियम बनाए गय वे ही वार्तिक कहलाते है।

3. पतञ्जलि (पतत् + अञ्जलि)

मूननाम – अहिक

माता का नाम – गोणिका

गुरू – ऊर्णनाभि

समय– भाष्कार (व्याख्याकार)

रचना – महाभाष्य

* महाभाष्य रचना में पाणिनी के 1710 सूत्रों की संख्या की गई है। इस रचना में कुल **85 आह्निक** है। जिनमें से **84 आह्निक** उपलब्ध है। **73वां आह्निक 'अजा भक्षिकाम्'** (अनुपलब्ध) है।
* उपर्युक्त तीनों मुनियों के विवेचन से यह ज्ञात होता हैं कि सम्पूर्ण लौकिक व्याकरण पाणिनी की अष्टाध्यायी पर आधारित है। इसी कारण **पाणिनि को लौकिक व्याकरण से जनक कहे जाते हैं।**
* अष्टाध्यायी के सभी सूत्र **माहेश्वर सूत्रों** को आधार मानकार निर्मित किए गय हैं।

महेश सूत्र

अइउण् ऋलृक् एओङ
एऔच् हयवरट् लण्
ञमङणनम् झभञ घढधष्
जबगडदश् खफछठथचटवत्
कपय् शषसर् हल्

* इन माहेश्वर सूत्रों की संख्या 14 होती है जिनकी उत्पत्ति भगवान शिव के डमरू (ढक्काम) से हुई है।
* इन सूत्रों में सभी अन्तिम हलन्त युक्त वर्णो का लोप हो जाता है।

* इन माहेश्वर सूत्रों में केवल **है वर्ण की पुनरावृति हुई है।**
* इन माहेश्वर सूत्रों में प्रथम चार सूत्रों में सभी स्वर वर्णों का उल्लेख हुआ है तथा पंचम सूत्र से लेकर चर्तुदश (चौदहवें) सूत्र तक सभी व्यंजन वर्णों का बोध हुआ है।
* **इन माहेश्वर सूत्रों को सभी वर्णों का उत्पति स्थान कहा जाता है**

इन सूत्रों में आने वाले वर्णों का संक्षेपण करके प्रत्याहार निर्मित किए जाते हैं।

प्रत्याहार – पाणिनी के अनुसार प्रत्याहारों की संख्या 42 होती है तथा भट्टोजिदीक्षित की रचना **सिद्धान्त कौमुदी** के अनुसार प्रत्याहारों की संख्या 44 है और वरदराजाचार्य की रचना लघु सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार प्रत्याहारों की संख्या 43 होती है।

निष्कर्षत :– कुल प्रत्याहार 44 होते हैं।

जैसे – प्रायोगिक प्रत्याहार

अण्	–	अ इ उ
अक्	–	अ इ उ ऋ लृ
एङ्	–	ए ओ
ऐच्	–	ए ओ ऐ औ
अच्	–	स्वर
यण्	–	य व र ल
शल्	–	श ष स ह
जश्	–	ज ब ग ड द
झल्	–	4, 3, 2, 1 ऊष्म
हश्	–	ह य व र ल 5, 4, 3
खर्	–	1, 2, श ष स
हल्	–	व्यंजन
यय्	–	उष्म को छोड़कर सभी व्यञ्जन
यर्	–	ह को छोड़कर सभी व्यञ्जन

कुल 44 प्रत्याहार निम्न है :–

अक्	अच्	अट्	अण्	अण्
अम्	अल्	अश्	इक्	इच्
इण्	उक्	एङ्	एच्	ऐच्
खय्	खर्	ङम्	चय्	चर्
छव्	जश्	झय्	झर	झल्
झश्	झष्	बश्	यय्	यर्
यञ्	यण्	यम्	यय्	यर्
रल्	वल्	वश्	शर्	शल्
हल्	हश्	र	ञम्	

इन प्रत्याहारों में अण् दो बार आया है, जिनमें प्रथम अण् = अ, इ, उ तथा द्वितीय अण् = अ, इ, उ, ऋ , लृ, ए , ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल ।

* वर्ण विचार *

वर्ण – ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण कहते है।

वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। अतः वर्ण को ही अक्षर कहा जाता है अर्थात् **वर्णमेव अक्षरः**।

* एक से अधिक वर्ण मिलाकर शब्दों का निर्माण करते है अर्थात् **वर्णसमूहं शब्दः।**
* यदि शब्द के सुप (विभिक्त) और तिङ्(क्रिया) प्रत्यय लग जाते है तो वह शब्द पद कहलाता है अर्थात् सुप्तिङ्न्तंम् पदम्।
* एक से अधिक पद मिलकर वाक्य का निर्माण करते हैं अर्थात् **पदसमूहं वाक्यम्।**

निष्कर्षतः– वाक्य से ही भाषा को बोल व लिख सकते हैं।

* अतः भाषा की सबसे **छोटी इकाई** वर्ण होती है और
* **सबसे बड़ी इकाई वाक्य होती है।** अर्थात् की आदि (प्रथम) इकाई वर्ण होती है और अन्तिम इकाई वाक्य होती है।
* **वर्ण के दो भेद होते है।**

(i) स्वर (ii) व्यज्जन

(i) स्वर–स्वयं राजन्ते इति स्वरः।

जो वर्ण स्वतंत्र रूप से बिना किसी की सहायता से उच्चारित होते हैं वे **स्वर** कहलाते हैं।

* स्वरों की संख्या 13 (त्रयोदश) होती है। जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ , लृ, ए, ओ, ऐ, औ
* **जिनमें मूल/ह्रस्व/लघु/लृजु/स्वर – 5** (अ, इ, उ, ऋ, लृ)

दीर्घ स्वर– 8 (आ, ई, ऊ, ऋ, ए ,ओ, ऐ, औ)

संयुक्त स्वर – 4 (ए, ओ, ऐ, औ)

सजातीय/समान/सवर्ण स्वर – 4 (अ/आ, इ/ई, उ/ऊ, ऋ/ऋ)

अयोगवाह स्वर – 2 (अं, अः)

समान स्वर चार होने के कारण **संस्कृत में स्वर 9 होते हैं।**

(ii) व्यंजन – ''परतन्त्रवर्णा : व्यत्रजनः''

जो स्वर वर्ण की सहायता के बिना उच्चारित नहीं होते हैं, वे व्यंजन कहलाते हैं। व्यंजन 33 (त्रयः त्रिंशत्/त्रयस्त्रिशत्) होते है।

जैसे :–

कवर्ग/कु–	क्	ख्	ग्	घ्	ङ	
चवर्ग/चु	–	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
टवर्ग/टु	–	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
तवर्ग/तु	–	त्	थ्	द्	ध्	न्
पवर्ग/पु	–	प्	फ्	ब्	भ्	म्
अन्तःस्थ	–	य्	व्	र्	ल्	
ऊष्म	–	श्	ष्	स्	ह्	

जिनमें

स्पर्श व्यंजन – 25 (क् – म) 'कादयोमावसानां स्पर्शः'

अन्तस्थ – (य्, व्, र्, ल्) 'यणोऽन्तः'

ऊष्म – 4 (श्, ष्, स्, ह्) 'शल् ऊष्माण'

संयुक्त व्यत्रजन –5 (क् +ष् = क्ष)

त् + र = त्र

ज् + ञ = ज्ञ

श् + र = श्र

द् + य = द्य

अयोगवाह व्यत्रजन– उपध्यमानीय (≍प≍फ) जिह्वामूलीय (≍क≍ख)

अनुनासिक वर्ण – 5 (ञ्, म्, ङ्, ण्, म)

निष्कर्षतः–

संस्कृत वर्णमाला में –

कुल स्वर = 13

कुल व्यंजन = 33

+

कुल वर्ण 46

उपर्युक्त सभी वर्णो के दो स्थान होते हैं।

1. उच्चारण स्थान
2. प्रत्यन स्थान

1. उच्चारण स्थान :–

Digital Learning Classes

सूत्र	वर्ण	संज्ञा
1. अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः	अ/आ + कवर्ग + ह + विसर्ग (:)	कण्ठ्यः
2. इचुयशानां तालु	इ/ई + चवर्ग + य + श	तालव्यः
3. ऋटुरषाणां मूर्धा	ऋ/ॠ + टवर्ग + र + ष	मूर्धन्यः
4. लृतुलसानां दन्ता	लृ/तवर्ग + ल + स	दन्त्यः
5. उपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौ	उ/ऊ + पवर्ग + उपाध्मानीय (⌣प ⌣ क)	ओष्ठ्यः
6. ञमङणनानां नासिका च	ञ म ङ ण न	नासिक्यः
7. एदैतोः कण्ठतालु	ए/ऐ	कण्ठतालव्यः
8. ओदौतोः कण्ठोष्ठम्	ओ/औ	कण्ठोष्ठयः
9. वकारस्य दन्तोष्ठ्	व	दन्तोष्ठयः
10. जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम	(⌣क⌣ख)	जिह्वामूलीय
11. नासिकानुस्वारस्य	अनुस्वार (ं)	नासिक्यः

* उपर्युक्त उच्चारण स्थानों के विवेचन से यह ज्ञात होता है कि वर्णमाला में आने वाले वर्णों के उच्चारण 11 होते है।

* मूल उच्चारण स्थान 7 (कण्ठ, तालु, दन्त, ओष्ठ, नासिक, जिह्यमूल) होते हैं।

* पाणिनी के अनुसार इन 7 के अलावा **उरस् (ह्रदय)** उच्चारण स्थान होता है। **अतः पाणिनी के अनुसार उच्चारण स्थान 8 होते हैं।**

2. प्रयत्न स्थान :–

वर्ण के उच्चारण में लगने वाले प्रयास को प्रत्यन कहते हैं।

*** प्रयत्न दो होते हैः–**

(i) आभ्यन्तर प्रयत्न (ii) बाह्य प्रयत्न

(i) आभयन्तर – जिन वर्णों के उच्चारण में आन्तरिक प्रयास किया जाता है।, वे आभ्यन्तर प्रयत्न कहलाते हैं। आभयन्तर प्रयत्न 5 प्रकार के होते है। जो –

आभयन्तर प्रयत्न	वर्ण	सूत्र
1. स्पृष्टम	क – म (25)	कादयोमावसानां स्पर्श
2. ईषत् स्पृष्टम्	य् व् र् ल्	यणोऽन्तः स्था :
3. ईषत् विवृतम	श् ष्, स्, ह्	शल् उष्माणः
4. विवृतम्	स्वर	अचः स्वराः
5. संवृतम्	ऽ	प्रक्रियादशायां विवृतमेव

(ii) बाह्य प्रयत्न – जिन वर्णों के उच्चारण में बाहरी प्रयास किया जाता है, वह बाह्य प्रयत्न कहलाते हैं। बाह्य **(एकादश)** होते हैं। जो

संवार नाद घोष	**विवार, श्वास, अघोष**	**अल्पप्राण**	**महाप्राण**	**उदात्त, अनुदात्त, स्वरित**
हश् (ह्, य्, व्, र्, ल् 5,4,3)	खर् (2,1, श्, ष्, स्)	1, 3, 5	2, 4	स्वर
क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् ण् त् द् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म् य् व् र् ल् श् ष् स् ह	क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् ण् त् द् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म् य् व् र् ल श् ष् स् ह	य् व् र् ल्	श् ष् स् ह्	

उदातः– अ, आ, ई, इ..........(×)

अनुदात :– अ, आ इ, ई .... (–)

स्वरितः – अ, आ इ, ई .... (⊥)

V2 Digital Learning Classes

* एक व्यंजन के अधिकमत बाह्य प्रयत्न चार हो सकते हैं जैसे – क वर्ण के बाह्य प्रयत्न (विवार, श्वास, श्वास, आघोष अल्पप्राण) होते ।
* एक व्यंजन के अधिकतम प्रयत्न पाँच हो सकते है। जैसे – क वर्ण के प्रयत्न (विवार, श्वास,अघोष, अल्पप्राण, स्पृष्टम्) होते है।
* एक स्वर वर्ण के अधिकतम बाह्मा प्रयत्न तीन (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित) होते हैं।
* स्वर स्वर वर्ण के अधिकतम प्रयन्त चार (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, विवृतम्) होते हैं।

नोट– मात्रा के आधार पर स्वर के तीन भेद होते है।

(i) ह्रस्य (ii) दीर्घ (iii) प्लुत

मात्रा – उच्चारण में लगने वाले समय का मात्रा कहते हैं।

2. वर्ण विचार (टैस्ट)

1. अनुनासिक वर्णाः कति सन्ति?
(1) 5 (2) 6
(3) 10 (4) 4

2. कादयोमावसाना
(1) स्पर्शाः (2) अन्तः स्थाः
(3) ऊष्माणः (4) स्वराः

3. अनुदात्त स्वराः सन्ति?
(1) अ आ इ ई उ ऊ............(2) अ आ इ ई उ ऊ
(3) अ आ इ ई उ ऊ (4) सर्वे

4. आभ्यन्तरप्रयत्नः न अस्ति?
(1) विवृतम् (2) विवारम्
(3) संवृतम् (4) स्पृष्टम्

5. प्रयत्नः कतिधा?
(1) द्विधा (2) पञ्चधा
(3) एकादशध (4) त्रिधा

6. ''ण'' वर्णस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति –
(1) नासिका/कण्ठ (2) नासिका/मूर्धा
(3) नासिका/दन्त (4) नासिका/तालु

7. तालव्य वर्ण नास्ति।
(1) ल (2) य
(3) इ (4) छ

8. ''लुतलसानां
(1) दन्ताः (2) कण्ठ
(3) तालु (4) मूर्धा

9. पाणिन्यनुसारेण
(1) 8 (2) 7
(3) 10 (4) 11

10. अयोगवाह स्वर वर्णम् अस्ति?
(1) उपध्मानीय (2) जिहवामूलीयं
(3) विसर्ग (4) अनुनासिक

11. हस्व स्वरः नास्ति।
(1) इ (2) लृ
(3) ए (4) उ

12. स्वरवर्णाः कति सन्ति?
(1) 10 (2) 11
(3) 15 (4) 9

13. '' अ + उ = ?''
(1) ऊ (2) ए
(3) ओ (4) औ

14. ''सुप्तिङन्तं.................''
(1) वाक्यम् (2) पदम्
(3) वर्णम् (4) शब्द

15. धवन्याः लिखितरूपं
(1) वर्णम् (2) पदम्
(3) वाक्यम् (4) शब्द

16. माहेश्वर सूत्रानुसारेण अन्तःस्थ वर्ण क्रमः?
(1) य व ल र (2) य र व ल
(3) य ल र व (4) य व र ल

17. वाणिनीयशिआनुसारेण स्वराः सन्ति।
(1) 21/23 (2) 20/21
(3) 21/22 (4) 21/25

18. अष्टाध्यायी अपर नाम कः?
(1) पञ्चसप्तपदी (2) सपादपञ्चपदी
(3) सपादसप्तपदी (4) नवपदी

19. ''व्याकरणम्'' व्युत्पत्ति–
(1) वि + आ + कृ + ल्युट (2) वि + आङ + कर + ल्युट
(3) वि + आङ + कृ + ल्युट (4) वि + आङ + कृ + अन

20. मात्राधरेण स्वराः कतिधा
(1) द्विधा (2) त्रिधा
(3) एकादशधा (4) त्रयोदशधा

Digital Learning Classes

3. सन्धि

सन्धि शब्द में सम् उपसर्ग है।''वर्ण सन्धान सन्धि '' दो वर्णों के मेल से उत्पन्न होने वाले विकार को सन्धि कहते है। संधि शब्द का दूसरा नाम **संधान/मेल/योग/जोड़ भी होता है।**

सन्धि सूत्र – ''पर : सन्निकर्ष : संहिता ''

सन्धि के भेद– सन्धि के तीन भेद होते हैं –

1. स्वर सन्धि, (अच्) 2. व्यंजन सन्धि (हल्) 3. विसर्ग सन्धि।

स्वर सन्धि

दो स्वर वर्णो के मेल से उत्पन्न होने वाले विकार को स्वर सन्धि कहते हैं। ''**स्वर वर्ण +स्वर वर्ण = स्वर सन्धि** '' स्वर सन्धि के मुख्यतः 5 भेद होते हैंः–

1. यण् सन्धि 2. अयादि सन्धि 3. गुण सन्धि 4. वृद्धि सन्धि 5. दीर्घ सन्धि।

1. यण सन्धि

सूत्र **'इकोयणचि'** [इक् + अच् असमान स्वर)

↓

इक् – ↓ यण् ⇒ [इ/ई उ/ऊ ऋ/ॠ लृ ; य् व् र् ल्] + भिन्न स्वर

इ/ई = य्

इति + आदि — इ त् इ + आ ↓ य्

नारी + अत्र — र् ई + अ ↓ नार्यत्र

नदी + उद्गम — द् ई + उ — नद्युद्गम/नद्युद्गम

वारि + अस्ति — वार्यस्ति

इत्यादि

सुधी + उपास्य = सुध्युपास्य

लक्ष्मी + औदार्यम् = लक्ष्म्यौदार्यम्

प्रति + उत्तरम् = प्रत्युत्तरम्

परि + आवरणम् = पर्यावरणम्

अति + आदेश = अत्यादेश

अपि + अक्षितम् = अप्यक्षितम्

लघुसिद्धान्तकौमुदी + अनुसारेण — द् ई + अ ↓ य् — लघुसिद्धान्तकौमुद्यनुसारेण

गिरि + अत्र — र् ई + अत्र ↓ य् — गिर्यत्र

ऋषि + आदेश — ऋ ष् इ + आ ↓ य् — ऋष्यादेश

उ / ऊ = व्

अनु + आगमनम् = अन्वागमनम्

मधु (शहद) + अरि (शत्रु) = मध्वरि :

भानु + एध = भान्वेध

मनु + आदेश = मन्वादेश

तनु + अग्ङी = तन्वग्ङी

गुरू + आदेश = गुर्वादेश

विष्णु + आज्ञा = विष्ण्वाज्ञा

शिशु + अस्ति = शिश्वस्ति

वधु + आज्ञा = वध्वाज्ञा

मनु + अन्तरम् = मन्वन्तरम्

लघु + अत्र = लध्वत्र

अनु + अय = अन्वयः

सु + आगतम् = स्वागतम्

होतृ + अंश = होत्रंश

धातृ + अंश = धात्रंशः

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

मातृ + उपदेश = मात्रुपदेश

होतृ + आकारः = होत्राकार :

लृ + आकृति = लाकृतिः

लृ + आदेश = लादेशः

Digital Learning Classes

लृ + आकारः = लाकारः　　　　　　लृ + अनुबन्ध = लनुबन्धः

प्रत्याहार = प् र् अ त् य् + आ ह् आ र् अ = प्रति + आहार
प्रत्यक्ष = प् र् अ त् य् + अ क् ष् = प्रति + अक्ष
अत्याचारम् = अ त् य् + आ च् आ र् अ म् = अति + आचारम्
पठत्वत्रः = प् अ ठ् अ त् व् + अ त् र अ = पठतु + अत्र
स्वार्त = सु + आर्त
सिध्यत्वेतत् = सिध्यतु + एतत् = सिधि + अतु + एतत्
देवेष्वासीत = देवेषु + आसीत्

* **अयदि सन्धि**

सूत्र – " **एचोऽयवायावः** " = एच् (अयदि) + अच्

एच् =	ए	ओ	ऐ	औ	
	↓	↓	↓	↓	**+ स्वर**
	अय्	अव्	आय्	आव्	

पदान्त में यदि एच् (ए ओ ऐ औ) हो और उत्तर पद में कोई सा भी स्वर हो तो क्रामशः ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् हो जाता है।

जैसे –					
	हरे	+	ए	–	हरये
	रूपे	+	ए	–	रूपये
	(जि) जे	+	अः	–	जयः
	(नी) ने	+	अनम्	–	नयनम्
	(चि) चे	+	अनम्	–	नयनम्
	(शीङ्) शे+	अनम्	–	शयनम्	
	(भी) भे	+	अः	–	भयः
	(हुञ्) हो +	अनम्	–	हवनम्	
	(पुञ्) पो	+	अनम्	–	पवनम्
	(भू) भो	+	अनम्	–	भवनम्
	(नी) ने	+	अक	–	नायकः
	(दा) दै	+	अक	–	दायकः
	(गा) गै	+	अक	–	गायकः
	विधै	+	अक	–	विधायकः
	(भू) भौ	+	अक	–	भावकः
	(धा) धौ	+	अक	–	धावकः
	(शु) शौ	+	अक	–	शावकः
	नौ	+	इक	–	नाविकः

गायनम् = ग् आ य् + अ न् अ म् = गै + अनम्
पावकः = पौ + अक = प् आ व् + अ क
वटअक्ष = व् अ ट् अ ओ + ऋ क्ष = वटो + ऋक्ष

अपवाद – अपवादित रूप अयदि सन्धि का न होकर "**एचोऽवायावः**" सूत्र का होता है। अर्थात् यहाँ **अपवादी अवस्था में भी अयदि सन्धि होती है।**

वार्तिक 1–'वान्तो यि प्रत्यये '

उत्तर पद में **प्रत्यय का य हो तो ओ के स्थान पर** अव् और **औ के स्थान पर आव्** हो जाता है।

ओ – अव्, औ–आव्

जैसे–　　श्रो + यम् = श्रव्यम्
　　　　गो + यम् = गव्यम्

(हुञ्) हो + यम् = हव्यम्
(भुञ्) भो + यम् = भव्यम्
नौ + यम् = नाव्यम्
सौ + यम् = साव्यम् (दायाँ पक्ष)

वार्तिक 2–'अध्वपरिमाणे च '
गव्यूति : = गो + यूति : (गोचर)
यहाँ मार्ग/दूरी के शब्द में इस वार्तिक से अयदि सन्धि हुई है।
अध्वन् =मार्ग दूरी, परिमाणः = माप।

गुण सन्धि

गुण संज्ञा विधायक सूत्र – **"अदेङ् गुणः"**

अत्	एङ्	गुणः
↓	↓	
अ	ए/ओ	

"अ ए ओ " को गुण कहते है।

गुण/सन्धि विधायक सूत्र –"आद्गुण"

अ/आ+इ/ई= ए	अ/आ + उ/ऊ = ओ
अ/आ +ऋ/ॠ = अर्	अ/आ + ऌ = अल्

उदाहरण – गण + ईश (ण् अ +ई = ए) = गणेशः
रमा + ईश = रमेशः
राजा + ईश = राजेश :
राजा + इन्द्र = राजेन्द्र
वाराग्ङ्ना + इव = वारागङ्नेव
महा + उत्सव = महोत्सवः
सूर्य + उदय = सूर्योदय :
हित + उपदेश = हितोपदेशः
पर + उपकार = परोपकारः
महा + ऊर्मि = महोर्मि
सप्त + ऋषि = सप्तर्षि
वसन्त + ऋतु = वसन्तुर्तुः
कृष्ण + ऋद्धि = कृष्णार्द्धः
शरद + ऋतु = शरदर्तुः
तव + ऌकार = तवल्कारः (तेरे अनुकूल)
मम + ऌकार = ममल्कारः (मेरे अनुकूल)

गुण सन्धि के अपवाद

गुण सन्धि के अपवाद में नित्य रूप से **वृद्धि सन्धि होती है।**

वार्तिक 1 –**"अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्"**

अक्ष शब्द के परे ऊहिनी शब्द हो तो गुणसन्धि न हो वृद्धि सन्धि होती है।

जैसे– अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी

वार्तिक 2 – **"प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु"**

प्रात् + ऊह + ऊढ + ऊढि + एष + एष्य + एषु

प्र उपसर्ग के परे यदि ऊह अढ, ऊढि, एष, एष्य में से कोई सा भी पद होतो गुण सन्धि न हो कर वृद्धि सन्धि होती है।

जैसे – प्र + ऊह = प्रौहः (तार्किक)
प्र + ऊढ = प्रौढः
प्र + ऊढि = प्रौढिः
प्र + एष = प्रैषः (भेजना)
प्र +एष्य = प्रैष्यः (सेवक/नौकर)

वार्तिक 3 – **"प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे"**

प्र, वत्सतर, कम्बल, वसन, ऋण दश शब्दों के परे यदि **ऋणम्** शब्द हो तो गुण सन्धि न हो कर वृद्धि सन्धि होती है। अर्थात् अ + ऋ = आर् होता है।

प्र + ऋणम् = प्रार्णम् = प् र् अ + ऋ ण म् (अ +ऋ = आर्) = प्रार्णम्/प्रार्णम्
वत्सर + ऋणम् = वत्सतरार्णम्
कम्बल + ऋणाम् =कम्बलार्णम्
वसन + ऋणम् = वसनार्णम्
ऋण + ऋणाम् = ऋणार्णम्

दश + ऋणम् = दशार्णम्

वार्तिक 4– "ऋते च तृतीया समासे"

उत्तर पद में यदि ऋतः शब्द हो और तृतीया तत्पुरूष समास का भाव हो तो गुण सनिध न होकर वृद्धि सन्धि होती है।

जैसे – सुख + ऋतः = सुखार्तः   दुःख + ऋतुः = दुःखार्तः

क्षुधा + ऋतः = क्षुधार्तः   पिपासा + ऋतः = पिपासार्तः

नोटः– यदि कर्मधारय समास का भाव होता है तो गुण सन्धि ही प्रायोगिक होती है।

जैसे – परम + ऋतः = परमर्तः

वार्तिक 5– "एत्येधत्यूठ्सु"

उत्तर पद में **एति, एधते और ऊह** में में कोईसा भी शब्द हो तो वृद्धि सन्धि होती है।

जैसे – उप + एति = उपैति   उप + एधते = उपैधते

प्रष्ठ/प्रोष्ठ + ऊह = प्रष्ठौह/प्रौष्ठौह

नोटः– उपैति और उपैधते दोनो में पररूप सन्धि का अपवादित भाव प्रकट होता है।

वृद्धि सन्धि :–

वृद्धि संज्ञा विधायक सूत्र – "वृद्धिरादैच"

वृद्धिः आत् ऐच्
↓ ↓
आ ऐ / औ

"आ ऐ औ " का वृद्धि कहते हैं।

वृद्धि सन्धि सूत्र – **"वृद्धिरेचि"**

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अ/आ + ओ/औ = औ

"उपसर्गादृति धातौ" अकारान्त उपसर्ग के बाद में ऋ से प्रारम्भ होने वाली कोई धातु हो तो वृद्धि सन्धि होती है। अर्थात् अ + ऋ = आर होता है।

1. प्र + ऋच्छति (प र् अ + ऋ = आर्) प्रार्च्छति	2. उप + ऋच्छति = उपार्च्छति
3. प्र + ऋणति = प्रार्णति	

Digital Learning Classes

जैसेः–

देव + ऐश्वर्यम् = दैवेश्वर्यम्   एक + एकम् = एकैकम्

महा + एकयम् = महैक्यम्   सदा + एव = सदैव

वसुधा + एव = वसुधैव   तथा + एव = तथैव

सदा + ओज = सदौज (सदा वीरता की भावना)   कृष्ण + एकत्वम् = कृष्णैकत्वम्

महा + औदार्यम् = महौदार्यम्   कृष्ण + औदार्यम् = कृष्णौदार्यम्

महा + औषधि = महौषधि   वन + औषधि = वनौषधि

तथा + औत्सुक्यम् = तथौत्सुक्यम्   गङ्गा + ओघ (झोपड़ी) = गङ्गौघः

दीर्घ सन्धि

सूत्र – "अकः सवर्णे दीर्घ"

अ/आ + अ/आ = आ   इ/ई + इ/ई = ई

उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ   ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = ॠ

जैसेः– दैत्य + अरि = दैत्यारि   सत्य + आग्रह = सत्याग्रहः

नित्य + आनन्दम् = नित्यानन्दम्   न + आत्मज = नात्मजः

एक + आदेश = एकादेश   सूर्य + आगमनम् = सूर्यागमनम्

हिम + आलय = हिमालयः   देव + अराधना = देवाराधना

कृष्ण + आकार = कृष्णाकार   विद्या + आदि = विद्यादि

विद्या + आलय = विद्यालयः
श्री + ईश = श्रीशः
लक्ष्मी + ईश = लक्ष्मीशः
लक्ष्मी + इव = लक्ष्मीव
रवि + इंद्र = रवींद्रः
कपि + ईश = कपीशः हनुमान का पर्याय
नदी + ईश = नदीशः
गुरू + उपदेश = गुरूपदेश
भानु + उदय = भानूदयः
वधु + उत्सव = वधूत्सव
लघु (छोटी) + ऊर्मि(लहर) = लघूर्मिः
होतृ + ऋकार = होतृकारः
गमनागमनम् = गमन(जाना) + आगमनम्(आना)

दीर्घ सन्धि के अपवाद में नित्य रूप से पररूप सन्धि होती है परन्तु शकन्धु गण में जो शब्द बोधित होते हैं उनमें भी दीर्घ का अपवादित भाव प्रकट होते हुए पररूप सन्धि होती है।

वार्तिक–"शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्"

शक + अन्धु = शकन्धु (सूखा कुआ)
कर्क + अन्ध = कर्कन्धुः (बेर का वृक्ष)
मार्त + अण्ड = मार्तण्डः (सूर्य का पर्याय)
सार + अड़ग् = सारड़ग्ः
कुल + अटा (विपरीत) = कुलटा
सीमन् + अन्त = सीमन्त (बालों की जड़ें)
पतत् + अञ्जलि = पतञ्जलिः
मनस् + ईषा इच्छा = मनीषा मन की इच्छा
हलस् + ईशा = हलीशा (किसान का पर्याय) लाडग्ल + ईशा = लाडग्लीशा

नोटः– उपर्युक्त उदाहरणों में पूर्व पद के अंतिम अच् का लोप हो जाता है। अंतिम अच् का लोप करने के लिए **"अचोऽन्तयदि टि"** सूत्र से उस अच् की टि संज्ञा की जाती है। और जिस स्वर की टि संज्ञा होती है उसका "तस्य लोप" से लोप हो जाता है।

जिस–जिस अंतिम अच् की टि संज्ञा होती है उसके बाद में आने वाले सभी व्यंजन वर्णो की स्वतः ही टि संज्ञा हो जाती है। और तस्य लोपः से लोप हो जााता है।

पूर्वरूप सन्धि

सूत्र – "एङः पदान्तादति"

पदान्त में एङ् (ए/ओ) और उत्तर पद में ह्रस्व (अ) हो तो पूर्ववर्ति एवं परवर्ती के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश हो जाता है।

अर्थात् **ए + अ = ए ऽ** **ओ + अ = ओ ऽ**

हरे + अत्र = हरेऽत्र
ते + अति = तेऽपि
को + अति = कोऽपि विष्णो + अस्मि = विष्णोऽस्मि
को + अति = कोऽति
विष्णो + अपि = विष्णोऽपि
सकलो + अपि = सकलोऽपि

पररूप सन्धि

सूत्र – "एड़िपररूपम्"

अकारान्त उपसर्ग के बाद में ए अथवा ओ से प्रारम्भ होने वाली कोई धातु हो तो पूर्व पद एवं उत्तर पद दोनो के स्थान पर पररूप एकादेश होता है।

अर्थात् **अ + ए = ए** **अ + ओ = ओ**

जैसे – प्र + एजते = प्रेजते
उप + एजते = उपेजते
प्र + ओषति = प्रोषति
उप + ओषति = उपोषति (ज्वलनशील)

विशेष – शरीर के अंग वाचक शब्दों में भी पररूप सन्धि का बोध होता है।

जैसे – बिम्ब + ओष्ठ = बिम्बोष्ठः/बिम्बोष्ठम्
अधर + ओष्ठ = अधरोष्ठः/ अधरोष्ठम्
स्थूल + ओष्ठ = स्थूलोष्ठः/स्थूलोष्ठम्

नोट :– उपर्युक्त पररूप सन्धि के उदाहरण वृद्धि सन्धि के अपवाद होते है।

प्रकृति भाव सन्धि

सूत्र – "ईदूदेद् द्विवचनं प्रग्रह्यम्"

ईत, ऊत्, एत् द्विवचनं प्रगृह्यम्

ईकारान्त ऊकारान्त एकारान्त यदि द्विवचन के शब्द हों तो उनकी **प्रगृह्य** संज्ञा होती है। जिसकी **प्रगृह्य** संज्ञा होती है उनमें सन्धि का

Digital Learning Classes

अभाव होता है अर्थात् प्रकृतिभाव सन्धि होती है।

जैसे – हरी + इमौ = हरि इमौ
विष्णू + एतौ = विष्णू एतौ
गङ्गे + इमे = गङ्गे इमे

सूत्र– 2 "अदसो मात्"

अदस् (सर्वनाम शब्द) शब्द के योग में भी प्रकृति भाव सन्धि होती है।

जैसे– अमी + ईशा = अमी ईशा/अमीशा
अमी + अजा = अमी अजा
अमू + अश्व = अमू अवश्

व्यंजन संधि

दो व्यंजन वर्णों अथवा व्यंजन स्वर वर्णों के मेल से उत्पन्न होने वाले विकार को व्यंजन सन्धि कहते है। व्यंजन सन्धि का स्वतंत्र रूप से कोई भेद/प्रकार नहीं होता है। जो विकार उत्पन होता है उस विकार को ही सन्धि के नाम स सम्बोधित किया जाता है।

श्चुत्व सन्धि

सूत्र– "स्तोःश्चुना श्चुः"

स्/तवर्ग के पहले अथावा बाद में श्/च वर्ग का कोई वर्ण हो तो स् के स्थान पर श् और तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जाता है।

$$\begin{bmatrix} \text{स्}\ \ \text{त्}\ \ \text{थ्}\ \ \text{द्}\ \ \text{ध्}\ \ \text{न्}\ \ + \text{श्}\ \ \text{चवर्ग} \\ \text{श्}\ \ \text{च्}\ \ \text{छ}\ \ \text{ज्}\ \text{झ्}\ \text{ञ्} \end{bmatrix}$$

जैसे –

रामस् + शेते	= रामश्शेते	यज्+ नः	= यज्ञः
शार्गिन + जयः	= शार्गिञ्जयः	रामस् + चिनोति	= रामश्चिनोति
कस् + चित्	= कश्चित्	उद् + ज्वलम्	= उज्ज्वलम्
सद् + जनः	= सज्जनः	तत् + चः	= तच्चः
सत् + चित्	= सच्चित्		

अपवाद :–

निषेध सूत्र – "शात्"

पदान्त में यदि श् हो तो इस सूत्र से श्चुत्व सन्धि का बोध (निषेध) होता है।

जैसे– प्रश् + नः = प्रश्नः (शंका/संशय)
विश् + नः = विश्नः (गति)

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नही होता है अतः इन उदहरणो में कोई सन्धि नही है।

2 "ष्टुत्व सन्धि"

"ष्टुना ष्टुः"

स्/तवर्ग के पहले अथवा बाद में ष्/टवर्ग हो तो स् के स्थान ष् और तवर्ग के स्थान पर टवर्ग हो जाता है।

$$\begin{bmatrix} \text{स्}\ \ \text{त्}\ \ \text{थ्}\ \ \text{द्}\ \ \text{ध्}\ \ \text{न्}\ \ + \text{ष्}\ \ \text{टवर्ग} \\ \text{ष्}\ \ \text{ट्}\ \ \text{ठ}\ \ \text{ड्}\ \ \text{ढ्}\ \ \text{ण्} \end{bmatrix}$$

रामस् + षष्ठः	= रामष्षश्ठः	तत् + टीका	= तट्टीका
चक्रिन् + ढौकसे	= चक्रिण्ढौकसे	पेष् + ता	= पेष्टा (लेपन करने वाला)
कृष् + न	= कृष्णः		

अपवाद –

सूत्र –1 "न पदान्ताट्टोरनाम्"

पदान्त में यदि ट वर्ग हो तो ष्टुत्व सन्धि का बाध (निषेध) होता है।

जैसे – षट् + ते = षट्ते   षट् + सन्तः = षट् सन्तः

सूत्र – 2 "तोः षि"

पदान्त में तवर्ग का वर्ण हो और उत्तर पद में ष् वर्ण हो तो भी ष्टुत्व सन्धि को बोध होता है।

जैसे – सन् + षष्ठः = सन् षष्ठः

Digital Learning Classes

उपर्युक्त दोनों सूत्रों से ष्टुत्व सन्धि का निषेध हुआ है।

"न पदान्ताट्टोरनाम्" सूत्र से ष्टुत्व सन्धि का बोध (निषेध) होता है परन्तु **"अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्"** वार्तिक से यदि पदान्त में ट वर्ण हो और उत्तर पद में नाम नवति, नगर्य शब्द हो तो ष्टुत्व संधि का बोध होता है। निष्कर्षतः "अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्" वार्तिक "न पदान्ताट्टोरनाम्" सूत्र का अपवादित रूप है।

जैसे –

1. षट् + नाम = षट् + णाम: (ष्टुत्व) = षण्णामः (अनुनासिक)
2. षट् + नवति = षट् + णवति (ष्टुत्व) = षण्णवति (अनुनासिक)
3. षट् + नगर्य = षट् + णगर्यः (ष्टुम्व) = षण्णगर्यः (अनुनासिक)

3. जशत्व सन्धि

सूत्र – "झलां जशोऽन्ते"

झल् (जश्) + स्वर / हश्

पदान्त में यदि झल् (4, 3, 2 ,1 ऊष्म) हो और उत्तर पद में स्वर अथवा हश् (ह् य् व् ल् 5, 4, 3 हो तो झलो के स्थान पर जश् हो जाता है।)

झल् (4, 3, 2 ,1 ऊष्म) + स्वर / हश् (ह् य् व् र् ल् ऽ)

↓

जश् (ज् ब् ग् ड् द्)

वाक् + ईशः	= वागीशः	वाक् + आगमः	= वागागमः
अच् + अन्त	= अजन्त	षट् + आननम्	= षडाननम्
कृत + अन्त	= कृदन्त	जगत् + ईशः	= जगदीशः
अप् + जम्	= अब्जम्		

4. पूर्वसवर्ण सन्धि

सूत्र– "झयोहोऽन्यतरस्याम्"

पदान्त में यदि किसी वर्ग का प्रथम वर्ण हो और उत्तर पद में ह वर्ण हो तो ह के स्थान पर पूर्वसवर्ण सन्धि हो जाता है। अर्थात ह के स्थान पर पूर्ववर्ण का चतुर्थ वर्ण आदेश हो जाता है।

जैसे–

पत् + हति	= पद्	+ हति (ध)	= पद्धतिः
सत् + हति	= सद्	+ हहति (ध)	= सद्धतिः
उत् + हरणम्	= उद्	+ हरणम् (ध)	= उद्धरणम्
वाक् + हरि	= वाग्	+ हरिः (घ)	= वागघरि :

नोट– उपर्युक्त जशत्व सन्धि का वैकल्पिक रूप पूर्वसवर्ण सन्धि होती है।

चर्त्व सन्धि

सूत्र– "खरि च "

झल् + खर् (4, 3, 2, 1 श् ष् स् ह ऊष्म)

↓

चर् (उसी वर्गो के प्रथम वर्ण श् ष् स्)

पदान्त में यदि झल् और उत्तर पद में खर् हो तो झलों के स्थान पर चर् हो जता है।

जैसे–

उद् + थानम्	= उत्थानम्	उद् + तीर्णम्	= उत्तीर्णम्
उद् + तरम्	= उत्तरम्	उद् + कर्षः	= उत्कर्षः
सद् + पुत्रः	सत्पुत्रः		

अनुनासिक सन्धि

सूत्र– "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"

यर् + अनुनासिक

↓

अनुनासिक

पदान्त में यदि यर् (ह को छोड़कर सभी व्यञ्जन) हो और उत्तर पद में अनुनासिक वर्ण हो तो पदान्त के स्थान पर उसी वर्ग का अनुनासिक वर्ण (पंचम वर्ण) हो जाता है।

जैसे–

वाक् + मयम्	= वाङ्मयम्	जगत् + नाथः	= जगन्नाथः
एतत् + मुरारिः	= एतन्मुरारिः	सत् + मार्गम्	= सन्मार्गम्
चित् + मयम्	= चिन्मयम्	तत् + मात्रा	= तन्मात्रा
षट् + नामः	= षण्णामः	षट् + नवति	= षण्णवति
षट् + नगर्यः	= षण्णगर्यः		

लत्व सन्धि (परसवर्ण सन्धि)

सूत्र– "तोर्लि"

पदान्त में यदि तवर्ग का कोई वर्ण हो और उत्तर पद में ल वर्ण हो तो तवर्ग के स्थान पर भी ल वर्ण हो जाता है। उत्तर पद में ल वर्ण होने पर पूर्व वर्ण के स्थान पर ल वर्ण (परसवर्ण) हो जाता है अतः इस सन्धि को **परसवर्ण सन्धि** के नाम से भी जाना जाता है।

तवर्ग + ल
↓
ल

जैसे–

उत् + लासः	= उल्लासः	तत् + लीनः	= तल्लीनः
मत् + लीनः	= मल्लीनः	उत् + लेख	= उल्लेखः
महत् + लेखः	= महल्लेखः	महान् + लाभः	= महालँल्लाभः
विद्वान् + लिखति	= विद्वाल्ँलिखति	विद्युत + लेखा	= विद्युल्लेखा

अनुस्वार सन्धि

सूत्र– "मोऽनुस्वारः"

म् + हल्
↓
अनुस्वार

पदान्त में यदि म् वर्ण हो और उत्तर पद में कोई सा भी व्यञ्जन वर्ण हो तो म् के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है।

जैसे–

गम् + ता	= गंता	शाम् + ति	= शांति
व्यम् + जन	= व्यंजन	अम् + डा	= अंडा
कम् + ठः	= कंठः	सम् + धि	= सन्धि

नोट – अनुस्वार सदैव म् के स्थान पर होता है परन्तु असन्त (जिसके अन्त में अस् हो। जैसे–मनस् तेजस् छन्दस् चन्द्रस् पयस् यशस् आदि) शब्द हो तो द्वितीय विभक्ति बहुवचन अर्थात् 'शस्' प्रत्यय के योग में 'न' के स्थान पर भी अनुस्वार हो जाता है।

जैसे–

यशान् + सि	= यशांसि	मनान् + सि	= मनांसि
चन्द्रान् + सि	= चन्द्रांसि	तेजान् + सि	= तेजांसि
पयान् + सि	= पयांसि	छन्दान् + सि	= छन्दांसि

Digital Learning Classes

परसवर्ण सन्धि

सूत्र – "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णे "

अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण (बाद वाले का पंचम् वर्ण) हो जाता है। यदि उत्तर पद में यय् (ऊष्म वर्णों को छोड़कर सभी व्यंजन) हो तो ।

जैसे–

सं + गति	= संर्गितः	सं + धि	= सन्धि
कं + ठः	= कण्ठ	व्यं + जन	= व्यंजन
		सं + भवम्	= सम्भवम्
पं + कजम्	= **पङ्कजम्**		

नोटः– अनुसवार सन्धि व परसवर्ण सन्धि दोनों के स्थान पर परसवर्ण प्रायोगिक रूप से उपयोगी व उचित हो ती है क्योंकि अनुस्वार विकृत रूप परसवर्ण सन्धि होती है। परन्तु परसवर्ण सन्धि का कोई विकार नहीं होता है। अतः भाषा में 'परसवर्ण सन्धि ही शुद्ध रूप से प्रायोगिक होती है।

परसवर्ण सन्धि ऊष्म वर्णों के योग में बाधित होती है अर्थात् उत्तर पद में यदि कोई सा ऊष्म वर्ण हो तो अनुस्वार में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नही होता है।

निष्कर्षतः ऊष्म व अन्तस्थ वर्ण उत्तर पद में हो तो अनुस्वार का उच्चारण स्थान उत्तर पद (परसवर्ण) के आधार पर होता है।

जैसे– " संयोग " शब्द में अनुस्वार का उच्चारण स्थान – तालु
" संयोग " शब्द में अनुस्वार का उच्चारण स्थान – दन्ताः
" संस्कार " शब्द में अनुस्वार का उच्चारण स्थान – दन्ताः
" संरत " शब्द में अनुस्वार का उच्चारण स्थान – मूर्धा
" कंवतः " शब्द में अनुस्वार का उच्चारण स्थान – ओष्ठः
" संरभ " शब्द में अनुस्वार का उच्चारण स्थान – मूर्धा

छत्व सन्धि

सूत्र – **"शश्छोऽटि"**

उत्तरपद में स्थित श् के स्थान पर 'छ' हो जाता है। यदि श् के परे अट् (स्वर ह् य् व् र्) हो तो । इस सूत्र का भाव श्चुत्व सन्धि के योग में ही होता है। यदि पदान्त में श्चुत्व बोधित 'त्' ना हो तो **'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्"** तथा **"छे चः" सूत्र से तुक् (त्)** का आगम होता है।

जैसे–

1. परि + छेद
परि तुक् + छेद (ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्)
परि त् + छेद
↓
परि च् + छेद ("स्तो श्चुना श्चु")
परिच्छेदः

2. लक्ष्मी + छाया
लक्ष्मी तुक् + छाया "छे चः"
लक्ष्मी त् + छाया
लक्ष्मी च् + छाया स्तोः श्चुना श्चुः
लक्ष्मीच्छाया

उत् + श्वासः = उच्छावासः
मृत + शकटिकम् = मृच्छकटिकम्
तत् + शिवम् = तच्छिवम्

आगम

आगम सूत्र – "ड.मोह्रस्वादचि ड.मुण् नित्यम्"

पदान्त में "ड.म्" (ड्. ण् न्) हो और ड.म् से पूर्व ह्रस्व स्वर हो तो नित्य रूप से ड.म् का आगम होता है।

जैसे – प्रत्यड् + आत्मा = प्रत्येड्.डात्मा सुगण् + ईश = सुगण्णीश
सन् + अच्युत = सन्नच्युत सन् + अन्त = सन्नन्त

वैकल्पिक सूत्र –

निषेध सूत्र – 1. "मो राजि समः क्वौ।"

क्विप् प्रत्ययान्त अर्थात् राजन शब्द के योग में 'म्' के स्थान पर अनुस्वार का बाध होता है।

जैसे– सम् + राटः = सम्राट

2. "वा पदान्तस्य "

इस सूत्र से अनुस्वार का निर्धारण उच्चारण स्थान के आधार पर होता है। अर्थात् अनुस्वार के स्थान पर उत्तरं पद का पंचम वर्ण होता है। परन्तु विकलप के अनुस्वार अपरिवर्तित भी रहता है।

जैसे– त्वम् + करोषि = त्वं करोषि

यहाँ "त्वं करोषि " उदाहरण में विकल्प से परसवर्ण का बाध हुआ है।

विसर्ग सन्धि

इन सन्धि में पदान्त में स्थित विसर्ग में विकार होता है।

1. सत्वसन्धि

सूत्र– **1 "विसर्जनीयस्य स"**

पदान्त में यदि विसर्ग हो और उत्तर पद में खर् (श, 1 श् ष् स्) हो तो विसर्ग के स्थान पर 'स्' आदेश होाता है।

जैसे – हरिः + त्राता = हरिस्त्राता विष्णुः + त्रायते = विष्णुस्त्रायते
पुरः + कारम् = पुरस्कारम् नमः + कारम् = नमस्कारम्

सूत्र – **2 "वा शरि "**

पदान्त में यदि विसर्ग हो और उत्तर पद में शर् (श् ष् स्) हो तो विसर्ग के स्थान पर भी उत्तर पद में स्थित शर् आदेश होता है।

जैसे– हरिः + शेते = हरिश्शेते निः + सारम् = निस्सारम्

Digital Learning Classes

2. रूत्व सन्धि

सूत्र – 1 "ससजुषो रूः"

पदान्त में स्थिति विसर्ग के स्थान पर " रू (र्) आदेश होता है। यदि उत्तर पद में स्वर अथवा हश् हो तो।

अर्थात् विसर्गः + स्वर / हश् (ह् य् व् र् ल् 5, 4,3)

↓

रू(र्)

वृद्धिः + आदैच् = वृद्धिरादैच्   भानुः + इव = भानुरिव (सूर्य के समान)

गुरूः + विष्णु = गुरूर्विष्णु   गुरूः + ब्रह्म = गुरूर्ब्रह्म

2. रेफ प्रक्रिया (र् लोपित क्रिया)

सूत्र– "रोरि"

पदान्त में यदि विसर्ग हो और उत्तर पद में " र् " वर्ण हो तो विसर्ग के स्थान पर "ससजुषे रूः" सूत्र से र् हो जाता है। "रो रि" सूत्र से पूर्ववर्ती "र्" का लोप हो जाता है। अर्थात् "र् + र् " की स्थिति में पदान्त में स्थित र् का "रोरि "सूत्र से लोप हो जाता है और "ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽण्" सूत्र से जिस र् का लोप होता है। उसके पूर्व का अण् (अ, इ, उ) दीर्घ हो जाता है।

जैसे – निर् + रोग = नीरोग   प्रातर् + रमते = प्रातारमते

पुनर् + रमते = पुनारमते   हरिर् + रम्यः = हरीरम्यः

शिशुर् + रोदति = शिशूरोदति

उत्वसन्धि

सूत्र– 1. "अतोरोरप्लुतादप्लुते"

पदान्त में यदि विसर्ग हो और विसर्ग के पूर्व में 'अ' तथा बाद में भी 'अ' हो तो विसर्ग के स्थान पर 'उ' हो जाता है। पूर्ववर्ती अ एवं उ दोनों के स्थान पर गुण एकादेश हो जाता है। अर्थात् अ + उ = ओ हो जाता है तथा अन्त में पूर्वरूप प्रतिक्रिया होती है। अर्थात् ओ + अ = ओ।

जैसे– क : + अपि =

↓

क् अ उ + अपि = कोऽपि

ओ

सकलः अपि = सकलोऽपि   शिव : अर्च्यः = शिवोऽर्च्यः   सः + अपि = सोऽपि

सूत्र – 2. "हशि च "

पदान्त में यदि विसर्ग हो और विसर्ग के पूर्व में अ तथा विसर्ग के बाद में हश् (ह् य् व् र् ल् 5, 4, 3) हो तो विसर्ग के स्थान पर 'उ' हो जाता है। पूर्ववर्ती अ एवं उ दोनों के स्थान पर गुण एकादेश होता है।

जैसे– शिवः + वन्द्य = शिवोवन्द्य

↓

शिव् अ उ + वन्द्य

ओ

नमः + नमः = नमोनमः   तपः + वनम् = तपोवनम्

मनः + विज्ञानम् = मनोविज्ञानम्   यशः + दा = यशोदा

मनः + रथम = मनोरथम्

नोटः– उत्व सन्धि में पदान्त विसर्ग के स्थान पर सकार (स्) का प्रयोग भी विकल्प से होता है।

जैसे– शिवस् + अर्च्यः = शिवोऽर्च्यः   मनस् + विज्ञानम् = मनोविज्ञानम्

तपस् + वनम् = तपोवनम्   शिवस् + वन्द्यः = शिवोवन्द्य

Digital Learning Classes

4. संधि (टैस्ट)

सन्धि–विच्छेद	सन्धि मेल	सन्धि नाम
सूर्य + अस्तः		
करोति + इति		
क्षीण + आयुः		
वीर + अङ्गना		
कुत्र + अपि		
काल + अनन्तरम्		
स्मरण + अर्थम्		
सर्व + अधिकाः		
अध्ययन + अभिलाषा		
वस्त्रा + आवृताः		
मुर + अरिः		
स्वराज्य + आन्दोलनम्		
लघु + ऊर्मिः		
वधू + उदयः		
स्नान + अर्थम्		
तुण्डेन + अस्य		
खग + अधिपः		
मही + ईश्वरः		
ध्वज + आरोहणम्		
सूर्य + आतपे		
बल + अधिकेन		
तथा + इति		
राका + ईशः		
यथा + ईप्सितम्		
आत्म + उन्नतिः		
पुरूष + उत्तमः		
सर्व + उदयः		
चन्द्र + उदयः		
परम + उत्कर्षः		
सर्व + उन्नति		
गंगा + ऊर्मिः		
महा + ऊर्जितम्		
देव + ऋषिः		
महा + ऋद्धिः		
राजा + ऋषिः		
मम + लृकारः		
प्राचीन + इतिहासे		
वंश + उद्योग		
सर्व + ऋतुः		
चम्पक + उद्दालकः		
विबुध + उद्यानम्		
प्रथम + उपग्रहः		
प्र + उक्तम्		
स्नान + उपकरणम्		
सूर्य + उदयात्		
गृह + उद्याने		
श्रद्धा + इयम्		
यथा + इच्छया		
यथा + इच्छया		
रक्षा + इति		
कृष्ण + एकत्वम्		
यथा + एव		
परम + ऐश्वर्यम्		
देव + ऐश्वर्यम्		
जनता + ऐक्यम्		
तण्डुल + ओदनः		
पाप + ओघः		
सूप + ओदनम्		
महा + औषधम्		
सदा + औत्युक्यम्		
दधि + अत्र		
इति + औत्सुक्यम्		
प्रति + आह		
सति + अपि		
सुधी + उपास्यः		
पृथिवी + उवाच		
पार्वती + उवाच		
नदी + अत्र		
अनु + अयः		
सु + आगतम्		
अस्तु + इति		
गुरू + औदार्यम्		
वधू + आगमनम्		
चमू + आगमनम्		
धातृ + अंशः		
लृ + आकृतिः		
पित्तमति + अस्ति		
खलु + इयम्		
खलु + अस्माकम्		
यदि + अपि		
प्रति + अक्षम्		
भरिष्यामि + आहरिष्यामि		
मनसि + आगता		
इति + आदीनि		
प्रति + एकम्		
को + अपि		
बुभुक्षितो + अस्मि		
श्रान्तो + अस्मि		
करे + अप्यास्ते		

Digital Learning Classes

गृहे + अपि
विष्णु + इमौ
रामस् + शेते
दुस् + चरित्रः
सत् + चरित्रः
विश् + नः
वृष् + तिः
आकृष् + तः
दृष् + तिः
दिक् + गज
वाक् + वैभव
उत् + योगः
यत् + यत्
दिक् + नाथः
षट् + नवति
उत् + नतिः
षट् + मुखः
सत् + नारी
जगत् + नाथः
सद् + कारः
तद् + परः
उद् + पन्नः
उद् + साहः
सद् + पुत्रः
शाम् + तः
कुम् + ठितः
अम् + कितः
तत् + लीनः
विद्वान् + लिखित
देवः + अधुना
सः + अधुना
रामः + वन्द्य
रामः + जयति
शिष्यः + जयति
बालः + हसति
पुनर् + रमते
हरिर् + रम्यः
निर् + रोगः
आविः + कृतम्
बहिः + कारः
चतुः + परम्
चतुः + कोणम्
उच्चैः + तत्र
छात्राः + च
नमः + तुभ्यम्
युवतोः + जननी
वाल्मीकीः + वधु
कः + अयम्

यदाहम्
चाधिको
महीश्वरः
नरेन्द्रः
मृगेन्द्रः
पुष्पेन्द्रः
गणेशः
परमेश्वरः
कृष्णेश्वरः
सुखोपविष्टः
जलोर्मिः
सुखोर्मिः
गंगोदकम्
यथोचितम्
महोत्सवः
वर्षर्तुः
सूर्योदयः
शैलेन्द्रम्
महोदयः
उपेक्षिता
क्षीरोदनम्
चोक्तम्
सोत्साहम्
सेयम्
प्रोवाच्
पष्पोद्यानम्
पुरूषोपार्जिता
राक्षसेन्द्रेण
प्रत्यागतः
अब्जः

Digital Learning Classes

5. उपसर्गज्ञानम् प्रयोगश्च

उप + सर्ग

दूसरा + निर्माण

उप + सृज् + घञ् = उपसर्गः

'उपसर्गाः क्रियायोगे' = उपसर्ग क्रिया के योग में प्रयुक्त होते हैं।

* परिभाषा :– 'उपसर्गात् धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते
आहारप्रहारसंहारविहार परिहारवत्।।'

अर्थात् उपसर्ग ऐसे शब्दांश होते हैं जो किसी धातु से पूर्व जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं। जैसे हम 'हृ' धातु को लेते हैं। 'हृ' का वास्तविक अर्थ होता है – चुराना। परन्तु इस शब्द के पूर्व निम्नानुसार शब्दांश (उपसर्ग) जोड़ दिए जाने पर अर्थ परिवर्तन हो जाता है –

हरति → चुराता है
प्र + हरति → प्रहरति = प्रहार करता है
आ + हरति → आहरति = भोजन करता है
उप + हरति → उपहरति = भेंट देता है
सम् + हरति → संहरति = संहार करता है
वि + हरति → विहरति = भ्रमण करता है
परि + हरति → परिहरति = छोड़ता है

संस्कृतव्याकरणे प्रादयः मूलाः उपसर्गाः द्वाविंशतिः भवन्ति। यथा –

1.	प्र	→	आगे/अधिक	→	प्रदेशः, प्रहारः, प्रयोगः, प्राचार्यः, प्रवासः, प्रयोजनः, प्रभुः, प्रहरतिः, प्रचलति, प्रक्षालयति।
2.	परा	→	पीछे/अधिक/विपरीत	→	पराजयः, पराक्रमः, पराभवति, पराजयते, पराक्रमति, परावर्तते।
3.	अप	→	बुरा/विपरीत	→	अपकीर्तिः, अपमानं, अपकारः, अपहरणम्, अपकरोति, अपहरति, अपभाषयति।
4.	सम्	→	अच्छी तरह/सहित	→	संगतिः, संतोषः, संध्याः, संस्कृतम्, संभवति, संस्करोति, संचरति, समीक्षते।
5.	अनु	→	पीछे/पश्चात्	→	अनुचरः, अन्वीक्षणम्, अनुवादः, अन्वेषणं, अनुजः, अनुज्ञा, अनुरागः, अन्वितिः, अनुगच्छति, अनुधावति, अनुसरति, अनुकरोति, अनूदितम्।
6.	अव	→	बुरा/हीन/विपरीत	→	अवगुणः, अवसरः, अवशेषः, अवतारः, अवगच्छति, अवतरित, अवभानयति।
7.	निस्	→	बिना/बाहर/रहित	→	निश्चयः, निष्पाण, निस्सहायः, निस्सरति, निष्क्रमति, निस्तेजः, निश्छलः, निस्संदेहः।
8.	निर्	→	बिना/बाहर/रहित	→	निरपराधः, नीरोगः, निराशा, नीरसः, नीरवः, नीरन्ध्रं, निर्गच्छति, निर्दिष्टे, निरपेक्षते।
9.	दुस्	→	बुरा/विपरीत/कठिन	→	दुष्कर्मः, दुश्चरित्रम्, दुश्शासनः, दुस्सत्वम्, दुष्करोति, दुश्चरति, दुस्सहते, दुस्साहस।
10.	दुर्	→	कठिन/बुरा/विपरीत	→	दुराग्रहः, दुर्जनः, दुर्गतिः, दुराचरणम्, दुर्व्यवहरति, दुर्बोधः, दुर्बुद्धिः, दुर्बोधः।
11.	वि	→	विशेष/भिन्न	→	विजयः, विक्रमः, विकृतिः, विचक्षणः, व्ययः, व्याधिः, विचरति, विकसति, विहरति, विनश्यति, वितरति।
12.	आङ्(आ)	→	तक/पर्यन्त	→	आहारः, आरक्षणं, आहरणम्, आजीवनम्, आहरति, अरोहति, आगच्छति, आनयति।
13.	नि	→	बड़ा/विशेष	→	निवासः, न्यायः, न्यूनतम्, न्यस्तः, निवसति, निगद्यते, निलीयते।
14.	अधि	→	प्रधान/अंदर/में	→	अध्यक्षः, अध्ययनम्, अधीक्षकः, अध्यूढा, अधिगच्छति, अध्यापयति, अध्यास्ते।
15.	अभि	→	पास/सामने	→	अभ्यासः, अभ्यागतः, अभिवादनम्, अभिभावकाः, अभिभाषणम्, अभ्यर्थना।
16.	अति	→	अधिक/परे	→	अतिक्रमणम्, अत्यावश्यकः, अत्यन्तः, अतीव, अत्याचारः, अतिसारः, अत्यधिकम्।
17.	अपि	→	भी	→	अपितु, अपिहितम् (ढका हुआ), अपिधानम् (ढक्कन)।
18.	सु	→	अच्छा/सरल	→	स्वागतम्, स्वल्पम्, स्वच्छः, सुपुत्रः, संसगतिः, सूक्तिः, सुशीलः, सुविचाराः।
19.	उत्	→	ऊपर/श्रेष्ठ	→	उत्थानम्, उच्चारणम्, उल्लेखः, उज्ज्वलानि, उत्थापयति, उद्गच्छति, उद्यानम्, उत्कीर्णम्।
20.	प्रति	→	प्रत्येक/विपरीत/विशेष	→	प्रत्येकः, प्रतिरूपं, प्रतीकः, प्रतीतः, प्रत्युत्तरः, प्रत्याशा, प्रत्यागच्छति, प्रत्युपकारः।
21.	परि	→	चारों ओर/सम्पूर्ण	→	पर्यावरणम्, पर्याप्तः, परिजनाः, पर्युषणम्, परिहरति, परिवसति, परिवारः।
22.	उप	→	पास/दूसरा	→	उपवनं, उपदेशः, उपहारः, उपप्रमुखः, उपवासः, उपचारयति, उपकरोति, उपदिशति।

उपर्युक्त उपसर्गों में **अकारान्त** उपसर्ग 4 (प्र, अप, अव, उप,) होते हैं।

अजाति (स्वर प्रारम्भ में) उपसर्ग – उपसर्ग – 10 (अप, अनु, अव, आङ्, अधि, अपि, उत्, अभि, उप) होते हैं।

हलन्त उपसर्ग – 7 (सम्, निस्, निर्, दुस्, दुर्, आङ्, उत्) होते हैं।

इत्संज्ञक उपसर्ग एक मात्र आङ् होता है जिसके ङ् का लोप हो जाता है।

Digital Learning Classes

6. अव्यय

* **परिभाषा** – 'अव्यय' दो शब्दों के योग से बना है – 'अ + व्यय' अर्थात् जो खर्च नहीं होता है उसे अव्यय कहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जो शब्द हर स्थिति में अपरिवर्तित रहता है। अर्थात् किसी भी लिंग, वचन, विभक्ति एवं पुरूष में सदैव अपरिवर्तित रहने वाले शब्द ही अव्यय शब्द कहलाते हैं। यथा –

''सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्नव्येति पदव्ययम्।।''

* अव्यय का प्रयोग – जिन शब्दों के अन्त में 'र्' अथवा 'स्' होता है उनको अव्यय रूप में वाक्य में प्रयोग करते समय विसर्ग में बदल देते हैं। जैसे –

पुनर् = पुनः, अन्तर् = अन्तः, उच्चैस् = उच्चैः, नीचैस् = नीचैः, प्रातर् = प्रातः

* अव्यय के भेद – अव्यय शब्द – धातु से उत्पन्न मूल अव्यय शब्द। यथा – च, वा, खलु, विना आदि।

1. **रूढ़ या अव्युत्पन्न अव्यय शब्द** – धातु से उत्पन्न मूल अव्यय शब्द। यथा – च, वा, खलु, विना आदि।
2. **यौगिक या व्युत्पन्न अव्यय शब्द** – किसी कृत् अथवा तद्धित् प्रत्यय के योग से बने अव्यय शब्द खादित्वा, वकुतम् सर्वदा, द्विधा आदि।

वाक्य प्रयोग –

1. **अत्र** – अहं अत्र पठामि।
राम ! आगच्छ।
2. **अद्य** – सः अ जयपुरं गमिष्यति।
ते अद्यागमिष्यन्ति।
3. **इत** – तव विद्यायलः इतः कातिदूरमस्ति।
गच्छ, इतः।
4. **इत्थम्** – इत्थम् सः सफलः अभूत्।
इत्थं तु वयं सफलं न भविष्याम्‌ः
5. **इदानीम्** – इदानीम् त्वं किं करिष्यसि ?
इदानीम् तुष्णीं भव।
6. **शनैः** – सः शनैः शनैः चलति।
सा शनैः अवदत्।
7. **उच्चैः** – लता उच्चैः स्वरैः गायति।
सा उच्चैः अहसत्।
8. **नीचैः** – अधमाः जनाः नीचैः गच्छन्ति।
सा नीचैः आगच्छत्।
9. **नमः** – श्री गणेशाय नमः।
श्री गुरवे नमः।
10. **कथम्** – त्वमत्र कथमागच्छः?
सः कथं लिखति?
11. **कदापि** – अहं कदापि असत्यं न वदामि।
सा कदापि विद्यालयं नागच्छत्।
12. **किल** – किलायं विद्वान्।
गुरवः किल उपदिशन्ति छात्रभ्यः।
13. **पुनः** – किम् अनेन पुनः उक्तेन।
मोहनः पुनः पठतु।

14. **यथा** – यथा राजा तथा प्रजा।
यथा करिष्यिषि तथा लप्स्यसे।
15. **तथा** – यथा कर्म तथा फलम्।
यथा गुरूः तथा शिष्यः।
16. **खलु** – शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।
व्याकरणं खलु पठामि।
17. **धिक्** – धिक् नास्तिकं यः ईश्वरं न मन्यते।
धिक् दुर्जनम।
18. **प्रातः** – अहं प्रातः भ्रमामि।
सः अपि प्रातः भ्रमणार्थं गच्छति।
19. **चिरम्** – जिरं जीवी भव!
सः चिरं जीवति।
20. **किमर्थम्** – त्वं किमर्थ तत्रागच्छात्?
किमर्थम् त्वं भयं करोषि?
21. **कुतः** – अविद्यस्य कुतः धनम्?
कुतो भवान्?
22. **कदा** – त्वं कदा आगच्छात्?
कुतो भवान्?
23. **अपि** – अहमपि जयपुरं गमिष्यामि। (मैं जी जयपुर जाऊँगा।)
तत्र कोऽपि नासीत्। (वहाँ कोई भी नहीं था।)
24. **श्वः** – अहं श्वः जयपुरं गमिष्यामि। (मैं कल जयपुर जाऊँगा)
श्वः अवकाशः अस्ति। (कल अवकाश है।)
25. **अधुनाः** – अधुना त्वंकिं करोषि ? (अब तुम क्या कर रहे हो?)
सः अधुना अत्र नास्ति। (अब वह यहाँ नहीं है।)
26. **ह्यः** – ह्यः त्वं कुत्र अगच्छः ? (कल तुम कहाँ गये थे?)
ह्यः रविवारः आसीत्। (कल रविवार था।)
27. **कुत्र** – त्वं कुत्र वससि? (तुम कहाँ रहते हो)
ते कुत्र गच्छन्ति? (वे कहाँ जा रहे हैं?)
28. **शनैःशनैः** – शनैः शनैः ते लक्ष्यम् अलभन्? (धीरे–धीरे उन्होंने लक्ष्य को पा लिया)
बालिका शनैः शनैः चलति (बालिका धीरे–धीरे चल रही है।)
29. **विना** – जलं/जलेन/जलात् विना जीवनं सम्भवं नास्ति।
(जल के बिना जीवन सम्भव नहीं है।)
परिश्रमं/परिश्रमेण/परिश्रमात् विना सफलतां न प्राप्नोति।
(परिश्रम के बिना सफलता नहीं मिलता है।)
30. **सह** – पुत्रेण सह आगतः पिताः (पिता पुत्र के साथ आया है।)
हरिणा सह नारदः गच्छति। (हरि के साथ नारद जा रहा है।)
31. **धिक्** – धिक् नास्तिकं यः ईश्वरं न मन्यते। (नास्तिक को धिक्कार है, जो ईश्वर को नहीं मानता है।)
धिक् दुर्जनम् (दुर्जन को धिक्कार है।)
32. **अलम्** – अलं विवादेन। (विवाद मत करो।)
रामः रावणाय अलम्। (विवाद मत करो।)
33. **प्रति** – स. ग्रामं प्रति अगच्छत्। (वह गांव की ओर गयो है।)
अहं आपणं प्रति गच्छामि। (मैं बाजार की ओर जा रहा हूँ)

स्वरादिनिपातमव्ययम्
स्वरादि में पठित एवं निपात संस्क शब्दों की अव्यय संज्ञा होती है।

Digital Learning Classes

अव्यय		अर्थ	अव्यय		अर्थ
स्वर् (स्वः)	–	स्वर्ग	हेतौ	–	निमित्त/कारण
अन्त्र् (अन्तः)	–	मध्य	वत् प्रत्ययान्त	–	ब्राह्मणवत्, क्षत्रियवत् आदि
प्रातर् (प्रातः)	–	सुबह	तिरस्	–	पराभव
पुनर् (पुनः)	–	दोबारा	अन्तरा	–	मध्य
उच्चैस् (उच्चैः)	–	ऊँचा	अन्तरेण	–	बिना
नीचैस् (नीचैः)	–	नीचा	शम्	–	सुख
शनैस् (शनैः)	–	धीरे	सहसा	–	आकस्मिक
ऋते	–	बिना/रहित	विना	–	बिना
युगपत्	–	एक साथ	नाना	–	अनेक
आरात्	–	दूर और समीप	स्वस्ति	–	मङ्गल/कल्याण
पृथक्	–	अलग से	स्वधा	–	पितरों को हवि/तर्पण
ह्यस् (ह्यः)	–	बीता हुआ कल	अलम्	–	पर्याप्त, निषेध
श्वस् (श्वः)	–	आने वाला कल	वषट्, वौषट्, श्रोषट्	–	देवताओं को आहुति/योग्य
दिवा	–	दिन	अन्यद्	–	अन्य
रात्रौ	–	रात में	उपांशु	–	रहस्य, मौन उच्चारण
सायम्	–	शाम में	क्षमा	–	क्षमा
चिरम्	–	बहुत समय तक	विहायसा	–	आकाश
ईषत्	–	अल्प/कम	दोषा	–	रात्रि
तूष्णीम्	–	चुप (मौन)	मृषा	–	झूठा
बहिस् (बहिः)	–	बाहर	मिथ्या/अनृतम्	–	झूठा
समया	–	समीप	मिथो, मिथः	–	साथ
स्वयम्	–	खुद	प्रायस्	–	प्रायः
वृथा	–	व्यर्थ	मुहुस्	–	पुनः
नक्तम्	–	रात्रि	भूयस् (भूयः)	–	पुनः
नञ् (न)	–	अभाव	साम्प्रतम्	–	उचित/न्याय
आर्यहलम्	–	बलात्कार	परम्	–	किंतु
आभीक्ष्णम्	–	पुनःपुनः	साक्षात्	–	प्रत्यक्ष
साकम्/सह	–	साथ	सत्यम्	–	स्वीकारना
नमस्	–	नमस्कार	संवत्	–	वर्ष
विना	–	बिना	अनिशम्	–	निरन्तर
धिक्	–	धिक्कार/निन्दा, भर्त्सना	नित्यम्	–	निरन्तर
अम्	–	शीघ्र, कम	सदा	–	निरन्तर
आम्	–	स्वीकार (हाँ)	अजस्रम्	–	निरन्तर
मा	–	निषेध	सन्ततम्	–	निरन्तर
अवस्	–	नीचे	उषा	–	रात्रि
सामि	–	आधा	ओम्	–	ब्रह्म स्वीकारना
अवश्यम्	–	जरूर	झटिति	–	शीघ्रता से
सुष्ठु	–	अच्छा	वदि/बदि	–	कृष्णपक्ष
दुष्ठु	–	बुरा	सुदि/शुदि	–	शुक्लपक्ष
असाम्प्रतम्	–	अनुपयुक्त	वरम्	–	अच्छा
नमः	–	प्रणाम			

नोट :– सभी उपसर्ग हो सकते हैं परंतु सभी अव्यय नहीं। क्योंकि उपसर्ग नियत (निश्चित्) होते हैं और अव्यय अनिश्चित् होते हैं।

Digital Learning Classes

7. प्रत्यय – प्रकरणम्

* 'प्रतीयते विधीयते इति प्रत्ययः'

अर्थात् जो मूल प्रकृति के अन्त में जुड़कर शब्दों का निर्माण करते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं अथवा ऐसे शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तिन कर देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं। जैसें –

1. मुच् + क्त → मुक्तः
2. मुच् + क्तवतु → मुक्तावान्
3. शिक्षा + ण्वुल् → शिक्षकः

प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं :

1. कृदन्त – जो धातु से संलग्न होते है, वे कृदन्त प्रत्यय कहलाते हैं।
2. तद्धित – जो शब्दों से संलग्न होते है, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।
3. स्त्री प्रत्यय – जो पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग शब्दों में परिवर्तित करते हैं, वे स्त्री प्रत्यय कहलाते हैं।

कृदन्त प्रत्ययः

'कृदतिङ्.' धात्वाधिकारे तिङ्.भिन्नप्रत्ययानां कृत् संज्ञा भवति।

अर्थात् धातु के अधिकार में 'तिङ्.' से भिन्न प्रत्यय 'कृत्' प्रत्यय कहते है।

निम्नलिखित प्रत्यय 'कृत' प्रत्यय के अन्तर्गत सम्मिलित किए जाते हैं।

1. 'क्त' और 'क्तवतु' प्रत्ययः

सूत्र – 1 **'क्तक्तवतु निष्ठा'** अर्थात् 'क्त' और 'क्तवतु' दोनों प्रत्ययों की निष्ठा संज्ञा होती है। ये दोनों प्रत्यय भूतकालवाचक स समाप्तिसूचक होते है। 'लशक्ततद्धिते' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय के 'क' की इत् संज्ञा होकर केवल 'त' शेष रहता है। इसी प्रकार 'क्तवतु' प्रत्यय में 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से 'क्' की तथा 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से 'उ' की इत् संज्ञा होकर **'तवत्' शेष रहता** है।

'क्त' प्रत्यय 'कर्मवाच्य' एवं 'भाववाच्य' में तथा 'क्तवतु' प्रत्यय सदैव 'कर्तृवाच्य' में प्रयुक्त होता है।

उदाहरणानि :–

धातु	क्त	क्तवतु (नपुंसकलिंग)	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पठ्	पठितः	पठितवत्	पठितवान्	पठितवती
पच्	पक्वः	पक्ववत्	पक्ववान्	पक्ववती
वच/ब्रू	उक्तः	उक्तवत्	उक्तवान्	उक्तवती
मुच	मुक्तः	मुक्तवत्	मुक्तवान्	मुक्तवती
प्रच्छ्	पृष्टः	पृष्ठवत्	पृष्ठवान्	पृष्ठवती
कृ	कृतः	कृतवत्	कृतवान्	कृतवती
अस्/भू	भूतः	भूतवत्	भूतवान्	भूतवती
शुष्	शुष्कः	शुष्कवत्	शुष्कवान्	शुष्कवती
पा	पातः	पातवत्	पातवान्	पातवती
वप्	उप्तः	उप्तवत्	उप्तवान्	उप्तवती
भिद्	भिन्नः	भिन्नवत्	भिन्नवान्	भिन्नवती
दृश्	दृष्टः	दृष्टवत्	दृष्टवान्	दृष्टवती
रूह्	रूढः	रूढवत्	रूढवान्	रूढवती
हन्	हतः	हतवत्	हतवान्	हतवती
जन्	जातः	जातवत्	जातवान्	जातवती

नोट :– 'क्तवतु' प्रत्यय जुड़ने पर नपुंसकलिंग में 'वत्' पुल्लिंग में 'वान्' तथा स्त्रीलिंग में 'वती' शेष रहता है एवं 'क्त' प्रत्यय जुड़ने पर पुल्लिंग में 'तः', स्त्रीलिंग में 'ता' तथा नपुंसकलिंगम् में 'तम्' जोड़ा जाता है। जैसे :–

धातु	प्रत्यय	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
लिख्	क्त	लिखितः	लिखिता	लिखितम्
दा	क्तवतु	दत्तवान्	दत्तवती	दत्तवत्
स्था	क्त	स्थितः	स्थिता	स्थितम्
लभ्	क्तवतु	लब्धवान्	लब्धवती	लब्धवत्

विशेष सूत्र –

सूत्र – 'अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति'

अर्थात् 'अद्' धातु में निष्ठा संज्ञक प्रत्यय जुड़ने पर जग्ध् आदेश हो जाता है।

धातु + प्रत्यय	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
अद् + क्त	जग्धः	जग्धा	जग्धम्
अद् + क्तवतु	जग्धवान्	जग्धवती	जग्धवत्
पच् + क्त	पक्वः	पक्वा	पक्वम्

सूत्र :– 'पचो वः'

पच् + त = पच् व

'पंच्' धातु के निष्ठा संज्ञक प्रत्ययों के जुड़ने पर निष्ठा के 'त्' को 'व' आदेश हो जाता है।

पच् + क्तवतु पक्ववान् पक्ववती पक्ववत्

भिद् + क्त भिन्नः भिन्ना भिन्नम् सूत्रः– ('रदाभ्यां निष्ठा नः पूर्वस्य च दः'

– धातु के अन्त में र्/द् हो तो प्रत्यय के त के स्थान पर न हो जाता है।)

छिद् + क्त छिन्नः छिन्ना छिन्नम्

शृ + क्त शीर्णः शीर्णा शीर्णम्

उद् + तृ + क्त उत्तीर्णः उत्तीर्णा उत्तीर्णम्

वि + कृ + क्त विकीर्णः विकीर्णा विकीर्णम्

कृ + क्त कृतः

लुभ् + क्त लुब्धः लुब्धा लुब्धम्

लुभ् + क्त लुभितः सूत्र :– ('लुभो विमोहने')

(मोहने अर्थ में लुभ् धातु में इट् आगम हो जाएगा)

पूञ् + क्त पवितः पविता पवितम्

पूञ् + क्त पूतः पूता पूतम् सूत्र :– ('पूङश्च')

भिद् + क्त भित्तः भित्ता भित्तम्

लू + क्त लूनः लूना लूनम्

ऋ + क्त ऋणः ऋणा ऋणम्

ऋ + क्त ऋतः ऋता ऋतम् सूत्र :– ('ऋणमाधमर्ण्ये')

शुष् + क्त शुष्कः सूत्र :– ('शुषो कः')

शुष् + निष्ठा संज्ञक 'क'

क्षै + क्त क्षामः सूत्र :– ('क्षायो मः')

क्लिश् + क्त क्लिष्टः सूत्र :– ('क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः') (इट् आगम विकल्प से)

क्लिश् + क्त क्लिशितः

निर् + वा + क्त निर्माणः

निर् + वा + क्त निर्वातः सूत्र :– ('निर्वाणाऽवाते')

वायु अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं इससे भिन्न अर्थ तकार – णकार

दिव् + क्त धूतः द्यूता घूतम्

दिव् + क्त द्यूनः द्यूना द्यूनम् सूत्र :– ('दिवोऽविजिगिषायाम्')

क्रीड़ा, जिगीषा (जीतने की इच्छा)

प्र + सत्य + क्त प्रस्तीमः प्रस्तीमा प्रस्तीमम् सूत्रः– ('स्त्यः प्रपूर्वस्य') (सम्प्रसारण करता है)

सूत्रः– ('प्रस्त्योऽन्यतरस्याम्') (विकल्प से)

त् – म्

त – ट

स्फाय + क्त स्फीतः (वृद्धि) सूत्र :– ('स्फाय स्फी निष्ठायाम्')

V2 Digital Learning Classes

2. शतृ और शानच् प्रत्ययः

'लटः शतृशानचावप्रथमा समानाधिकरणे'

अर्थात्

1. ये दोनों वर्तमानकालिक कृदन्त समानाधिकरणता वाले प्रत्यय है।
2. परस्मैपदी धातुओं में 'शतृ' तथा आत्मनेपदी धातुओं से 'शानच्' प्रत्यय का प्रयोग होता है।
3. शानच् प्रत्यय का प्रयोग किसी भी वाच्य (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य) में हो सकता है, परंतु 'शतृ' प्रत्यय का प्रयोग केवल कर्तृवाच्य में ही होता है।
4. 'शतृ' में धातु के अन्त में अत्, अन् व अन्ती जोड़कर क्रमशः नपुंसकलिंग, पुल्लिंग व स्त्रीलिंग के रूप बनाए जाते है, जबकि 'शानच्' प्रत्यय में पुल्लिंग, स्त्रीलिंग व नपुंसकलिंग में क्रमशः आनः/मानः, आना/माना व आनम्/मान् शेष रहता है। जैसे : –

शतृ प्रत्ययः (हुआ/हुई/हुए)

धातु		प्रत्यय		पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
पठ्	→	शतृ	→	पठन् (पढ़ता हुआ)	पठन्ती (पढ़ती हुई)	पठत् (पढ़ते हुए)
क्रीड्	→	शतृ	→	क्रीडन्	क्रीडन्ती	क्रीडत्
खाद्	→	शतृ	→	खादन्	खादन्ती	खादत्
अस्	→	शतृ	→	सन्	सती	सत्
इष्	→	शतृ	→	इच्छन्	इच्छन्ती	इच्छत्
गम्	→	शतृ	→	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
वृष्	→	शतृ	→	वर्षन्	वर्षन्ती	वर्षत्
नृत्	→	शतृ	→	नृत्यन्	नृत्यन्ती	नृत्यत्
प्रच्छ्	→	शतृ	→	पृच्छन्	पृच्छन्ती	पृच्छत्
घ्रा	→	शतृ	→	जिघ्रन्	जिघ्रन्ती	जिघ्रत्

शानच् (हुआ/हुई/हुए)

आस्	→	शानच्	→	आसीनः	आसीना	आसीनम्
लभ्	→	शानच्	→	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
धा	→	शानच्	→	दधानः	दधाना	दधानम्
मुद्	→	शानच्	→	मोदमानः	मोदमाना	मोदमानम्
वृत्	→	शानच्	→	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
सेव्	→	शानच्	→	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
कृ	→	शानच्	→	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्
पच्	→	शानच्	→	पचमानः	पचमाना	पचमानम्
शी	→	शानच्	→	शयानः	शयाना	शयानम्
दा	→	शानच्	→	ददानः	ददाना	ददानम्

3. तुमुन् प्रत्ययः

'तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' अर्थात् जब किन्हीं दो क्रिया पदों का कर्ता एक ही होता है और उनमें एक क्रिया कार्य करने की प्रयोजन बताती है तो उसी क्रिया में 'तुमून्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

जैसे :– 'वह खेलना चाहता है'। इस वाक्य में 'खेलना' और 'चाहना' दो क्रियाएँ हैं। इनमें 'खेलना' चाहने का प्रयोजन बता रहा है। अतः क्रीड् + तुमुन् = क्रीडितुम् पद प्रयुक्त किया जाएगा।

तुमुन् प्रत्यय में 'तुम्' शेष रहता है तथा तुमुन् प्रत्यान्त शब्द अव्यय होते हैं। जब दो क्रियाओं के अलग–अलग कर्ता हों तो इसका प्रयोग नहीं किया जाता है। जैसे : –

Digital Learning Classes

धातु	+	प्रत्यय	→	प्रत्ययान्त रूप
पठ्	→	तुमुन्	→	पठितुम्
नी	→	तुमुन्	→	नेतुम्
श्रु	→	तुमुन्	→	श्रोतुम्
कृ	→	तुमुन्	→	कर्तुम
वच्	→	तुमुन्	→	वक्तुम्
गै	→	तुमुन्	→	गातुम्
पच्	→	तुमुन्	→	पक्तुम्
क्री	→	तुमुन्	→	क्रेतुम्
दृश्	→	तुमुन्	→	द्रष्टुम्
पा	→	तुमुन्	→	पातुम्
भिद्	→	तुमुन्	→	भेत्तुम्
प्रच्छ्	→	तुमुन्	→	पृष्टुम्
शी	→	तुमुन्	→	शयितुम्

4. तव्यम् और अनीयर् प्रत्ययः

ये दोनों प्रत्यय 'चाहिए' या विधि अर्थ में काम में लिए जाते हैं। तव्याम् का 'तव्य' तथा अनीयर् का 'अनीय' शेष रहता है। इनके रूप तीनों लिंगों में चलते हैं। तव्यत् प्रत्यय जुड़ने पर निम्नानुसार परिवर्तिन हो जाते हैं :–

1. 'तव्यम्' प्रत्यय जोड़ते समय सेट् धातुओं में धातु तथा प्रत्यय के मध्य में 'इ' जुड़ जाता है। जैसे :–

पठ् + तव्यम् → पठितव्यः, पठितव्या, पठितव्यम्

हस् + तव्यम् → हसितव्यः, हसितव्या, हतिव्यम्

2. स्वरान्य धातु के अंतिम स्वर को गुण हो जाता है। जैसे :–

नी + तव्यम् → नेतव्यः, नेतव्या, नेतव्यम्

श्रु + तव्यम् → श्रोतव्यः, श्रोतव्या, श्रोतव्यम्

3. ऐकारान्त धातुओं के 'ऐ' को 'आ' हो जाता है। जैसे :–

गै + तव्यम् → गातव्यः, गातव्या, गातव्यम्

ध्यै + तव्यम् → ध्यातव्यः, ध्यातव्या, ध्यातव्यम्

4. व्यंजनान्त धातुओं के उपधा (प्रारम्भिक स्वर) के ह्रस्व स्वर को गुण हो जाता है। जैसे :–

लिप् + तव्यम् → लेप्तव्यः, लेप्तव्या, लेप्तव्यम्

पुष् + तव्यम् → पोष्टव्यः, पोष्टव्या, पोष्टव्यम्

तव्यम् प्रत्यय के अन्य उदाहरण :–

धातु	+	प्रत्यय	→	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
दा	+	तव्यम्	→	दातव्यः	दातव्या	दातव्यम्
त्यज्	+	तव्यम्	→	त्यक्तव्यः	त्यक्तव्या	त्यक्तव्यम्
कृ	+	तव्यम्	→	कर्तव्यः	कर्तव्या	कर्तव्यम्
नी	+	तव्यम्	→	नेतव्यः	नेतव्या	नेतव्यम्
दृश्	+	तव्यम्	→	द्रष्टव्यः	द्रष्टव्या	द्रष्टव्यम्
जि	+	तव्यम्	→	जेतव्यः	जेतव्या	जेतव्यम्
लभ्	+	तव्यम्	→	लब्धव्यः	लब्धव्या	लब्धव्यम्
गम्	+	तव्यम्	→	गन्तव्यः	गन्तव्या	गन्तव्यम्
चुर्	+	तव्यम्	→	चोरयितव्यः	चोरयितव्या	चोरयितव्यम्
खाद्	+	तव्यम्	→	खादितव्यः	खादितव्या	खादितव्यम्
पच्	+	तव्यम्	→	पक्तव्यः	पक्तव्या	पक्तव्यम्

अनीयर् प्रत्यय :–

लिख्	+	अनीयर्	→	लेखनीयः	लेखनीया	लेखनीयम्
दृश्	+	अनीयर्	→	दर्शनीयः	दर्शनीया	दर्शनीयम्
कृ	+	अनीयर्	→	करणीयः	करणीया	करणीयम्
गै	+	अनीयर्	→	गानीयः	गानीया	गानीयम्
भू/अस्	+	अनीयर्	→	भवनीयः	भवनीया	भवनीयम्
पा	+	अनीयर्	→	पानीयः	पानीया	पानीयम्
शी	+	अनीयर्	→	शयनीयः	शयनीया	शयनीयम्
हस्	+	अनीयर्	→	हसनीयः	हसनीया	हसनीयम्
श्रु	+	अनीयर्	→	श्रवणीयः	श्रवणीया	श्रवणीयम्
चिन्त्	+	अनीयर्	→	चिन्तनीयः	चिन्तनीया	चिन्तनीयम्
दा	+	अनीयर्	→	दानीयः	दानीया	दानीयम्
अद्	+	अनीयर्	→	अदनीयः	अदनीया	अदनीयम्
कथ्	+	अनीयर्	→	कथनीयः	कथनीया	कथनीयम्
पच्	+	अनीयर्	→	पचनीयः	पचनीया	पचनीयम्
पठ्	+	अनीयर्	→	पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्
क्री	+	अनीयर्	→	क्रमणीयः	क्रयणीया	क्रयणीयम्
एध्	+	अनीयर्	→	एधनीयः	एधनीया	एधनीयम्

5. ण्वुल् और तृच् प्रत्ययः

'ण्वुलवृचौ' अर्थात् किसी धातु के कर्तरि अर्थ में (कर्ता का बोध) 'ण्वुल' व 'तृच्' प्रत्यय का प्रयोग होता है। 'ण्वुल्' प्रत्यय में 'ण्' व 'ल्' की इत्संज्ञा होकर **'वु' शेष रहता है जिसे बाद में 'अक्' आदेश हो** जाता है। 'तृच्' प्रत्यय में 'च्' की इत्संज्ञा होकर 'तृ' शेष रहता है जिसे बाद में ता (आ) आदेश हो जाता है। 'ण्वुल्' प्रत्यय के पूर्व में वृद्धि तथा 'तृच्' प्रत्यय के पूर्व गुणादेश होता है। जैसे :–

तृच् प्रत्यय

धातु	+	प्रत्यय	→	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
कृ	+	तृच्	→	कर्ता	कर्त्री	कर्तृ
नी	+	तृच्	→	नेता	नेत्री	नेतृ
दा	+	तृच्	→	दाता	दात्री	नेतृ

धातु	ण्वुल् प्रत्ययान्त शब्द	तृच प्रत्ययान्त शब्द
श्रु	श्रावकः	श्रोता
नी	नायकः	नेता
दा	दायकः	दाता
कृ	कारकः	कर्ता
हृ	हारकः	हर्ता
पठ्	पाठकः	पठिता
वच्	वाचकः	वक्ता
वि + धा	विधायकः	विधाता
प्र + दा	प्रदायकः	प्रदाता
प्र + स्तु	प्रस्तावकः	प्रस्तोता
ग्रह	ग्राहकः	ग्रहीता
दुह्	दोहकः	दोग्धा
बुध्	बोधकः	बोद्धा
हन्	घातकः	हन्ता

Digital Learning Classes

6. ण्यत् प्रत्ययः

'ऋहलोर्ण्यत्' अर्थात् ऋकारान्त धातु और हलन्त धातुओं से 'ण्यत्' प्रत्यय होता है।

'ण्यत्' का 'य' शेष रहता है तथा 'णित्' होने से धातु के स्वर को वृद्धि हो जाती है।

'ण्यत्' प्रत्यय परे रहने पर 'च' और 'ज' के स्थान पर 'क' वर्ग हो जाता है, परंतु यज्, याच्, रूच्, ऋच्, प्रवच् और त्यज् धातुओं से 'ण्यत्' प्रत्यय लगाने पर च वर्ग का क वर्ग होता है। जैसे :–

कृ	+	ण्यत्	→	कार्यः	कार्या	कार्यम्
मृज्	+	ण्यत्	→	मार्ग्यः	मार्ग्या	मार्ग्यम्
पठ्	+	ण्यत्	→	पाठ्यः	पाठ्या	पाठयम्
स्मृ	+	ण्यत्	→	स्मार्यः	स्मार्या	स्मार्यम्
वच्	+	ण्यत्	→	वाच्यः / वाक्यः	वाच्या	वाच्यम्
भुज्	+	ण्यत्	→	भोग्यः / भोज्यः	भोग्या	भोग्यम्

7. क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय

क्त्वा प्रत्ययः– 'समानकतृकयोः पूर्वकाले'

जब एक क्रिया की समाप्ति के बाद दूसरी क्रिया की जाती है तथा दोनों का एक ही कर्ता होता है तो पहली क्रिया के 'कर' या 'करके' अर्थ में 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। 'क्त्वा' प्रत्यय में 'क्' की इत्संज्ञा होकर केवल 'त्वा' शेष रहता है।

जैसे :–

धातु	**+**	**प्रत्यय**	**→**	**प्रत्ययान्त रूप**
पठ्	+	क्तवा	→	पठित्वा
घ्रा	+	क्तवा	→	घ्रात्वा
त्यज्	+	क्तवा	→	त्यक्त्वा
तृ	+	क्तवा	→	तीर्त्वा
पा	+	क्तवा	→	पीत्वा
अस् / भू	+	क्तवा	→	भूत्वा
श्रु	+	क्तवा	→	श्रुत्वा
दृश्	+	क्तवा	→	दृष्ट्वा
नी	+	क्तवा	→	नीत्वा
नम्	+	क्तवा	→	नत्वा
हन्	+	क्तवा	→	हत्वा
दह्	+	क्तवा	→	दग्धवा
प्रच्छ्	+	क्तवा	→	पृष्ट्वा
लभ्	+	क्तवा	→	लब्धवा
वह्	+	क्तवा	→	ऊढ्वा
ध्यै	+	क्तवा	→	ध्यात्वा
अद्	+	क्तवा	→	जग्धवा
छिद्	+	क्तवा	→	छित्वा
भुज्	+	क्तवा	→	भुक्त्वा

ल्यप् प्रत्यय :– 'समासेऽनञ्पूर्वे त्वो ल्यप्' यह प्रत्यय भी 'क्त्वा' प्रत्यय के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है। जिन धातुओं से पूर्व निषेधार्थक अ / अन् उपसर्गो को छोड़कर अन्य किसी उपसर्ग का प्रयोग हुआ हो तो वहाँ 'कर' या 'करके' अर्थ में 'ल्यप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। इसका 'य' शेष रहता है। 'ल्यप्' प्रत्यय के योग से बने शब्द 'अव्यय' बन जाते हैं। जैसे :–

उपसर्ग	+	धातु	+	प्रत्यय	→	प्रत्ययान्त रूप
सम्	+	अर्च्	+	ल्यप्	→	समर्च्य
आ	+	दा	+	ल्यप्	→	आदाय
नि	+	हन्	+	ल्यप्	→	निहत्य
प्र	+	हृ	+	ल्यप्	→	प्रहृत्य
सम्	+	भू/अस्	+	ल्यप्	→	संभूय
प्र	+	स्था	+	ल्यप्	→	प्रस्थाय
उद्	+	छिद्	+	ल्यप्	→	उच्छिद्य
उप	+	भुज्	+	ल्यप्	→	उपभुज्य
उप	+	वस्	+	ल्यप्	→	उपोष्य
वि	+	जि	+	ल्यप्	→	विजित्य
आ	+	गम्	+	ल्यप्	→	आगत्य
सम्	+	श्रू	+	ल्यप्	→	संश्रूत्य
आ	+	श्रि	+	ल्यप्	→	आश्रित्य
प्र	+	अद्	+	ल्यप्	→	प्रजग्धय
सम्	+	ईक्ष्	+	ल्यप्	→	समीक्ष्य
प्र	+	नम्	+	ल्यप्	→	प्रणम्य
वि	+	नश्	+	ल्यप्	→	विनश्य
आ	+	रूह्	+	ल्यप्	→	आरूह्या

8. ल्युट् प्रत्ययः

'ल्युट् च' यह प्रत्यय भी किसी धातु से भाववाचक शब्द बनाने के काम आता है। इसका 'यु' शेष रहता है तथा 'युवोरनाकौ' सूत्र से 'यु' को 'अन' हो जाता है। ल्युट प्रत्ययान्त शब्द नित्य नपुंसकलिंग होते है। 'ल्युट्' प्रत्यय जुड़ने पर धातु को गुण आदेश हो जाता है। जैसे :–

धातु	ल्युट् प्रत्ययान्त रूप	धातु	ल्युट् प्रत्ययान्त रूप
कृ	करणम्	वि+आ+कृ	व्याकरणम्
कृष्	कर्षणम्	अद्	अदनम्
अधि+इ	अध्ययनम्	पठ्	पठनम्
क्री	क्रयणम्	ब्रू	वचनम्
दा	दानम्	दृश्	दर्शनम्
कुप्	कोपनम्	क्रुध्	क्रोधनम्
भ्रम्	भ्रमणम्	मृ	मरणम्
ध्यै	ध्यानम्	गै	गानम्
या	यानम्	पा	पानम्
चि	चयनम्	जि	जयनम्

9. घञ् प्रत्यय

'भावे' सूत्र के अनुसार भाव अर्थ में घञ् प्रत्यय होता है। जब कोई धातु अर्थ सिद्ध हो जाए तब वह भाव कहलाता है। भाव का अर्थ बताने के लिए कर्ता को छोड़कर अन्य कारक का अर्थ बताने के लिए धातु से घञ् प्रत्यय जोड़ा जाता है। घञ् प्रत्यय में 'अ' शेष रहता है। यह प्रत्यय जुड़ने पर शब्द भाववाचक संज्ञा बन जाता है। घञन्त शब्द पुल्लिंग होता है और उपसर्गों के साथ अति प्रचलित है। घञ् प्रत्यय लगने पर धातु के अंतिम इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ की वृद्धि हो जाती है। धातु की उपधा के स्वर को घञ् प्रत्यय जुड़ने से गुण हो जाता है। जैसे :–

धातु	घञ् प्रत्ययान्त रूप	धातु	घञ् प्रत्ययान्त रूप
भू	भावः	रूध्	रोधः
पच्	पाकः	पठ्	पाठः
लिख्	लेखः	हस्	हासः
कृ	कारः	क्षिप्	क्षेपः

Digital Learning Classes

आ+क्षिप्	आक्षेपः	आ+दृश्	आदर्शः
प्र+कृ	प्रकारः	प्र+भू	प्रभावः
तप्	तापः	क्रुध्	क्रोधः
चुर्	चोरः	शुच्	शोकः
कुप्	कोपः	मुह्	मोहः
शप्	शापः	भज्	भागः
नश्	नाशः	त्यज्	त्यागः
श्लिष्	श्लेषः	कम्	कामः
प्र+नम्	प्रणामः	आ+हृ	आहारः

10. क्यप् प्रत्ययः

'एतिस्तुशास्वृदुजुषः क्यप्' अर्थात् इण्, स्तु, शास, वृ, दृ, जुष् धातु से (चाहिए अर्थ में) भाववाच्य एवं कर्मवाच्य में 'क्यप्' प्रत्यय होता है। 'क्यप्' का 'य' शेष रहता है। इसके रूप तीनों लिंगों में चलते है। जैसे :–

धातु	+	प्रत्यय	→	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
इण	+	क्यप्	→	इत्यः	इत्या	इत्यम्
स्तु	+	क्यप्	→	स्तुत्यः	स्तुत्या	स्तुत्यम्
शास्	+	क्यप्	→	शिष्यः	शिष्या	शिष्यम्

11. यत् प्रत्ययः

'अचो यत्' अर्थात् अजन्त धातु से (चाहिए अर्थ में) भाववाचक और कर्मवाच्य में 'यत्' प्रत्यय होता है। यत् का 'य' शेष रहता है। जिस धातु में 'यत्' प्रत्यय जुड़ता है, उसके स्वर को गुण हो जाता है। आकारान्त धातु से यत् प्रत्यय जोड़े जाने पर 'ईद्यति' सूत्र से 'आ' के स्थान पर 'ई' हो जाता है, तदुपरान्त इसका गुण हो जाता है। ए, ऐ, ओ, औ से अन्त होने वाली धातुओं में 'यत्' प्रत्यय जोड़ना हो तो पहले ए, ऐ, ओ, औ के स्थान पर 'आ' हो जाता है। फिर उपर्युक्त 'ईद्यति' सूत्र से 'आ' के स्थान पर 'ई' तथा 'ई' का गुण हो जाता है। यत् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप में तीनों लिंगों में चलते हैं। जैसे :–

धातु	+	प्रत्यय	→	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
चि	+	यत्	→	चेयः	चेया	चेयम्
जि	+	यत्	→	जेयः	जेया	जेयम्
नी	+	यत्	→	नेयः	नेया	नेयम्
दा	+	यत्	→	देयः	देया	देयम्
पा	+	यत्	→	पेयः	पेया	पेयम्
ज्ञा	+	यत्	→	ज्ञेयः	ज्ञेया	ज्ञेयम्
धे	+	यत्	→	धेयः	धेया	धेयम्
गै	+	यत्	→	गेयः	गेया	गेयम्
श्रु	+	यत्	→	श्रव्यः	श्रव्या	श्रव्यम्

1. 'अचो यत्'
2. 'पोरदुपधात'
3. 'शकिसहोश्च'

अर्थात् – 1. स्वराज्य धातुओं मे यत् प्रत्यय जुड़ता है। यथा –

पा + यत् = पेयम   दा + यत् = देयम्   धा + यत् = धेयम्

ज्ञा + यत् = ज्ञेयम्नी + यत् = नेयम्   जि + यत् = जेयम्

श्रु + यत् = श्रव्यम्   चि + यत् = चेयम्   स्था + यत् = स्थेयम्

छो + यत् = छेयम्गै + यत् = गेयम्   ध्यै + यत् = ध्येयम्

2. जिस धातु की उपधा में ह्रस्व अकार हो तो पवर्गान्त धातुओं में भी यत् प्रत्यय जुड़ता हैं –

लभ् + यत् = लभ्यः   रम् = रम्यः   जप् + यत् = जप्यम्

शप् = शप्यम्

3. 'शक्' एवं 'सह्' धातुओं के साथ यत् प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा –

Digital Learning Classes

12. क्तिन् प्रत्ययः

'स्त्रियां क्तिन्' यह प्रत्यय किसी धातु से भाववाचक शब्द बनाने के काम आता है। इसका 'ति' शेष रहता है तथा इसके शब्द नित्य स्त्रीलिंग होते हैं। यदि किसी धातु के अन्त में 'म्' या 'न्' हो तो 'क्तिन' प्रत्यय जुड़ने पर उनका लोप हो जाता है। जैसे :–

धातु	ल्युट् प्रत्ययान्त रूप	धातु	ल्युट् प्रत्ययान्त रूप
कृ	कृतिः	मन्	मतिः
भज्	भक्तिः	मुच्	मुक्तिः
स्मृ	स्मृतिः	रम्	रतिः
युज्	युक्तिः	गम्	गतिः
जन्	जातिः	तृप्	तृप्तिः
सृज्	सृष्टिः	वृत्	वृतिः
वृष्	वृष्टिः	शम्	शान्तिः
बुध्	बुद्धिः	वृध्	वृद्धिः
क्रम्	क्रांतिः	भ्रम्	भ्रांतिः
भी	भीतिः	श्रु	श्रुतिः

तद्धित प्रत्ययः

संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण (प्रतिपादकों) शब्दों के साथ जुड़ने वाले प्रत्यय कहलाते हैं तथा तद्धित प्रत्यय के योग से बने शब्द तद्धितान्त कहलाते हैं। तद्धित प्रत्ययों के रूप में प्रायः सभी विभक्तियों और सभी लिंगों में चलते हैं।

प्रमुख तद्धित प्रत्ययः

1. मतुप् प्रत्यय

सूत्र :– **'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्'** अर्थात्

1. इस प्रत्यय का हिन्दी अर्थ करते समय 'वाला' अर्थ प्राप्त होता है।
2. 'मतुप्' प्रत्यय का 'मत्' शेष रहता हैं, परंतु अकारान्त/अकारान्त व मकारान्त शब्दों के साथ 'मत्' के स्थान पर 'वत्' शेष रहता है।
3. सूत्र 'रसादिभ्यश्च' के अनुसार 'मतुप्' प्रत्यय प्रायः रूप, रस, गंध, स्पर्श आदि गुणवाची शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है।
4. किसी शब्द में मतुप् प्रत्यय जोड़ते समय पुल्लिंग में 'वान या मान' स्त्रीलिंग में 'वती या मती' तथा नपुंसकलिंग में 'वत् या मत्' जोड़ दिया जाता है। जैसे :–

धातु	+	प्रत्यय	→	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
रस	+	मतुप्	→	रसवान्	रसवती	रसवत्
गुण	+	मतुप्	→	गुणवान्	गुणवती	गुणवत्
भाग्य	+	मतुप्	→	भाग्यवान्	भाग्यवती	भाग्यवत्
श्री	+	मतुप्	→	श्रीमान्	श्रीमती	श्रीमत्
बुद्धि	+	मतुप्	→	बुद्धिमान्	बुद्धमती	बुद्धिमत्
धी	+	मतुप्	→	धीमान्	धीमती	धीमत्
शक्ति	+	मतुप्	→	शक्तिमान्	शक्तिमती	शक्तिमत्
आयुस्	+	मतुप्	→	आयुष्मान्	आयुष्मती	आयुष्मत्
गो	+	मतुप्	→	गोमान्	गोमती	गोमत्
विद्या	+	मतुप्	→	विद्यावान्	विद्यापती	विद्यावत्
द्राक्षा	+	मतुप्	→	द्राक्षामान्	द्राक्षामती	द्राक्षामत्
विद्युत्	+	मतुप्	→	विद्युत्वती	विद्युत्वती	विद्युतवत्
तड़ित्	+	मतुप्	→	तड़ितवान्	तड़ितवती	तड़ित्वत्
अपवाद						
यव	+	मतुप्	→	यवमान्	यवमती	यवक्त्

2. तल् प्रत्यय

सूत्र :– 'तस्य भावस्त्वतलौ' अर्थात् किसी शब्द से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाने के लिए तल् (ता) प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। 'तल्' प्रत्ययान्त शब्द सदैव स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं। 'तल्' प्रत्ययान्त शब्दों से भाववाचक संज्ञा के साथ–साथ समूह का बोध भी होता है। **यथा** :–

शब्द	तल् प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	तल् प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	तल् प्रत्ययान्त शब्द
लघु	लघुता	गुरू	गुरूता	बंधु	बंधुता
महत्	महत्ता	देव	देवता	शिशु	शिशुता
जड़	जड़ता	मनुष्य	मनुष्यता		पशु पशुता
कृष्ण	कृष्णता	चतुर	चतुरता	जन	जनता
निपुण	निपुणता	कवि	कविता	कृश	कृशता
दीर्घ	दीर्घता				

3. तरप् प्रत्यय

सूत्र :– 'द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ'

अर्थात् दो में से एक की अतिशयता या विशिष्टता प्रकट करने के लिए इन प्रत्ययों (तरप् का प्रयोग किया जाता है। 'तरप्' प्रत्यय का 'तर' शेष रहता है। इनके रूप में तीनों लिंगों में बनाए जाते हैं। इस प्रत्यय के योग में पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे :–

1. कपिलः चेतनात् पटुतरः
2. गंगा युमनायाः पवित्रतरा

तरप् प्रत्ययः

शब्द	+	प्रत्यय	→	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
पटु	+	तरप्	→	पटुतरः	पटुतरा	पटुतरम्
लघु	+	तरप्	→	लघुतरः	लघुतरा	लघुतरम्
सुन्दर	+	तरप्	→	सुन्दरतरः	सुन्दरतरा	सुन्दरतरम्
गुरू	+	तरप्	→	गुरूतरः	गुरूतरा	गुरूतरम्
मधुर	+	तरप्	→	मधुरतरः	मधुरतरा	मधुरतम्
दृढ़	+	तरप्	→	दढ़ृतरः	दृढ़तरा	दृढ़तरम्
महत्	+	तरप्	→	महत्तरः	महत्तरा	महत्तरम्
बृहत्	+	तरप्	→	बृहत्तरः	बृहत्तरा	बृहत्तरम्
मृदु	+	तरप्	→	मृदुतरः	मृदुतरा	मृदुतरम्

Digital Learning Classes

4. तमप् प्रत्ययः

सूत्र :– 'अतिशयाने तमबिष्ठनौ'

अर्थात् दो से अधिक या बहुतों में से एक की अतिशता या विशिष्टता प्रकट करने करने के लिए इन प्रत्यनों (तमप्) का प्रयोग किया जाता है। 'तमप्' प्रत्यय का 'तम' शेष रहता है। इस प्रत्यय के रूप तीनों लिंगों में बनाए जाते हैं। इस प्रत्यय के योग में षष्ठी या सप्तमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। जैसे :–

1. कविषु/कवीनाम् कालिदासः श्रेष्ठतमः।
2. नदीषु/नदीनाम् गंगा पवित्रतमा।

तमप् प्रत्यय

'तमप्' प्रत्यय जोड़ते समय पुल्लिंग में 'तमः', स्त्रीलिंग में 'तमा' तथा नपुंसकलिंग में 'तमम्' का योग कर दिया जाता है। जैसे :–

शब्द	+	प्रत्यय	→	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
पवित्र	+	तमप्	→	पवित्रतमः	पवित्रतमा	पवित्रतमम्
पटु	+	तमप्	→	पटुतमः	पटुतमा	पटुतमम्
महत्	+	तमप्	→	महत्तमः	महत्तमा	महत्तमम्
प्रिय	+	तमप्	→	प्रियतमः	प्रियतमा	प्रियतमम्
उच्च	+	तमप्	→	उच्चतमः	उच्चतमा	उच्चतमम्

निम्न	+	तमप्	→	निम्नतमः	निम्नतमा	निम्नतमम्
मृदु	+	तमप्	→	मृदुतमः	मृदुतमा	मृदुतमम्
दृढ़	+	तमप्	→	दृढ़तमः	दृढ़तमा	दृढ़तमम्
लघु	+	तमप्	→	लघुतमः	लघुतमा	लघुतमम्
अन्य	+	तमप्	→	अन्यतमः	अन्यतमा	अन्यतमम्

स्त्री प्रत्ययः

ऐसे प्रत्यय जो पुल्लिंगवाचक शब्दों को स्त्रीलिंग वाचक शब्दों में परिवर्तित कर देते हैं, स्त्री प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे – 'चटक' शब्द में 'आ' (टाप् प्रत्यय) लगाने से स्त्रीलिंग वाचक 'चटका' बन जाता है। प्रमुख स्त्री प्रत्यय निम्नानुसार है –

सूत्र – 'अजाद्यतष्टाप्'

अजादिगण के 'अज' आदि शब्दों में 'टापू' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है। इसका 'आ' शेष रहता है। यथा –

शब्द	टाप् प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	टाप् प्रत्ययान्त शब्द
अज	अजा	एडक	एडा
अश्व	अश्वा	चटक	चटका
मूषिक	मूषिका	बाल	बाला
वत्स	वत्सा	होड	होडा
बाल	बाला	मन्द	मन्दा
विलात	विलाता	मेध	मेधाता
गंग	गंगा	शुद्र	शुद्रा
सुत	सुता	अनुज	अनुजा
अग्रज	अग्रजा	वैश्य	वैश्या
छात्र	छात्रा	पूज्य	पूज्या
सुगुल्फ	सुगुल्फा	सुशिख	सुशिखा

2. ङीप् प्रत्यय

सूत्र :– 1. 'उगितश्च'

जहाँ उ, ऋ, लृ की इत् संज्ञा हो जाती है, वहाँ ङीप् प्रत्यय स्त्रीलिंग वाचक शब्द बनाया जाता हैं। ङीप् का 'ई' शेष रहता है। यथा –

भवत् – भवन्ती   पचत् – पचन्ती   दीव्यत् – दीव्यन्ती

सूत्र :– 2. 'टिड्ढाणञ्द्वयसजदध्यनञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ् क्वरपः'

कुरूचर + ङीप् (ई)	– कुरूचरी	नदट् + ङीप् (ई)	– नदी
देवट् + ङीप् (ई)	– देवी	सौपर्णेय + ङीप् (ई)	– सौपर्णेयी
ऐन्द्र + ङीप् (ई)	– ऐन्द्र	औत्स + ङीप् (ई)	– औत्सी
ऊरुद्वयस + ङीप् (ई)	– ऊरुद्वयसी	ऊरुदध्न + ङीप् (ई)	– ऊरुदध्नी
ऊरुमात्र + ङीप् (ई)	– ऊरुमात्री	मञ्चतय + ङीप् (ई)	– पञ्चतयी
आक्षिक + ङीप् (ई)	– आक्षिकी	प्रास्थिक + ङीप् (ई)	– प्रास्थिकी
यादृश + ङीप् (ई)	– यादृशी	लावणिक + ङीप् (ई)	– लावणिकी
इत्वर + ङीप् (ई)	– इत्वरी	शर्वर + ङीप् (ई)	– शर्वरी

वार्तिक – * अञ्स्नञीकक्ख्युंस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानम् *

स्त्रैण + ङीप् (ई)	– स्त्रैणी	पौंस्न + ङीप् (ई)	– पौंस्नी
शाक्तिक + ङीप् (ई)	– शाक्तिकी	याष्टिक + ङीप् (ई)	– याष्टिकी
आढ्यङ्करण + ङीप् (ई)	– आढ्यङ्करणी	तरुण + ङीप् (ई)	– तरुणी
कुरूचर + ङीप् (ई)	– कुरूचरी	नदट् + ङीप् (ई)	– नदी
तलुन + ङीप् (ई)	– तलुनी		

सूत्र :–3. 'यञश्च' 'हलस्तद्धितस्य' से 'य' का लोप होता है।

गार्ग्य + ङीप् – गार्गी

सूत्र :– 4. 'वयसि प्रथमे'

कुमार + ङीप् – कुमारी   किशोर + ङीप् – किशोरी

वधूट + ङीप् – वधूटी

सूत्र :– 5. 'द्विगोः'

द्विपद + ङीप् – द्विपदी   त्रिलोक + ङीप् – त्रिलोकी

पंचमूल + ङीप् – पंचमूली

सूत्र :– 6. 'वर्णदनुदात्तात् तोपधात्तो नः'

एत + ङीप् – एनी   साधु + ङीप् – रोहिणी

सूत्र :– 7. 'वोतो गुणवचनात्'

मृदु + ङीप् – मृद्वी / मृदुः   साधु + ङीप् – साध्वी / साधुः

सूत्र :– 8. 'बह्वादिभ्यश्च'

बहु + ङीप् – बह्वी / बहुः

सूत्र :– 9. 'वोतो गुणवचनात्'

अतिसुत + ङीप् – अतिसुत्वरी

8. प्रत्यय (टैस्ट)

*** निम्न पदों के प्रकृति – प्रत्यय बताइए।**

सर्जनीयम्

विहस्य

नर्तितव्यः

पक्वः

विद्वान्

कुर्णाणः

दृष्टः

गतिः

विवाहः

आदेशः

शिष्यः

पाचकः

त्यक्तः

यजमानः

कार्यः

बुद्धिमान्

नन्तुम्

पूजनीयः

निपुणतमः

क्षत्रियता

रागः

हत्वाः

छेत्तुम्

श्रेष्ठतमा

बन्धुता

शिक्षकः

प्रणम्यः

विचिन्त्यः

उक्त्वा

दाता

श्रव्यम्

मार्ग्यः

त्यक्तुम्

रोचकः

चयनम्

Digital Learning Classes

9. शब्द रूप प्रकरणम्

शब्द और उसके भेदः-

1. जो कुछ कान से सुना जाए उसे शब्द कहते है।
2. शब्द दो प्रकार के होते हैं- ध्वन्यात्मक और वर्णात्मक। जिन शब्दों में अक्षर साफ-साफ न सुनाई दें उन्हें ध्वन्यात्मक कहते हैं, जैसे- बादलों का गड़गड़ाना, घोडों का हिनहिनाना आदि। जिन शब्दों में अक्षर साफ-साफ सुनाई दें और लिखे जा सकें उन्हें वर्णात्मक कहते हैं, जैसे- राम, मोहन, सोहन इत्यादि।
3. स्वरूपभेद से पुनः शब्द दो प्रकार के होते हैं। स्वरान्त एवं व्यञ्जनान्त। जिन शब्दों के अंत में अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ ये.... होते हैं उन्हें अजन्त कहते हैं, जैसे- बालक, विद्या, हरि, नदी, साधू, वधू, पितृ, गौ, नौ, इत्यादि। जिन शब्दों के अन्त में क, ख से लेकर श ष ह आदि व्यञ्जन हों उन्हें हलन्त कहते हैं, जैसे- जगत् - महत्, सम्पद्-वाणिक्-यशस् राजन इत्यादि। संस्कृत से स्वरान्त शब्दों को अजन्त एवं व्यञ्जनान्त शब्दों को हलन्त भी कहते हैं।
4. लिङ्गभेद से शब्द तीन प्रकार के हाते है, जैसे- पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग। किन्हीं -किन्हीं शब्दों के एक अधिक भी लिङ्ग होते हैं, जैसे- पुस्तकः पुस्तकम् पुस्तकी। लिङ्ग की पचाहन के लिए कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं है अतः किस शब्द का क्या लिङ्ग है इसका परिज्ञान व्याकरण कोश व्यवहार से करना चाहिए। एतदर्थ छात्रों को अमकोश तथा किसी नए संस्कृत हिन्दी शब्द कोश को अपने पास अवयश्य रखना चाहिए।
5. अर्थ के अनुसार शब्द पांच प्रकार के हाते हैं। जैसे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय तथा क्रिया। किसी वस्तु क नाम को संज्ञा कहते है यथा- मोहन, हाथी, गंगा, पुस्तक इत्यादि। संज्ञा के बदले आने वाला शब्दों को सर्वनाम कहते है। सर्वनाम ये हैं- हम, तुम, यह, वह, जो, कौन सब इत्यादि। जो संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते हैं उन्हें विशेषण कहते है। यथा चतुर, मुर्ख, छोटा, बड़ा, ऐसा, वैसा, इतना, उतना, पहला, दूसरा इत्यादि। शब्दों में लिङ्ग वचन एवं व्यक्ति के कारण कोई अर्थ परिवर्तन न हो उन्हें अव्यय कहते है। यथा- वहाँ, कहाँ आदि। जिन शब्दों से किसी काम का करना या होना प्रकट हो उन्हें क्रिया कहते हैं यथा-आना, जाना, पढ़ना-लिखना आदि। इत्यादि शब्द छः प्रकार के होते हैं- (षड्लिङ्ग) पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नुपसंकलिङ्ग अजन्त शब्द और पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, तथा नुपसंकलिङ्ग हलन्त शब्द।

पुंलिङ्ग (अजन्त शब्द)

अकारान्त पु. बालक- इसी प्रकार राम, कृष्ण, छात्र, अध्यापक, पण्डित, शिक्षक, विद्यालय, पाठ, लेख, अभ्यास, समय, अवकाश, सूर्य, चन्द वृक्ष, पर्वत, मनुष्य, ईश्वर, संसार, विचार इत्यादि। विशेषण शब्द - उत्तम, प्रथम, सुन्दर श्रेष्ठ, ज्येष्ठ।

इकारान्त पुं. मुनि- ऋषि, हरि, कवि, अग्नि, अतिथि, अंजलि, सारथि कपि (बन्दर) (कुछ भिन्न रूपवाले शब्द पति, सखी इत्यादि।)

ईकारान्त पुं. सुधी- इसी प्रकार शुद्धधी, मूढधी, इत्यादि (कुछ भिन्न रूपवाले शब्द प्रधी, ग्रामणी सेनानी इत्यादि)

उकारान्त पुं. साधु- इसी प्रकार गुरु, वायु, पशु, दयालु, शत्रु, भानु (सूर्य) इत्यादि।

ऋकारान्त पुं. दातृ (देने वाला) - इसी प्रकार वक्तृ (बोलने वाला) श्रोतृ (सुनने वाला) कर्तृ (करने वाला), द्रष्टृ (देखने वला), ज्ञातृ (जानने वाला) कुछ भिन्न रूप वाले शब्द पितृ (पिता), भ्रातृ (भाई)।

स्त्रीलिङ्ग (अजन्त) शब्द

आकारान्त स्त्री. विद्या- इसी प्रकार पाठशाला, शोभा, लता शिखा, माला, प्रजा इत्यादि।

इकारान्त स्त्री. मति- इसी प्रकार सम्पत्ति, विपत्ति, बुद्धि, शान्ति, नीति, जाति उन्नति आदि।

ईकारान्त स्त्री नदी- इसी प्रकार लेखनी, मसी, नारी जननी, मार्जनी इत्यादि। विशेषण शब्द- बुद्धिमती, श्रीमती, विदुषी, गच्छन्ती, ददती, कुर्वती, गतवती इत्यादि। (कुछ भिन्न रूपवाले शब्द लक्ष्मी, स्त्री, ह्री (लज्जा), भी (डर) इत्यादि।

उकारानत स्त्री. धेनु (गाय)- इसी प्रकार चञ्चु (चोंच), रज्जु (रस्सी), तनु (शरीर) इत्यादि।

उकारान्त स्त्री. वधू (स्त्री)- इसी प्रकार श्वश्रू (सास), पुत्रवधू (पतोहू), कण्डू (खुजली) इत्यादि।

ऋकारान्त स्त्री. मातृ (माता)- भिन्न रूपवाले शब्द स्वसृ (बहन), दुहितृ (लड़को)

ओकारान्त स्त्री. - गो (गाय)

नपुंसकलिङ्ग (अजन्त) शब्द

अकारान्त नंपु. ज्ञान- इसी प्रकार अन्न, जल, वस्त्र, फल, मूल, शास्त्र, मित्र इत्यादि।

इकारान्त नुपं. वारि- (पानी) भिनन रूपवाले शब्द - दधि, अस्थि, सक्थि, अक्षि इत्यादि।

उकारानत नपुं. वस्तु - इसी प्रकार मधु, जानु (घुटना), तालु, दारू (लकड़ी) इत्यादि। पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग हलन्त शब्द।

Digital Learning Classes

पुंलिङ्ग (हलन्त) शब्द

जकारान्त पुं. वणिज् (बनिया)– भिषज् (वैद्य)

तकारान्त पुं. मरुत् (हवा) – भूभृत् (राजा, पवर्त) विपश्चित् (विद्वान्)

तकारान्त पुं. श्रीमत् बुद्धिमत्, भगवत्, बलवत्, भाग्यवत्। यावत् – कितना,

तकारान्त पुं. महत् (बड़ा) तावत्-उतना, कियत्-कितना, इयत् – इतावत् इतना।

तकारान्त पुं. पठत् (पढ़ता हुआ), लिखत् (लिखता हुआ), गच्छत (जाता हुआ)

तकारान्त पुं. कुर्वत् (करता हुआ), पृच्छत (पूछता हुआ), कथयत् (कहता हुआ) (भिन्न रूपवाले शब्द ददत्, विभ्रत, दघत्, जाग्रत इत्यादि।)

दकारान्त पुं. सुहृद (मित्र) सभासद्, कलाविद्, मर्मविद् संशयच्छिद् इत्यादि।

नकरान्त पुं. गुणिन्, विद्यार्थिन मन्त्रिन्, स्वामिन्, धनिन् तपस्विन्, सदाचारिन् इत्यादि।

नकरान्त पुं. महिमन् (महत्त्व) मूर्धन् (शर), कालिमन् (कालिमा), गरिमन् इत्यादि।

नकरान्त पुं. आत्मन् (आत्मा), ब्रह्मन् (ब्रह्म), अश्मन् (तत्थर), यज्वन् (यज्ञकर्ता) इत्यादि।

(भिन्न रूपवाले शब्द पथिन् (रास्ता), राजन् (राजा), श्वन् (कुत्ता), युवन् (युवक) इत्यादि)

सकारान्त पं. वेधस् (ब्रह्मा) चन्द्रमस् (चन्द्रमता) यहाशम् (बड़ा यशस्वी) इत्यादि।

सकारान्त पं. विद्वस् (विद्वान्)

सकारान्त पं. गरोयस् (अधिक बड़ा) लघीयस् (अधिक छोटा) महीयस् (अधिक महान्) इत्यादि।

स्त्रीलिङ्ग (हलन्त शब्द)

चकारान्त स्त्री वाच् (वाणी) त्वच् (चमड़ा, छाल) शुच्, ऋच् (ऋग्वेद के मन्त्र) इत्यादि।

जकारान्त स्त्री स्त्रज् (माला), रुज् (रोग)

तकारान्त स्त्री. सरित् (नदी), विद्युत तडित् (बिजली), योषित् (स्त्री.)

दकारान्त स्त्री. आपद् (आपत्ति), सम्पद् (सम्पत्ति), शरद् (शद् ऋतु), संसद (सभा) इत्यादि।

नकारान्त स्त्री. सीमन्

तकारान्त नपुं. जगत्

नकरान्त नुपं., कर्मन्, नामन् (नाम), धामन् (घर, तेज), रोमन् (रोम), व्योमन् (आकाश) इत्यादि।

सकारान्त नपुं. मनस् (मन), पयस् (पानी, दूध), वयस् (उम्र), शिरस् (शिर), यशस् इत्यादि।

सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता, अत: उनके रूप संबोधन में नहीं दिए गए हैं।

शब्द रूपों के लिए ये नियम स्मरण कर लें–

1. (अट्कुप्वाङनुम्व्यवायेऽपि) र् और षं के बाद न को ण् होता है यदि अट् (स्वर, ह, य, व र) कवर्ग, पवर्ग, आ, न् बीच में हों तो भ न् को ण् होगा। ऋ वाले शब्दों में भी यह नियम लगेगा। अत: र् ऋ और ष् वाले शब्दों में इस नियम के अनुसार न् को ण् करे, अन्यत्र न् ही रहेगा।
2. (इणङ्कोः आदेशप्रत्ययोः) अ को छोड़कर अन्य स्वरों के बाद तथा कवर्ग के बाद प्रत्यय के स् को ष् हो जाता है। धातुओं में भी यह नियमल लगेगा, जैसे- रामेषु, हरिषु, कर्तृषु, वाक्षु।

पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दरूप

1. अकारान्त पुल्लिङ्ग 'राम'

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	राम:	रामौ	रामा:
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामै:
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्य:
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्य:
षष्ठी	रामस्य	रामयो:	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयो:	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामा:!

विशेष:– नर:, पुत्र:, जनक:, नृप:, मयूर:, गज:, सिंह, सरोवर आदि के रूप राम की तरह चलते हैं।

2. इकारान्पुल्लिङ्ग 'हरि'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरि:	हरी	हरय:
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभि:
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्य:
पंचमी	हरे:	हरिभ्याम्	हरिभ्य:
षष्ठी	हरे:	हर्यो:	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्यो:	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरय:!

नोट:- हरि के समान ही सभी पुल्लिङ्ग इकारान्त शब्दों के रूप चलेंगे, जैसे- मुनि, कपि, कवि, भूपति, नरपति आदि।

3. उकारान्त पुल्लिङ्ग 'गुरु'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरु:	गुरु	गुरव:
द्वितीया	गुरुम्	गुरु	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभि:
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्य:
पंचमी	गुरो:	गुरुभ्याम्	गुरुभ्य
षष्ठी	गुरो:	गुर्वो:	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वो:	गुरुषु
सम्बोधन	गुरुहे गुरो!	हे गुरु:!	हे गुरव:!

4. ऋकारान्त पुल्लिङ्ग 'पितृ'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पिता	पितरौ	पितर:
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितृन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभि:
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्य:
पंचमी	पितु:	पितृभ्याम्	पितृभ्य:
षष्ठी	पितु:	पित्रो:	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रो:	पितृषु
सम्बोधन	हे पित:!	हे पितरौ!	हे पितर:!

5. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'रमा'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमा:
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमा:
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभि:
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्य:
पंचमी	रमाया:	रमाभ्याम्	रमाभ्य:
षष्ठी	रमाया:	रमयो:	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयो:	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमा:!

Digital Learning Classes

6. उकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'धेनु'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पंचमी	धेन्वाः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनवः!

7. इकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'मति'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पंचमी	मत्याः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते!	हे मती!	हे मतयः!

8. ईकारान्त स्त्रलिङ्ग 'नदी'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

9. ऊकारान्त स्त्रलिङ्ग 'वधू'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पंचमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु!	हे वध्वौ!	हे वध्वः!

Digital Learning Classes

10. इकारान्त नपुंसकलिङ्ग 'वारि'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारिणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पंचमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारे!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

11. नकारान्त पुल्लिङ्ग 'आत्मन्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पंचमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु

12. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग 'फल'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पंचमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फलम्!	हे फले!	हे फलानि!

विशेष- जल, ज्ञान, पुष्प, पुस्तक, कमल, वन, नगर, गृह, कार्य, धन, वचन, अस्त्र, अमृत, मित्र, गगन, शरीर आदि अकारान्त नपुंसकलिंग के रूप फल की तरह चलते हैं।

13. तकारान्त नपुंसकलिङ्ग 'जगत्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति
तृतीया	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
चतुर्थी	जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
पंचमी	जगतः	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
षष्ठी	जगतः	जगतोः	जगताम्
सप्तमी	जगति	जगतोः	जगत्सु
सम्बोधन	हे जगत्!	हे जगती!	हे जगन्ति!

14. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'स्त्री'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्/स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रीः/स्त्रियः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पंचमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि!	हे स्त्रियौ!	हे स्त्रियः!

15. उकारान्त नुपंसकलिङ्ग 'मधू'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मुध	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पंचमी	मधुनः	मधुभ्याम्ः	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु! हे मधो!	हे मधुनि!	हे मधूनि!

16. इकारान्त पुल्लिङ्ग पति

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पंचमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते!	हे पती!	हे पतयः!

17. गच्छत् पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भयः
पंचमी	गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
सम्बोधन	है गच्छन्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्तौ!

Digital Learning Classes

18. इकारान्त पुल्लिङ्ग 'सखि'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखाय:
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभि:
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्य:
पंचमी	सख्यु:	सखिभ्याम्	सखिभ्य:
षष्ठी	सख्यु:	सख्यो:	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्यो:	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे!	हे सखायौ!	हे सखाय:!

19. ईकारान्त पुल्लिङ्ग 'सुधी'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधी:	सुधियौ	सुधिय:
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधिय:
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभि:
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्य:
पंचमी	सुधिय:	सुधीभ्याम्	सुधीभ्य:
षष्ठी	सुधिय:	सुधियो:	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियो:	सुधीषु
सम्बोधन	हे सुधी:!	हे सुधियौ!	हे सुधिय:!

सर्वनाम

1. सर्व – सब पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व:	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वै:
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्य:
पंचमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्य:
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयो:	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयो:	सर्वेषु

2. सर्व-सब स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वाम्	सर्वे	सर्वा:
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वा:
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभि:
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्य:
पंचमी	सर्वस्या:	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्य:
षष्ठी	सर्वस्या:	सर्वयो:	सर्वेसाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयो:	सर्वासु

Digital Learning Classes

3. सर्व–सब नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पंचमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

4. युष्मद् – तु

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

5. अस्मद् मैं, हम

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्,	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्,	अस्मभ्यम्, नः
पंचम्	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

6. तद् – वह पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

7. तद् – वह स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

Digital Learning Classes

8. तद् – वह नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

9. इदम् – यह पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पंचम्	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

10. एतत् – यह स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	तस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

Digital Learning Classes

11. एतत् – यह नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्-द	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्-द्	एते	एतानि
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्-द	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

10. धातु - रूप प्रकरण

धातुओं तथा क्रियाओं के विषय में कुछ ध्यातव्य बिन्दु

1. जिन मूल शब्दों में संस्कृत की क्रियाएँ बनती हैं उन्हें धातु कहते हैं। यथा- पठ् (पढ़ना), लिख् (लिखना) भू (होना), कृ (करना) इत्यादि।
2. संस्कृत में लगभग दो हजार धातुएँ हैं। इन समस्त धातुओं को संस्कृत व्याकरण में दश गणों में बाँट दिया गया है। जिन धातुओं के रूप एकसमान होते हैं वे एक गण में रखे गए हैं। गणों के नाम तथा इन गणों में भेद होने के कारणों को आगे दिया जा रहा हे, उन्हें हृदयस्थ की लीजिए।
3. धातु तीन प्रकार के होते हैं, परस्मैपदी, आत्मनेपदी तथा जिनमें दोनों प्रत्यय लगते हैं, वे उभयपदी कहलाते है।
4. धातु पुन: तीन प्रकार के हाते हैं, सकर्मक, अकर्मक तथा द्विकर्मक। जिन धातुओं में कर्म लगता है व सकर्मक, जिन धातुओं में कर्म नहीं लगता है वे अकर्मक तथा जिन धातुओं में दो कर्म लगते हैं वे द्विकर्मक कहलाते हैं।
5. धातुओं के तीन भेद और हैं। सेट्, अनिट् तथा वेट्। जिनमें धातु और प्रत्यय के बीच में इट् (इ) लगता है वे सेट, जिनमें नहीं लगता वे अनिट् तथा जिनमें विकल्प से लगता है वे वेट् कहलाते है।
6. पठ् आदि धातुओं में जिन प्रत्ययों के लगने से पठति, पठत: पठन्ति आदि क्रियापद बनते हैं उन्हें तिङ् प्रत्यय कहते हैं। वे अठारह प्रकार के होते है। इनमें नौ परस्मैपद होते हैं और आत्मनेपद। परस्मेपीदी धातुओं में परस्मेपद प्रत्यय, आत्मने-पदी धातुओं में आत्मनेपद प्रत्यय तथा उभयपदी धातुओं में उक्त दोनों प्रकार के प्रत्यय लगते है। विद्यार्थी उन्हें ध्यान से पढ़े और देखें कि इन प्रत्ययों के लगाने से किस प्रकार धातुओं के विभिन्न रूप बनने लगते हैं। उपर्युक्त अठारह प्रकार के तिङ् प्रत्यय केवल वर्तमान काल के ही रूपों में लगते है परन्तु इन्हीं में थोड़ा बहुत परिवर्तन एवं परिवर्धन करने से अन्य कालों के रूप बन जाते है। परन्तु धातुओं के अन्त में तिङ् प्रत्ययों के लगाने से ही क्रियाएँ बनती हैं और इसलिए संस्कृत में क्रियापदों को तिङ्न्त कहते हैं।
7. धातुओं में लगने वाले तिङ् प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं सार्वधातुक एवं आर्धधातुक। लट्, लोट्, लङ् तथा लिङ् लकार में लगाने वाले प्रत्यय सार्वधातुक तथा शेष लकारों में लगने वाले प्रत्यय आर्धधातुक कहलाते है।
8. संस्कृत व्याकरण के अनुसार संस्कृत क्रियाओं में छ: कालभेद तथा चार अर्थप्रकार होते हैं। इन्हें प्रकट करने के लिए संस्कृत व्याकरण में दस लकार माने गए हैं। वे लकार ये हैं- लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लोट, लङ, लिङ् तथा लृङ। लिङ् के दो भेद होते है। विधिलिङ् तथा अशीलिङ्।

   1. लट (वर्तमानकाल), 2. लोट् (आज्ञा अर्थ), 3. लृट् (भविष्यत् काल), 4. लङ् (अनद्यतन भूत), 5. विधिलिङ्(आज्ञा या चाहिए अर्थ), 6. लिट् (अनद्यतन परोक्ष भूत), 7. लुट् (अनद्यतन भविष्यत्), 8. आशीलिङ् (आशीर्वाद), 9. लुङ् (सामान्य भूत), 10. लृङ् (हेतुहेतुमद् भूत या भविष्यत्)। संस्कृत व्याकरण में लकारों का क्रम ऐसा ही दिया हुआ है।
9. संस्कृत में क्रियाओं के रूप चार वाच्यों में चलते है- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य तथ कर्म कर्तृवाच्य।
10. गणों की मुख्य विशेषताएँ

    सूचना- लट्, लोट, लङ्, विधिलिङ् इन चार लकारों में ही विकरण लगते है।

क्र.सं.	गण-नाम	विकरण	मुख्य विशेषताएँ
1.	भ्वादिगण	शप् (अ)	1. लट् आदि में धातु में धातु और प्रत्यय के बची में 'अ' लगेगा।
			2. धातु के अंतिम स्वर को गुण होगा अर्थात् इ ई को ए, उ ऊ को ओ, ऋ ॠ को अर् होगा। धातु के अन्तिम अक्षर से पूर्व इ को ए, उ को ओ, ऋ को अर् होगा।
			3. गुण होने के बाद धातु के अन्तिम ए को अय् और ओ को अव् हो जाता है।
2.	अदादिगण	शप् का लोप	1. धातु और प्रत्यय के बीच में कोई विकरण नहीं लगेगा। धातु में कवेल ति: त: आदि लगेंगे।
			2. लट्, लोट्, लङ् विधिलिङ् में धातु को एकवचन में गुण होता है अन्यत्र नहीं।
3.	जुहोत्यादिगण	(विकरण कुछ नहीं)	1. धातु और प्रत्यय के बीच में लट् आदि में कोई विकरण नहीं लगता।
			2. लट् आदि में धातु को द्वित्व होगा।
			3. लट् आदि में धातु को एक. में गुण होता है अन्यत्र नहीं।
4.	दिवादिगण	श्यन् (य)	1. धातु और प्रत्यय के बीच में लट् आद में 'य' लगता है।
			2. धातु को लट् आदि में गुण नहीं होता (3) लृट आदि में गुण होता है।
5.	स्वादिगण	श्नु (न)	1. लट् आदि में धातु और प्रत्यय के बीच में 'नु' लगता है।
			2. धातु को गुण नहीं होता।
			3. नु को पर, एक. में प्राय: 'नो' होता है।

Digital Learning Classes

6.	तुदादिगण	श (अ)	1. लट् आदि में धातु और प्रत्यय के बीच में 'नु' लगता है। 2. लट् आदि में धातु को गुण नहीं होता। 3. लृट् आदि में धातु को गुण होगा।
7.	रूधादिगण	श्नम् (अ)	1. लट् आदि में धातु के प्रथम स्वर के बाद 'न' लगता तै। 2. इस न को कभी न् भी हो जाता है। 3. लट् आदि में धातु को गुण नहीं होता।
8.	तनादिगण	उ	1. लट् आदि में धातु और प्रत्यय के बीच में 'उ' लगता है। 2. इस उ को एक, आदि में ओ हो जाता है।
9.	क्र्यादिगण	श्ना (ना)	1. लट् आदि में धातु और प्रत्यय के बीच में 'ना' विकरण लगता है। 2. इसको कभी नी और कभी न् हो जाता है। 3. धातु को गुण नहीं होता। 4. परस्मैपद लोट् म.पु. एकवचन में व्यंजनान्त धातुओं में 'हि' के स्थान पर 'आन' लगता है।
10.	चुरादिगण	णिच् (अय)	1. सभी लकारों में धातु के बादि णिच् (अय) लगता है। 2. धातु के अन्तिम इ ई को ऐ, उ, ऊ को औ, ऋ ॠ को आर् वृद्धि होती है। उपध ा के अ को आ, इ को ए, ओ और ऋ का अर् होता है। 3. कण् गण, रच् आदि कुछ धातुओं में उपधा के अ को आ नहीं होता।

पाठ्यक्रम में निर्धारित धातुओं में से भू, त्यज्, गम्, जि, दृश, नी, पच्, पा, लभ्, वृत, सेव, श्रु और नम् भवादिगण में, हन्, अदादिगण में, नृत और जन् दिवादिगण में, दा जुहोत्यादिगण में, शाक स्वादिगण में, इष् और प्रच्छ और लिख् तुदादिगण में, कृ तनादिगण में, चुर् और कथ् चुरादिगण में आती है।

1. भू (होना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	भवति	भवत:	भवन्ति
मध्यम	भवसि	भवथ:	भवथ
उत्तम	भवामि	भवाव:	भवाम:

Digital Learning Classes

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम	भव	भवतम्	भवत
उत्तम	भवानि	भवाव	भवान

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	भवेत्	भवेताम्	भवेयु:
मध्यम	भवे:	भवेतम्	भवेत
उत्तम	भवेयम्	भवेव	भवेम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम	अभव:	अभवतम्	अभवत्
उत्तम	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
मध्यम	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उत्तम	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

2. पठ् (पढ़ना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठति	पठत:	पठन्ति
मध्यम	पठसि	पठथ:	पठथ
उत्तम	पठामि	पठाव:	पठाम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठेत्	पठेताम्	पठेयु:
मध्यम	पठे:	पठेतम्	पठेत
उत्तम	पठेयम्	पठेव	पठेम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम	अपठ:	अपठतम्	अपठत्
उत्तम	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठिष्यति	पठिष्यत:	पठिष्यन्ति
मध्यम	पठिष्यसि	पठिष्यथ:	पठिष्यथ
उत्तम	पठिष्यामि	पठिष्याव:	पठिष्याम:

3. कृ (करना)

लट् लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	करोति	कुरूत:	कुर्वन्ति
मध्यम	करोषि	कुरूथ:	कुरूथ
उत्तम	करोमि	कुर्व:	कुर्म:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	करोतु	कुरूताम्	कुर्वन्तु
मध्यम	कुरू	कुरूतम्	कुरूत
उत्तम	करवाणि	करवाव	करवाम

Digital Learning Classes

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्यु:
मध्यम	कुर्या:	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अकरोत्	अकुरूताम्	अकुर्वन्
मध्यम	अकरो:	अकुरूतम्	अकुरूत
उत्तम	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	करिष्यति	करिष्यत:	करिष्यन्ति
मध्यम	करिष्यसि	करिष्यथ:	करिष्यथ
उत्तम	करिष्यामि	करिष्याव:	करिष्याम:,

4. गम् = (जाना)

लट् लकार

परुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	गच्छति	गच्छत:	गच्छन्ति
मध्यम	गच्छसि	गच्छथ:	गच्छथ
उत्तम	गच्छामि	गच्छाव:	गच्छाम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

Digital Learning Classes

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयु:
मध्यम	गच्छे:	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम	अगच्छ:	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	गमिष्यति	गमिष्यत:	गमिष्यन्ति
मध्यम	गमिष्यसि	गमिष्यथ:	गमिष्यथ
उत्तम	गमिष्यामि	गमिष्याव:	गमिष्याम:

5. चुर् = (चोरी करना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	चोरयति	चोरयत:	चोरयन्ति
मध्यम	चोरयसि	चोरयथ:	चोरयथ
उत्तम	चोरयामि	चोरयाव:	चोरयाम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयु:
मध्यम	चोरये:	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम	अचोरय:	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	चोरयिष्यति	चोरयिष्यत:	चोरयिष्यन्ति
मध्यम	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथ:	चोरयिष्यथ
उत्तम	चोरयिष्यामि	चोरयिष्याव:	चोरयिष्याम:

चुर् (चोरी करना) आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	चोरयते	चोरयते	चोरयन्ते
मध्यम	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उत्तम	चोरये	चोरयावहे	योरयामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
मध्यम	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उत्तम	चोरयै	चोरयावहै	चोरयमाहै

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	चोरयते	चोरयेयातम्	चोरयेरन्
मध्यम	योरयेथा:	योरयेध्वम्	चोरयेध्वम्
उत्तम	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

Digital Learning Classes

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अचोरयत	अचोरयेताम	अचोरयन्त
मध्यम	अचोरयथा:	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उत्तम	अचोरये	अचोरयावहि	ओरययामहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	चोरयिष्यते	चोरियिष्येते	चोरियिष्यन्ते
मध्यम	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरियिष्यध्वे
उत्तम	चोरयिष्वे	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

6. जनी (जन्) पैदा होना आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	जायते	जायेते	जायन्ते
मध्यम	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उत्तम	जाये	जायावहे	जायामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
मध्यम	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उत्तम	जायै	जायावहै	जायामहै

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	जायते	जायेयाताम्	जायेरन्
मध्यम	जायेथा:	जायेयाथाम	जायेध्वम
उत्तम	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अजायत	अजायेताम	अजायन्त
मध्यम	अजायथा:	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उत्तम	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
मध्यम	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उत्तम	जनष्यि	जनिष्यावहे	जनष्यिामहे

7.दा (देना) परस्मैपद

लट् लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	ददाति	दत्त:	ददति
मध्यम	ददासि	दत्थ:	दत्थ
उत्तम	ददामि	दद्व:	दद्म:

Digital Learning Classes

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	ददातु	दत्ताम्	ददतु
मध्यम	देहि, दत्तात्	दत्तम्	दत्त
उत्तम	ददानि	ददाव	ददाम

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	दद्यात्	दद्याताम्	दद्यु:
मध्यम	दद्या:	दद्यातम्	दद्यात
उत्तम	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अददात्	अदत्ताम्	अददु:
मध्यम	अददा:	अदत्तम्	अदत्त
उत्तम	अददाम्	अदद्व	अदद्म

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	दास्यति	दास्यत:	दास्यन्ति
मध्यम	दास्यासि	दास्यथ:	दास्यथ
उत्तम	दास्यामि	दास्याव:	दास्याम:

दा (देना) आत्मनेपद

लट् लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	दत्ते	ददाते	ददते
मध्यम	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उत्तम	ददे	दद्वहे	दद्महे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
मध्यम	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उत्तम	ददै	ददावहै	ददामहै

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
मध्यम	ददीथा	ददीयाथाम	ददीध्वम्
उत्तम	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अदत्त	अददाताम्	अददत्त
मध्यम	अदत्था:	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उत्तम	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

लृट् लकार

Digital Learning Classes

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
मध्यम	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उत्तम	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

8. लभ् (प्राप्त करना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम	लभे	लभावहे	लभामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम	लभै	लभिवहै	लभिमहै

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम	लभेथा:	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम	अलभथा:	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

9. दृश् = (देखना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पश्यति	पश्यत:	पश्यन्ति
मध्यम	पश्यसि	पश्यथ:	पश्यथ
उत्तम	पश्यामि	पश्याव:	पश्याम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम	पश्य	पश्येतम्	पश्यत
उत्तम	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

Digital Learning Classes

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयु:
मध्यम	पश्ये:	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम	अपश्य:	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लृट् लकार

	पुरुष	एकवचन	द्विवचन बहुवचन
प्रथम	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यत:	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथ:	द्रक्ष्यथ
उत्तम	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्याव:	द्रक्ष्याम:

10. कथ् (कहना) धातु

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	कथयति	कथयत:	कथयन्ति
मध्यम	कथयसि	कथयथ:	कथयथ
उत्तम	कथयामि	कथयाव:	कथयाम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
मध्यम	कथय	कथयतम्	कथयत
उत्तम	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयु:
मध्यम	कथये:	कथयेतम्	कथयेत
उत्तम	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
मध्यम	अकथय:	अकथयतम्	अकथयत
उत्तम	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	कथयिष्यति	कथयिष्यत:	कथयिष्यन्ति
मध्यम	कथयिष्यसि	कथयिष्यथ:	कथयिष्यथ
उत्तम	कथयिष्यामि	कथयिष्याव:	कथयिष्याम:

Digital Learning Classes

दा (देना) आत्मनेपद

लट् लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पतति	पतत:	पतन्ति
मध्यम	पतसि	पतथ:	पतथ
उत्तम	पतामि	पताव:	पताम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पततु	पतताम्	पतन्तु
मध्यम	तप	पततम्	पतत
उत्तम	पतानि	पताव	पताम

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पतेत्	पतेताम	पतेयु:
मध्यम	पते:	पतेतम्	पतेत
उत्तम	पतेयम्	पतवे	पतेम

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अपतत	अपतताम्	अपतन्
मध्यम	अपत:	अपततम्	अपतत
उत्तम	अपतम्	अपताव	अपताम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पतिष्यति	पतिष्यत:	पतिष्यन्ति
मध्यम	पतिष्यसति	पतिष्यथ:	पतितष्यथ
उत्तम	पतिष्यामि	पतिष्याव:	पतिष्याम:

12. पृच्छ् (पूछना)

लट् लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पृच्छति	पृच्छत:	पुच्छन्ति
मध्यम	पृच्छसि	पुच्छथ:	पुच्छथ
उत्तम	पुच्छामि	पुच्छाव:	पृच्छाम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम	पृच्छ, पृच्छतात्	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयु:
मध्यम	पृच्छे:	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

Digital Learning Classes

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अपृच्छा	अपृच्छताम्	अपृच्छन
मध्यम	अपृच्छ:	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यत:	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथ:	प्रक्ष्यथ
उत्तम	पृक्ष्यामि	पृक्ष्याव:	पृक्ष्याम:

13. पाल् (रक्षा कारना)

लट् लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पालयति	पालयत:	पालयन्ति
मध्यम	पालयसि	पायलथ:	पालयथ
उत्तम	पालयामि	पालयाव:	पालाया:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पालयतु	पालयातम्	पालयन्तु
मध्यम	पालय	पालयतम्	पालयत
उत्तम	पालयानि	पालयाव	पालयाम

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पालयेत्	पालयेताम्	पालयेयु:
मध्यम	पाले:	पालयेतम्	पालयेस
उत्तम	पालययेम्	पालयेव	पालयेम

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अपालयत	अपालयताम	अपालयन्
मध्यम	अपालय:	अपालयतम्	अपालयत
उत्तम	अपालयाम्	अपालयाव	अपालयाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पालियिष्यति	पालयिष्यत:	पालयिष्यन्ति
मध्यम	पालयिष्यसि	पालयिष्य:	पालयिष्यथ
उत्तम	पालयिष्यामि	पालयिष्याव:	पालयिष्याम:

14. इष् (चाहना) धातु

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	इच्छति	इच्छत:	इच्छन्ति
मध्यम	इच्छसि	इच्छथ:	इच्छथ
उत्तम	इच्छामि	इच्छाव:	इच्छाम:

Digital Learning Classes

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयु:
मध्यम	इच्छे:	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तम	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यम	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तम	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यम	ऐच्छ:	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तम	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	एषिष्यति	एषिष्यत:	एषिष्यन्ति
मध्यम	एषिष्यसि	एषिष्यथ:	एषिष्यथ
उत्तम	एषिष्यामि	एषिष्याव:	एषिष्याम:

15. श्रु (सुनना)

लट् लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	श्रुणोति	श्रुणुत:	शृण्वन्ति
मध्यम	श्रुणोषि	श्रुणुथ:	श्रुणुथ
उत्तम	श्रुणोमि	श्रुणुव:	श्रुणुम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	श्रुणोतु	श्रुणुताम्	श्रुण्वन्तु
मध्यम	श्रुणु	श्रुणुतम्	श्रुणुत
उत्तम	श्रुणवानि	श्रुणवाव	श्रुणवाम

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	श्रुणुयात्	श्रुणुयाताम्	श्रुणयु:
मध्यम	श्रुणुया:	श्रुणुयातम्	श्रुणुयात
उत्तम	श्रुणुयाम्	श्रुणुयाव	श्रुणुयाम

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अश्रुणोति	अश्रुणुताम्	अश्रुण्वन्
मध्यम	अश्रुणो:	अश्रुणुतम्	अश्रुणुत्
उत्तम	अश्रुणवम्	अश्रुणुव	अश्रुणुम

Digital Learning Classes

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	श्रोष्यति	श्रोष्यत:	श्रोष्यति
मध्यम	श्रोष्यसि	श्रोष्यथ:	श्रोष्यथ
उत्तम	श्रोष्यामि	श्रोष्याव:	श्रोष्याम:

16. शुभ् (चकमना)

लट् लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	शोभते	शोभते	शोभन्ते
मध्यम	शोभसे	शोभेथे	शोभध्वे
उत्तम	शोभे	शोभवहे	शोभमहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	शोभताम्	शोभेताम्	शोभन्ताम्
मध्यम	शोभस्व	शोभेथाम्	शोभध्वम्
उत्तम	शोभै	शोभवहै	शोभामहै

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	शोभेते	शोभेयाताम्	शोभेरन
मध्यम	शोभेया:	शोभेयाथाम्	शोभेध्वम्
उत्तम	शोभै	शोभवहै	शोभामहै

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	शोभताम्	शोभताम्	शोभन्ताम्
मध्यम	शोभस्व	शोभेथाम्	शोभध्वम्
उत्तम	शोभै	शोभावहै	शोभामहै

विधिलिङ्ग लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	शोभते	शोभेयाताम्	शोभेरन
मध्यम	शोभेथा:	शोभेयाथाम्	शोभेध्वम्
उत्तम	शोभेय	शोभेवहि	शोभेमहि

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अशोभत	अशोभेताम्	अशोभन्त
मध्यम	अशोभेया:	अशोभेथाम्	अशोभध्वम्
उत्तम	अशोभे	अशोभावहि	अशोभामहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	शोभिष्यते	शोभिष्येते	शोभिष्यन्ते
मध्यम	शोभिष्यसे	शोभिष्येथे	शोभिष्यध्वे
उत्तम	शोभिष्ये	शोभिष्यावहे	शोभिष्यामहे

Digital Learning Classes

17. शक् (सकना)

लट् लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	शक्नोति	शक्नुत:	शक्नुवन्ति
मध्यम	शक्नोषि	शक्नुथ:	शक्नुथ
उत्तम	शक्नोमि	शक्नुव:	शक्नुम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
मध्यम	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उत्तम	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	शक्नुयात्	शक्नुयाताम	शक्नुयु:
मध्यम	शक्नुया:	शक्नुयाताम्	शक्नुयात्
उत्तम	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अशक्नोत	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
मध्यम	अशक्नो:	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उत्तम	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	शक्ष्यति	शक्ष्यत:	शक्ष्यन्ति
मध्यम	शक्ष्यसि	शक्ष्यथ:	शक्ष्यथ
उत्तम	शक्ष्यामि	शक्ष्याव:	शक्ष्याम:

18. हन् (वध करना)

Digital Learning Classes

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	हन्ति	हत:	ध्नन्ति
मध्यम	हन्सि	हथ:	हथ
उत्तम	हन्मि	हन्व:	हन्म:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
मध्यम	जहि	हतम्	हत
उत्तम	हनानि	हनाव	हनाम

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	हन्यात्	हन्याताम्	हन्यु:
मध्यम	हन्या:	हन्यातम्	हन्यात
उत्तम	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यम	अहः	अहतम्	अहत
उत्तम	अहनम्	अहन्व	अहन्म

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
मध्यम	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उत्तम	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

19. सेव् (सेवा करना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

20. पच् (पकाना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पचति	पचतः	पचन्ति
मध्यम	पचसि	पचथः	पचथ
उत्तम	पचामि	पचावः	पचामः

Digital Learning Classes

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यम	पच	पचतम्	पचत
उत्तम	पचानि	पचाव	पचाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यम	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तम	पचेयम्	पचेव	पचेम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम	अपचः	अपचतम्	अपचत
उत्तम	अपचम्	अपचाव	अपचाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
मध्यम	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उत्तम	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

21. क्रुध् (क्रोध करना)

लट् लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	क्रुध्यति	क्रुध्यतः	क्रुध्यन्ति
मध्यम	क्रुध्यसि	क्रुध्यथः	क्रुध्यथ
उत्तम	क्रुध्यामि	क्रुध्यावः	क्रुध्यामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	क्रुध्यतु	क्रुध्यताम्	क्रुध्यन्तु
मध्यम	क्रुध्य	क्रुध्यतम्	क्रुध्यत
उत्तम	क्रुध्यानि	क्रुध्यावः	क्रुध्यामः

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	क्रुध्येत्	क्रुध्येताम्	क्रुध्येयुः
मध्यम	क्रुध्येः	क्रुध्येतम्	क्रुध्येत
उत्तम	क्रुध्येयम्	क्रुध्येव	क्रुध्येम

लिङ्ग् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अक्रुध्यत्	अक्रुध्यताम्	अक्रुध्यन्
मध्यम	अक्रुध्य	अक्रुध्यतम्	अक्रुध्यत
उत्तम	अक्रुध्यम्	अक्रुध्याव	अक्रुध्याम

Digital Learning Classes

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	क्रोत्स्यति	क्रोत्स्यत:	क्रोत्स्यन्ति
मध्यम	क्रोत्स्यसि	क्रोत्स्यथ:	क्रोत्स्यथ
उत्तम	क्रोत्स्यामि	क्रोत्स्याव:	क्रोत्स्याम:

१३. जि = जय (जीतना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	जयति	जयत:	जयन्ति
मध्यम	जयसि	जयथ:	जयथ
उत्तम	जयामि	जयाव:	जयाम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	जयतु	जयताम्	जयन्तु
मध्यम	जय	जयतम्	जयत
उत्तम	जयानि	जयाव	जयाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	जयेत्	जयेताम्	जयेयु:
मध्यम	जये:	जयेतम्	जयेत
उत्तम	जयेयम्	जयेव	जयेम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
मध्यम	अजय:	अजयतम्	अजयत
उत्तम	अजयम्	अजयाव	अजयाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	जेष्यति	जेष्यत:	जेष्यन्ति
मध्यम	जेष्यसि	जेष्यथ:	जेष्यथ
उत्तम	जेष्यामि	जेष्याव:	जेष्याम:

23. पा (रक्षा करना)

लट् लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पति	पात:	पान्ति
मध्यम	पासि	पाथ:	पाथ
उत्तम	पामि	पाव:	पाम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पातु-पातात्	पाताम्	पान्तु
मध्यम	पाहि-पातात्	पातम्	पात
उत्तम	पानि	पाव	पाम

Digital Learning Classes

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पायात्	पायाताम्	पायु:
मध्यम	पाया:	पायातम्	पायात
उत्तम	पायाम्	पायाव	पायाम

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अपात्	अपाताम्	अपु: अपान्
मध्यम	अपा:	अपाताम्	अपात
उत्तम	अपाम्	अपाव	अपाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पास्यति	पास्यत:	पास्यन्ति
मध्यम	पास्यसि	पास्यथ:	पास्यथ
उत्तम	पास्यमि	पास्यव:	पास्याम:

24. तप् (दु:खी होना)

लट् लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	तपति	तपत:	तपन्ति
मध्यम	तपसि	तपथ:	तपथ
उत्तम	तपामि	तपाव:	तपाम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	तपतु	तपातम्	तपन्तु
मध्यम	तप	तपतम्	तपत
उत्तम	तपानि	तपाव	तपाम

Digital Learning Classes

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	तपेत्	तपेताम्	तपेयु:
मध्यम	तपे:	तपेतम्	तपेत
उत्तम	तपेयम्	तपेव	तपेम

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अतपत्	अतपताम्	अतपन्
मध्यम	अतप:	अतपतम्	अतपत
उत्तम	अतपतम्	अतपाव	अतपाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	तप्स्यति	तप्स्यत:	तप्स्यन्ति
मध्यम	तप्स्यसि	तप्स्यथ:	तप्स्यथ
उत्तम	तप्स्यामि	तप्स्याव:	तप्स्याम:

25. त्यज् (छोड़ना)

लट् लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	त्यजति	त्यजत:	त्यजन्ति
मध्यम	त्यजसि	त्यजथ:	त्यजथ
उत्तम	त्यजामि	त्यजाव:	त्यजाम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	त्यजतु	त्यजताम्	त्यजन्तु
मध्यम	त्येज	त्यजतम्	त्येजत
उत्तम	त्यजानि	त्यजाव	त्यजाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	त्यजेत	त्यजेताम्	त्यजेयु:
मध्यम	त्येज:	त्येजतम्	त्येजत
उत्तम	त्यजेयम्	त्यजेव	त्यजेम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अत्यजत्	अत्यजताम्	अत्यजन्
मध्यम	अत्यज:	अत्यजतम्	अत्यजत
उत्तम	अत्यजम्	अत्यजाव	अत्यजाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	त्यक्ष्यति	त्यक्ष्यत:	त्यक्ष्यन्ति
मध्यम	त्यक्ष्यसि	त्यक्ष्यथ:	त्यक्ष्यथ
उत्तम	त्यक्ष्यामि	त्यक्ष्याव:	त्यक्ष्याम:

26. लिख् (लिखना)

Digital Learning Classes

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	लिखति	लिखत:	लिखन्ति
मध्यम	लिखसि	लिखथ:	लिखथ
उत्तम	लिखामि	लिखाव:	लिखाम:

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम	लिखानि	लिखाव	लिखाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयु:
मध्यम	लिखे:	लिखेतम्	लिखेत
उत्तम	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

लङ्. लकार

	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्	
मध्यम	अलिख:	अलिखतम्	अलिखत	
उत्तम	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम	

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	लेखिष्यति	लेखिष्यत:	लेखिष्यन्ति
मध्यम	लेखिष्यसि	लेखिष्यथ:	लेखिष्यथ
उत्तम	लेखिष्यामि	लेखिष्याव:	लेखिष्याम:

27. लभ् (प्राप्त करना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम	लभे	लभावहे	लभामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम	लभै	लभिवहै	लभिमहै

विधिलिङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम	लभेथा:	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम	अलभथा:	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

28. नी (ले जाना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	नयति	नयत:	नयन्ति
मध्यम	नयसि	नयथ:	नयथ
उत्तम	नयामि	नयाव:	नयाम:

Digital Learning Classes

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	नयतु	नयताम्	नयन्तु
मध्यम	नय	नयतम्	नयत
उत्तम	नयानि	नयाव	नयाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	नयेत्	नयेताम्	नयेयु:
मध्यम	नये:	नयेतम्	नयेत
उत्तम	नयेयम्	नयेव	नयेम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यम	अनय:	अनयतम्	अनयत
उत्तम	अनयम्	अनयाव	अनयाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	नेष्यति	नेष्यत:	नेष्यन्ति
मध्यम	नेष्यसि	नेष्यथ:	नेष्यथ
उत्तम	नेष्यामि	नेष्याव:	नेष्याम:

29. वृत् (रहना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
मध्यम	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उत्तम	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
मध्यम	वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उत्तम	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

Digital Learning Classes

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
मध्यम	वर्तेथा:	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उत्तम	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
मध्यम	अवर्तथा:	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
उत्तम	अवर्ते	अवर्ताविहि	अवर्तामहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	वर्त्स्यति	वर्त्स्यत:	वर्त्स्यन्ति
मध्यम	वर्त्स्यसि	वर्त्स्यथ:	वर्त्स्यथ
उत्तम	वर्त्स्यामि	वर्त्स्याव:	वर्त्स्याम:

१८. नम् (झुकना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	नमति	नमतः	नमन्ति
मध्यम	नमसि	नमथः	नमथ
उत्तम	नमामि	नमावः	नमामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	नमतु	नमताम्	नमन्तु
मध्यम	नम	नमतम्	नमत
उत्तम	नमानि	नमाव	नमाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
मध्यम	नमेः	नमेतम्	नमेत
उत्तम	नमेयम्	नमेव	नमेम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
मध्यम	अनमः	अनमतम्	अनमत
उत्तम	अनमम्	अनमाव	अनमाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
मध्यम	नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
उत्तम	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

Digital Learning Classes

31. पा (पिब्) पीना

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

लङ्. लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम	अपिब:	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पास्यति	पास्यत:	पास्यन्ति
मध्यम	पास्यसि	पास्यथ:	पास्यथ
उत्तम	पास्यामि	पास्याव:	पास्याम:

32. पृच्छ् (पूछना)

लट् लकार (प्रच्छ् को पृच्छ्)

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पृच्छति	पृच्छत:	पुच्छन्ति
मध्यम	पृच्छसि	पुच्छथ:	पुच्छथ
उत्तम	पुच्छामि	पुच्छाव:	पृच्छाम:

लोट् लकार (प्रच्छ् को पृच्छ्)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम	पृच्छ,	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ्. लकार (प्रच्छ् को पृच्छ्)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अपृच्छेत्	अपृच्छेताम्	अपृच्छन्:
मध्यम	अपृच्छे:	अपृच्छेतम्	अपृच्छत
उत्तम	अपृच्छेम्	अपृच्छेव	अपृच्छाम

लङ्. लकार (प्रच्छ् को पृच्छ्)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम	अपृच्छ:	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लृट् लकार (प्रच्छ् को पृच्छ्)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यत:	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथ:	प्रक्ष्यथ
उत्तम	पृक्ष्यामि	पृक्ष्याव:	पृक्ष्याम:

32. नृत् (नाचना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	नृत्यति	नृत्यत:	नृत्यन्ति
मध्यम	नृत्यसि	नृत्यथ:	नृत्यथ
उत्तम	नृत्यामि	नृत्याव:	नृत्याम:

Digital Learning Classes

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	नृत्य	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
मध्यम	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उत्तम	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
मध्यम	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उत्तम	नृत्येयम्	नृत्येव	नृतयेम्

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
मध्यम	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उत्तम	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	नर्त्स्यति	नर्त्स्यतः	नर्त्स्यन्ति
मध्यम	नर्त्स्यसि	नर्त्स्यथः	नर्त्स्यथि
उत्तम	नर्त्स्यामि	नर्त्स्यावः	नर्त्स्यामः

नोटः- नृत् धातु के लृट् लकार में नर्तिष्यति..... रूप भी चलते है।

Digital Learning Classes

11. कारक

कारक शब्द में कृ धातु तथा ण्वुल् प्रत्यय होता है। कारक शब्द का शब्दिक अर्थ करने वाला होता है।

कारक की परिभाषा – 1. क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्, 2. क्रियोत्पादकं कारकम्।

अर्थात् क्रिया के जनक अथवा उत्पादक कर्ता को ही कारक कहते है, **संस्कृत व्याकरण में कारक के 6 भेद होते हैं** अर्थात् **"षट् कारकाणि"**

1. कर्ता 2. कर्म 3. करण
4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरणै

सम्बन्ध– कर्ता आदि 6 कारकों के अलावा जो शेष बचता है उस शेष को सम्बन्ध कहते हैं। संस्कृत व्याकरण में इससे **क्रिया का अभाव** होने के कारण इसके कारक नहीं माना जाता है।

सम्बोधन – संस्कृत व्याकरण में सम्बोधन को भी कारक नहीं माना जाता है क्योकि सम्बोधित करने वाला व्यक्ति स्वयं कर्ता ही होता है। अतः **"सम्बोधन च" सूत्र से सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति ही होती है।**

प्रयोग अर्थ में संस्कृत व्याकरण में विभक्तियाँ 7 होती हैं। जिनको दो भागों में विभक्त किया गया है–

1. कारक विभक्ति, 2. उपपद विभक्ति।

जैसे –

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथम	कर्ता	ने
द्वितीय	कर्म	को
तृतीया	करण	से द्वारा/साधन
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पंचमी	अपादान	से अलग होना
षष्ठी	सम्बन्ध	का के की
सप्तमी	अधिकरण	में/अंदर पर

षष्ठी विभक्ति में किसी प्रकार का कोई कारक नहीं होता है अर्थात् षष्ठी विभक्ति में कारक का अभाव होता है।

प्रथमा विभक्ति

कर्ता कारक – सूत्र– "प्रतिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा"

प्रातिपदिकार्थमात्रे कर्ता में = रामः लक्ष्मी श्री ज्ञानम् उच्चैः।

लिङ्ग मात्रे = तट तटी तटम्।

परिमाण मात्रे = द्रोणे व्रीहिः

वचन मात्रे = एकः द्वौ बहवः।

"नितोपस्थितिकः प्रतिपदिकः" क्रिया को करने के लिए जो निश्चित रूप से उपस्थित रहता है वह प्रतिपदिक कहलाता है। प्रातिपदिक को ही कर्ता करते हैं। अतः कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। लिङ्ग की अधिकता अर्थात् तीनों लिङ्ग में प्रयुक्त होने के कारण तट शब्द **प्रथमा** विभक्ति होती है।

द्वितीया विभक्ति

कर्म कारक –

1 **"कर्तुरीप्सिततमं कर्मः"**

कर्ता अपनी क्रिया के लिए जिसको सर्वाधिक चाहता है उसे कर्म कहते है।

2. **कर्मणि द्वितीया**

जिसकी कर्म संज्ञा होती है अर्थात् **अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।**

नोटः– सामान्यतः वाक्यों में कर्ता उक्त होता है। क्योकि क्रिया इसी के अनुसार प्रयुक्त होती है। और कर्म अनुक्त होता है। क्योंकि क्रिया से कर्म पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

1. राम फल खाता है।
रामः फलं खादति।

2. दो बालक गाँव जाएंगे।
बालाकौ ग्रामं गमिष्यतः।

3. सीता जल पी चुकी।
सीता जलम् अपिबत्

4. मोहन को दो लेख लिखना चाहिए।
मोहनः लेखे लिखेत्।

5. तुम नगर जाओ।
त्वं नगरं गच्छ।

6. रमा माला गूँथती है।
रमा मालां गुम्फति।

7. वह और मैं नगर गए।
सः अहं च नगरं अगच्छाव।

3. "अधिशीङ्स्थासां कर्म"

अधि उपसर्गपूर्वक शीङ् (शयन करना), स्था (ठहरना) और आस् (बैठना) धातु हो तो आधार की कर्म संज्ञा होती है।

1. बालक (कर्ता) पलंग (आधार) पर सोता है।
   बालकः पर्यङकम् अधिशेते।
2. हरि (कर्ता) बैकुण्ठ (आधार) में ठहरता (क्रिया) है।
   हरिः बैकुण्ठम् अधितिष्ठति।

4. "उपान्वध्याङ् वसः"

वस् = रहना

वस् धातु के पूर्व में उप अनु अधि आङ् में से कोई सा भी उपसर्ग हो तो आधार के स्थान पर कर्म हो जाता है। अर्थात् सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति जाती है।

जैसे–

1. हरि बैकुण्ठ में रहता है।
   हरिः बैकुण्ठम् उपवसति।
2. हम सब जयपुर में रहते है।
   वयं जयपुरम् उपवसामः

5. "कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे"

काल + अध्वनोः + अत्यन्तसंयोगे।

काल (समय) अध्वन् (मार्ग / दूरी)

वाचक शब्दों में यदि निरन्तरता हो तो समय व दूरी वाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे– 1. महीने भर पढ़ा = मासम् अधीते (काल वाचक)
2. पूरा महीना शुभ है = मासं कल्याणी (काल वाचक)
3. कोश भर नदी टेडी– मेढ़ी है = क्रोशं कुटीला नदी (दूरी वाचक)
4. कोश भर पहाड़ है = क्रोशं गिरिः अस्ति (दूरी वाचक)

6. "अभित परितः समयानिकषा हा प्रतियोगेऽपि"

अभितः	परितः	समया	निकषा	हा	प्रतियोगेऽपि
जैसे– दौनों ओर	चारों ओर	समीप	निकट	कष्ट	की ओर

1. विद्यालय के दोनों ओर वृक्ष हैं।
   विद्यालयम् अभितः वृक्षाः सन्ति।
2. नगर के चारों ओर पर्वत है।
   नगरं परितः पर्वताः सन्ति।
3. गाँव के पास जलाशय है।
   ग्रामं समय / निकषा जलाशयः अस्ति।
4 हाय! कष्ट है।
   हा! कष्टम्
5. युद्ध की ओर सैनिक जाते हैं।
   युद्धं प्रति सैनिकाः गच्छन्ति ।
6. विद्यालय की ओर छात्र जाते है।
   विद्यालयं प्रति छात्राः गच्छन्ति।
7. वन के पास नदी है।
   वनं निकषा नदी अस्ति।

7. "उभयत : सर्वतः धिक् उपर्युपरि अधोऽधः अध्यधि"

इनके योग में भी द्वितीया विभक्त होती है।

1. जयपुर के दोनों और अभयारण्य हैं।
   जयपुरं उभयतः अभयारण्याः
2. वन के सभी ओर पशु हैं।
   वनं सर्वतः पशवः सन्ति।
3. राक्षस का धिक्कार है।
   राक्षसं धिक्
4. वृक्ष के ऊपर –ऊपर फल हैं।
   वृक्षम् उपर्युपरि फलानि सन्ति।
5. आकाश के नीचे–नीचे बादल है।
   गगनम् अधोऽधः मेघाः संति।
6. नदी के अंदर–अंदर जल है।
   नदीम् अध्यधि जलम् अस्ति।
7. लोक के अंदर–अदर राम है।
   लोकम् अध्यधि राम : अस्ति।
8. गाँव के नीचे–नीचे जल है।
   ग्रामम् अधोऽधः जलम् अस्ति।
9. गाँव और विद्यालय के बीच में (अन्तरा) जल है।
   ग्रामं विद्यालयं अन्तरा जलम् अस्ति।

8. "अन्तराऽन्तरेण युक्ते च"

अन्तरा = बीच, अन्तरेण = बिना / रहित

अन्तरा / अन्तरेण के योग मे भी द्वितीया विभक्ति होती है।

1. तेरे मेरे बीच हरि है।
त्वं माम् अन्तरा हरिः।

2. हरि के बिना सुख नहीं है।
हरिम् अन्तरेण सुखं नास्ति।

3. घर और विद्यालय के बीच नदी है।
गृहं विद्यालयं अन्तरा नदी अस्ति।

4. गुरू के बिना ज्ञान नहीं है।
गुरूम् अन्तरेण ज्ञानं न अस्ति

9. "अकथितं च"

दुह् याच् पच् दण्ड् रूध् प्रच्छ् चि ब्रू शास्
जि मथ् मुष् नी हृ कृष् वह्

इन 16 द्विकर्मक धातुओं के योग में गौण कर्म में भी द्वितीया विभक्ति होती है।

1. माता गाय का दूध दुहती है।
माता गां पयः दोग्धि।

2. वह बलि से पृथ्वी मांगता है।
सः बलिं वसुधां याचते।

3. माता चावलों से भात पकाती है।
माता तण्डूलान् ओदनं पचति।

4. राजा सैनिकों को 100 रूपये का दण्ड देता है।
राजा गर्गान् शतं दण्डयति।

5. ग्वाला गाय को बाड़े में रोकता है।
गोपालः ब्रजमवरूणधिं गा।

6. वह बालक से मार्ग पूछना है।
सः माणवकं पन्थानं पृच्छति।

7. माली वृक्ष से पुष्प चुनता है।
मालाकार, वृक्षं पुष्पाणि अवचिनोति।

8. गुरू शिष्य को धर्म की बात कहता है अथवा उपदेश देता है।
गुरूः शिष्यं धर्म ब्रूते/शास्ते।

9. वह देवदत्त के 100 रूपये जीतता है।
सः देवदत्तं शतं जयति।

10. विष्णु समुद्र से अमृत मथता है।
विष्णुः क्षीरनिधि सुधां मथ्नाति।

11. वह राम के 100 रूपये चुराता है।
सा रामं शतं मुष्णति।

12. वह गाँव से बकरी ले जाता है।
सः ग्रामम् अजां नयति।

13. वह गांव से बकरी को हरता है।
सः ग्रामम् अजां हरति।

14. वह गांव से बकरी को खींचता है।
सः ग्रामम् अजां कर्षति।

15. वह गाँव से बकरी को ढोता है।
सः ग्रामम् अजां वहति।

10. "तथायुक्त चानीप्सितं"

अनीप्सित कर्म में भी द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे– 1. गांव जाते हुए तिनके को स्पर्श करता है।
ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृश्यति।

तृतीया विभक्ति
"करण कारक"

1. "साधकतमं करणम्"

कर्ता अपनी क्रिया सिद्धि के लिए जिस साधन का प्रयोग करता है उस साधन को करण कहते है।

2. "कर्तृकरणयोस्तृतीया"

कर्ता (कर्मवाच्य/भाववाच्य) व करण में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे –

1. राम के द्वारा बाण से मारा गया बालि।
रामेण बाणेन हतो बालिः।

2. तुम सब कलम से लेख लिखते है।
यूयं कलमेन लेखं लिखथ

3. "येनाग्ङविकारः"

यदि किसी व्यक्ति की पहचान उसके विकृत (कुछ विकार) अंग से होती है। तो उस अंग में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे–

1. वह पैर से लंगड़ा है।
सः पादने खञ्जः।

2. वह आँख से काणा है।
सः अक्ष्ण/नेत्रेण काणः।

3. वह कान से बहरा है।
सः कर्णेन बधिरः।

4. वह शरीर से बौना है।
सः शरीरेण वामनः।

5. वह सिरे से गंजा है।
सः शिरसा खल्वाटः।

4. "इत्थंभूतलक्षणे"

जिस किसी व्यक्ति की पहचान विशेष लक्षण अथवा चिह्न से होती है तो उस चिह्न में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसेः–

1. वह जटाओं से तपस्वी है।
   सः जटाभिस्तापसः।
2. वह वस्त्र से सैनिक है।
   सः वस्त्रेण सैनिकः।
3. वह पुस्तक से छात्र है।
   सः पुस्तकेन छात्रः

5. "सहयुक्तेऽप्रधाने"

सह / साकम् सार्धम् / समम् = साथ

सह के योग में **अप्रधान कर्ता** में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसेः–

1. राम के साथ सीता वन में गई।
   रामेण सह सीता वनम् अगच्छत् / गतवती।
2. सीता के साथ राम वन में गए।
   सीतया सह रामः वनम् अगच्छत् / गतवान।
3. मोहन के साथ श्याम् विद्यालय जाता है।
   मोहनेन सह श्यामः विद्यालयं गच्छति
4. सीता के साथ लता कलम से पत्र लिखेगी।
   सीतया सह लता कलमेन पंत्र लेखिष्यति।

6. " हेतौ " (हेतु में)

किसी भी कारण में तृतीया विभक्ति होती है।

1. मैं अध्ययन के कारण रहता हूँ।
   अहम् अध्ययनेने वसामि।
2. डण्डे से घड़ा बनता है।
   दण्डेन घटः।

7. अपवर्गेतृतीया (फल प्राप्ति)

अपवर्ग में तृतीया विभक्ति होती है।

नोटः– यदि समय व दूरी वाचक शब्द में फल प्राप्ति का बोध हो तो समय व दूरी वाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है।

1. कोशभर में एक अनुवाक पढ लिया।
   क्रोशेनानुवाकोऽधीते।
2. महीने में एक अनुवाक पढ़ लिया।
   मासेनानुवाकोऽधीते।

चतुर्थी विभक्ति

सम्प्रदान कारक

1. "कर्मणा यमभिप्रैति क्रियया स सम्प्रदानम्"

कर्म के द्वारा जिसको अभिलाषित किया जाता है उसे सम्प्रदान कहते हैं। अर्थात् कर्ता यदि स्थायी रूप से किसी को कोई वस्तु देता है तो उस वस्तु के प्राप्तकर्ता को सम्प्रदान कहते हैं।

2. सम्प्रदाने चतुर्थी

समप्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है।

1. रमा भिखारी को भोजन देती है।
   रमाः (कर्ता) भिक्षुकाय (सम्प्रदान) भोजनं (कम) ददाति (क्रिया)।
2. राजा ब्राह्मण को गाय देता है।
   राजा विप्राय गां ददाति

3. "रूच्यर्थानां प्रीयमाणः

रूच् = अच्छा लगना

रूच् धातु के योग में प्रीयमाण (कर्ता) की सम्प्रदान संज्ञा होती है।

क्रिया कर्म के अनुसार लगती है।

1. हरि को भक्ति अच्छी लगती है।
   हरये भक्तिं रोचते।
2. बालक को मोदक (लड्डू) अच्छा लगता है।
   बालकाय मोदकं रोचते।

4. "स्पृहेरीप्सितः कर्म"

स्पृह = चाहना

स्पृह अर्थ वाली धातु के योग में कर्म में चतुर्थी विभक्ति होती है।

1. में पढ़ना चाहता हूँ।
   अहं पठनाय स्पृहयामि।
2. सीता घूमना चाहती है।
   सीता भ्रमणाय स्पृहयति।

Digital Learning Classes

3. मोहन खेलना चाहता है।
मोहनः क्रीडनाय स्पृह्यति

5. "नमः स्वस्ति–स्वाहा–स्वधाऽलंवषड्योगाच्च"

इनके योग में भी चतुर्थी विभक्ति होती है।

1. हरि को प्रणाम।
हरयेः नमः।
2. प्रजा का कल्याण हो।
प्रजाभ्यः स्वस्ति।
3. अग्नि देवता की आहूति।
अग्नये स्वाहा।
4. पूर्वजों को तर्पण।
पितृभ्यः स्वधा।
5. इन्द्र योग्य है।
इन्द्राय अलम्।
6. इन्द्र देवताओं से समर्थ है।
इन्द्रः दैत्येभ्यः वषट्।

6. "क्रुध–द्रुह–ईर्ष्यासुयार्धानां यं प्रति कोपः"

क्रुध = क्रोध करना, द्रुह = झगड़ा, ईर्ष्या = ईर्ष्या करना, असूय = निन्दा करना।

अर्थवाली धातुओं के योग में जिसके प्रति क्रोध आदि किया जाता है। उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

1. पिता पुत्र पर क्रोध करता है।
पिता पुत्राय क्रुध्यति।
2. राम श्याम से झगड़ा करता है।
रामः श्यामाय द्रुह्यति।
2. कौरव पांडवों से ईर्ष्या करते हैं।
कौरवा पाण्डुभयः ईर्ष्यन्ति।
4. रावण राम की निन्दा करता है।
रावणः रामाय असूयति।

नोट– उपर्युकत क्रुध आदि धातुओं के पूर्व में यदि कोई उपसर्ग लग जाए तो **सम्प्रदान के स्थान पर कर्म संज्ञा हो जाती है।** अर्थात् चतुर्थी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति हो जाती है और अर्थ में कोई परिवर्तन नही होता है। **यह क्रिया "क्रुधोपसृष्टयोः" सूत्र से सम्पन्न होती है।**

जैसे :–

1. पिता पुत्र पर क्रोध करता है।
पिता पुत्रम् अभिक्रुध्यति।
2. राम श्याम से झगड़ा करता है।
रामः श्यामं विद्रुह्यति।
3. कौरव पाण्डवों से ईर्ष्या करते है।
कौरवाः पाण्डून् अभीर्ष्यन्ति।
4. रावण राम की निन्दा करता है।
रावणः रामम् अन्वसूयति।

7. "धारेरूत्तमर्णः"

धारण अर्थ (ऋण लेना) के योग में यदि कोई व्यक्ति किसी उत्तम ऋण लेता है तो ऋण दाता की सम्प्रदान संज्ञा होती है। अर्थात् ऋण दाता में चतुर्थी विभक्ति होती है।

जैसे :–

1. राम देवदत्त से सौ रूपये का ऋण लेता है।
रामः देवदत्ताय शतं धारयति।
2. सीता मोहन से वस्त्रों का ऋण लेती है।
सीता मोहनाय वस्त्राणि धारयति।
3. ब्राह्मणः यजमानाय धारयन्ति।

पंचमी विभक्ति

अपादान कारक

1. "ध्रुवमपायेऽपादानम्"

ध्रुवम = निश्चित धूरी/अवधि भूत, अपाये = विश्लेष/पृथक/अलग

जिस किसी निश्चित् धूरी से कोई व्यक्ति या वस्तु अलग होती है तो उस घूरी को अपादान कहते हैं। अर्थात् जिसमें अलग होता है उसे अपादान कहते हैं।

2. अपादाने पञ्चमी

अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसे –

1. वृक्ष से पत्ता गिरता है।
वृक्षात् पत्रं पतति।
2. वह दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।
सः धावतोऽश्वात् पतति।

3. "भीत्रार्थनां भयहेतु :"

भी = डरना, त्रै = बचना।

भी और त्रै अर्थ वाली धातुओं के योग में भय के कारण की अपादान संज्ञा होती है। अर्थात् भय के हेतु में पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसेः–

1. वह चोर से डरता है। सः चोरात् विभेति।
2. वह दुष्ट से बचती है। सा दुष्टात् त्रायते।
3. सीता दुर्जन से बचती है। सीता दुर्जनात् त्रायते।
4. मोहन सर्प से डरता है। मोहनः सर्पात् बिभेति।

4. "भुवः प्रभावः"

जिस किसी निश्चित् उद्गम स्थान से कोई वस्तु निकलती है तो उस उद्गम स्थान की अपादान संज्ञा होती है।

जैसे– 1. हिमालय से गंगा निकलती है। हिमालयात्/ हिमवतोः गंगा प्रभवति।

5. "जनिकर्तुः" प्रकृतिः

जनि = जन्म लेना /उत्पन्ना होना, प्रकृतिः– उत्पत्ति स्थान।

जिस किसी उत्पत्ति स्थान से कोई व्यक्ति या वस्तु जन्म लेता है तो उत्पत्ति स्थान की अपादान संज्ञा होती है। अर्थात् उत्पत्ति स्थान में पञ्चमी विभक्ति होती है।

1. ब्रह्मा से प्रजा उत्पन्न होती है। ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।
2. काम से क्रोध उत्पन्न होता है। कामात् क्रोधोऽभिजायते।
3. दूध से दही बनता है। दुग्धात् दधिः जायते।
4. गोबर से बिच्छू उत्पन्न होते है। गोमात् वृश्चिकाः जायन्ते।

6. "पृथग्विनानाना तृतीयाऽन्यतरस्याम्"

पृथक = अलग होना, बिना = रहित, नाना = अनेक।

पृथक/विना/नाना के योग में द्वितीय,तृतीया अथवा पञ्चमी विभक्ति होती है।

1. राम हरि से पृथक नहीं है। रामः हरिः/हरिणा/हरेः पृथक् नास्ति।
2. सुख के बिना जीवन नहीं है। सुंख/सुखेन/सुखात् बिना जीवनं नास्ति
3. हरि के अनके रूप होते है। हरि/हरिणा/हरे :अनेक रूपं भवन्ति।

7. "वारणर्थानामीप्सित"

वारण = हटाना।

वारण अर्थ वाली धातु के योग में ईप्सित पदार्थ अर्थात् चाहे गए पदार्थ की अपादान संज्ञा होती है।

जैसे–

1. जौ के खेत से गाय को हटाता है। येवेभयो गां वारयति।
2. गाँव से पशुओं को हटाता है। ग्रामात् पशून् वारयति।
3. धान से इलियों को हटाता है। व्रीहेः इलिकाः वारयति।

8. "जुगुप्सा–विराम–प्रमाद्युतपसंख्यानम्"

जुगुप्सा = घृणा करना, विराम = रोकना, प्रमाद = आलस्य।

इनके योग में पंचमी विभक्ति होती है।

1. पाप से घृणा पापाद् जुगुप्सते।
2. पाप से हटाना पापात् विरमति।
3. धर्म से आलस्य। धर्मात् प्रमाद्यति।

9. अन्तर्द्धौनीलियते/निलीयते

अन्तर्द्धौ = छिपना, नीलियते = लघु सिद्धान्त कौमुदी, निलीयतो = सिद्धान्त कौमुदी

अन्तर्द्धौ (छिपना) अर्थ में जिससे छिपा जाता है उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है।

1. माता से कृष्ण छिपता है। मातुः कृष्णः निलीयते।
2. गुरू से शिष्य छिपता है। गुरोः शिष्यः निलीयते।

षष्ठी विभक्ति

इसमें कारक का अभाव होता है।

1. शेषे षष्ठी

शेष से षष्ठी विभक्ति होती है। कर्ता आदि 6 कारकों के अलावा जो शेष बचता है उस शेष को सम्बन्ध कहते है। अर्थात् सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे–

1. वृक्ष की शाखा।
   वृक्षस्य शाखा
2. राजा का पुरूष।
   राज्ञः पुरूषः।
3. माता का पुत्र।
   मातुः पुत्रः

2. "कर्तृकर्मणोःकृति" संबंध

कृति = रचना

कृतिः (रचना) अर्थ में कर्ता अथवा कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे–

1. कालिदास की रचना अभिज्ञानशाकुन्तलम्
   कालिदास्य कृति अभिज्ञानशाकुन्तलम्
2. जगत का कर्ता कृष्ण है।
   जगतः कर्ता कृष्णः अस्ति।
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के रचनाकार कालिदास है।
   अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कर्ता कालिदासः अस्ति।

3. यतश्च निर्धारणम्

बहुतों में से एक चयन करना हो तो षष्ठी अथवा सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है।

जैसे–

1. मनुष्यों में राम श्रेष्ठ है।
   नराणां/नरेषु रामः श्रेष्ठः अस्ति।
2. पुस्तकों में गीता श्रेष्ठ है।
   पुस्तकानां/पुस्तकेषु गीता श्रेष्ठ अस्ति।
3. फलों में आम श्रेष्ठ है।
   फलानाम्/फलेषु आम्रः श्रेष्ठः अस्ति।
4. कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है।
   कवीना/कविषु कालिदासः श्रेष्ठः अस्ति।
5. कक्षा में रमा श्रेष्ठ है।
   कक्षायाः/कक्षायां रमा श्रेष्ठा अस्ति।

सप्तमी विभक्ति

अधिकरण कारक – में / पर /पर

1. आधारोऽधिकरणम्

आधार की अधिकरण संज्ञा होती है। आधार तीन प्रकार का होता है।

1. **औपश्लेष्टिक आधार (पर)**– जहाँ कर्ता व आधार का परस्पर स्पर्श होता है वहा औपश्लेष्टिक आधार कहलाता है।
2. **वैषयिक आधार (में)** – जहाँ कर्ता का विषय आधार होता है वह वैषयिक आधार कहलाता है।
3. **अभिव्यापक आधार (अंदर)** – जहाँ कर्ता आधार में पूर्णतया व्याप्त (फैला हुआ) रहता है। वह अभिव्यापक आधार कहलाता है।

2. "सप्तम्यधिकरणे"

अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है।

1. रमा चटाई पर बैठती है।
   रमा कटे आस्ते।
2. वृक्ष की शाखा पर पक्षी रहते है।
   वृक्षस्य शाखायां खगाः वसन्ति।
3. हरि की मोक्ष में इच्छा है।
   हरिः मोक्षे इच्छास्ति।
4. हम सब की संस्कृत में इच्छा है।
   वयं संस्कृते इच्छास्मः।
5. तिलों मे तेल है।
   तिलेषु तैलम् अस्ति।
6. नदी में जल है।
   नद्यां जलम् अस्ति।

3. "यस्य च भावेन भावलक्षणम्"

जब एक ही कर्ता की क्रिया का बोध करवाने के लिए दूसरी क्रियास का सहारा लिया जाता है तो सहायक क्रिया को भावलक्षणा कहते है। **भाव लक्षणा में सप्तमी विभक्ति होती है।**

1. वह गायों के दुहे जाने पर गया। — सः गोषु (आधार) दुध्यमानसु (भावलक्षणा) गतः।
2. सूर्य उगने पर पक्षी उड़ते है। — सूर्यः उदिते (भावलक्षणा) सति (आधार) खगाः उड्डीयन्ते।
3. राम के वन में जाने पर दशरथ मरा। — रामःवनेगते (भाव) सति (आधार) दशरथः मृतः।

Digital Learning Classes

12. कारक (टैस्ट)

1. कति कारकाणि?
(1) पञ्च (2) षट्
(3) चत्वरि (4) सप्त

2. कारकभेदो नास्ति–
(1) करणम् (2) सम्प्रदानम्
(3) अधिकरणम् (4) सम्बन्धः

3. साकं–सार्धं सम योगे का विभक्ति सज्जते?
(1) प्रथमा (2) चतुर्थी
(3) द्वितीया (4) तृतीया

4. अक्ष्णा काणः इत्यत्र केन नियमेन तृतीया प्रयुक्ता?
(1) कर्तृकरणयोस्तृतीया (2) येनाङ्गविकारः
(3) साधकतमं करणम् (4) साधने करणम्

5. यदि एकया क्रियया द्वितीया क्रिया लक्षिता, तर्हि विभक्तिर्भवति–
(1) सप्तमी (2) षष्ठी
(3) पंचमी (4) तृतीया

6. यस्मात् प्रादुर्भावो भवति तस्मिन् का विभक्तिर्भवति?
(1) सप्तमी (2) षष्ठी
(3) पंचमी (4) चतुर्थी

7. हरये नमः इत्यत्र हरिशब्दे विभक्तिरस्ति–
(1) चतुर्थी (2) सम्बोधनम्
(3) द्वितीया (4) प्रथमा

8. अधिकरणं कतिधा भवति?
(1) द्विधा (2) पञ्चधा
(3) त्रिधा (4) चतुर्धा

9. द्विकर्मकधातवो भवन्ति कति?
(1) 13 (2) 14
(3) 15 (4) 16

10. धिक् इति योगे कस्या विभक्तेः प्रकल्पनं स्यात्?
(1) तृतीयस्याः (2) द्वितीयस्याः
(3) प्रथमायाः (4) चतुर्थ्याः

11. विप्राय गां ददाति इत्यत्र कस्य पदस्य सम्प्रदानत्वं सम्भवति?
(1) गोपदस्य (2) ददातिपदस्य
(3) विप्रपदस्य (4) न कस्यापि

12. इत्थम्भूतलक्षणे इत्यस्य सूत्रस्य किमुदाहरणं प्रयोक्तुं शक्यते?
(1) दण्डेन घटः (2) अक्ष्णा काणः
(3) जटाभिस्तापसः (4) घटेन दण्डः

13. अधिकरणसंज्ञाविधायकं किं नाम सूत्रं विद्यते?
(1) आधारोऽधिकरणम् (2) साधकतमं करणम्
(3) स्थाना विशेषोऽधिकरणम् (4) शून्यताधिकरणम्

14. द्वितीया न स्यात्–
(1) प्रति–योगे (2) हा–योगे
(3) धिक्–योगे (4) हेतु–योगे

15. परितः इति योग विभक्तिः स्यात् का?
(1) प्रथमा (2) द्वितीया
(3) तृतीया (4) सप्तमी

16. यतश्चेतिनिर्धारणार्थे कस्याः विभक्त्याः स्वीकारः स्यात्?
(1) चतुर्थीञ्चाम्योः (2) पञ्चमीषष्ठयोः
(3) षष्ठीसप्तम्योः (4) सप्तमीतृतीययोः

17. अधि+शीङ् इत्यत्र विभक्तिर्भवति–
(1) प्रथमा (2) द्वितीया
(3) तृतीया (4) सप्तमी

18. 'ध्रुवमपाये..........'।
(1) करणम् (2) सम्प्रदानम्
(3) अपादानम् (4) अधिकरणम्

19. रुच्यर्थक–द्यातुभियोंगे का विभक्तिः?
(1) सप्तमी (2) चतुर्थी
(3) पंचमी (4) षष्ठी

20. 'बलिं याचते वसुधाम्' वाक्ये 'याच' योगे 'बलि' का विभक्ति?
(1) प्रथमा (2) तृतीया
(3) पञ्चमी (4) द्वितीया

21. 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' इति सूत्रेण का विभक्तिः?
(1) पंचमी (2) तृतीया
(3) चतुर्थी (4) षष्ठी

22. ''यस्य च भावेन भावलक्षणम्'' इत्यनेन–
(1) षष्ठी (2) पंचमी
(3) सप्तमी (4) चतुर्थी

23. क्रियाजनकत्वम्.........?
(1) विभक्तित्वम् (2) क्रियात्वम्
(3) कारकत्वम् (4) पितृत्वम्

24. कस्य योगे चतुर्थी न ?
(1) नमः (2) स्वस्ति
(3) वषट् (4) विना

25. शुद्धमस्ति–
(1) नेत्रेण काणः (2) नेत्राय काणः
(3) नेत्रात काण' (4) नेत्रस्य काणः

13. वाच्य– परिवर्तनम्

किसी भी बात को प्रकट करने का तरीका वाच्य कहलाता है। वाच्य तीन पकार के होते हैं–

1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्यः 3. भाववाच्यः

कर्तृवाच्य

' कर्तृरि प्रथमा यत्र द्वितीयाऽथ च कर्मणि।
कर्तृवाच्यं भवेत् तत्तु क्रिया कर्तृनुसारिणी"

जहाँ क्रिया का सम्बन्ध कर्ता से है, वहाँ कर्तृवाच्य होता है। कर्तृावाच्य में कर्ता प्रधान वाच्य होता है। इसमें कर्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। जैसे– सकर्मक एवं अकर्मक।

- रामः उद्यानं गच्छति।
- सीता पठति।

कर्मवाच्य

'कर्मणि प्रथमा यत्र तृतीयाऽथ च कर्तरि।
कर्मवाच्यं भवेत् तत्तु क्रिया कर्मानुसारिणी।।'

जहाँ क्रिया का सम्बन्ध कर्म से होता है, उसे कर्मावाच्य कहते हैं। कर्मवाच्य में कर्म प्रधान होता है। कर्ता की इसमें तृतीया विभक्ति हो जाती है। कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रिया कर्मानुसार हो जाती है। भूतकाल के प्रयोग के लिए क्तवतु के स्थान पर क्त प्रत्यय हो जाता है तथा विधिलिंग के स्थान पर तव्यत् प्रत्यय हो जाता है। यह वाच्य केवल सकर्मक धातुओं का होता है। जैसे–

- छात्रेण लेखः लिख्यते।
- रामेण पुस्तकम् पठयते।
- तेन कार्यम् क्रियते।

भाववाच्य

' भाववाच्ये क्रिया वक्ति न कर्तारं न कर्म च।
तत्र कर्ता तृतीयायां क्रिया भावानुसारिणी।।
भावे तु कर्मवाच्य क्रियैकवचने प्रथमपुरूषे।
सा चेद् भवेत् कृदनता क्लीबप्रथमैकवचने स्यात्।।

जहाँ क्रिया का सम्बन्ध न कर्ता से हो, न कर्म से अपितु भाव से हो, वहाँ भाववाच्य होता है। जैसे– रामेण पठ्यते। भाववाच्य में भाव प्रधान वाच्य होता है। इसमें कर्ता में तीसरी विभक्ति तथा क्रिया हमेशा प्रथम पुरूष एकवचन में होती है। यह वाच्य अकर्मक क्रियाओं वाला होता है।जैसे– छात्रेण क्रीड्यते। कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के अनुसार कुछ धातुरूप इस प्रकार चलेंगे–

- जिन धातुओं के अंत में दीर्घ 'आ' होता है, अंतिम स्वर के स्थान पर दीर्घ 'ई' हो जाता है तथा 'य' तथा 'ते' जोड़ दिया जाता है। यथा–

  पा = पीयते दा = दीयते स्था = स्थीयते

- 'ए' तथा 'ऐ' अंत वाली धातुओं का अंतिम स्वर भी 'ई' बन जाता है। यथा–

  गै = गीयते ध्यै = धीयते

- जिन धातुओं के अंत में ह्रस्व 'इ' तथा ह्रस्व 'उ' होता हैं, 'य' परे होने पर उनके ह्रस्व 'इकार' तथा 'उकार' की दीर्घ स्वर 'ई ' तथा 'ऊ' हो जाता है। यथा –

  सु = सुयते जि = जीयते हु = हुयते
  चि = चीयते श्रु = श्रुयते स्तु = स्यूयते

- जिस धातु में :'व्' होता है, 'व्' 'उ' में परिवर्तन हो जाता है। यथा–

  वच् = उच्यते वद् = उद्यते वप् = उप्यते
  वह् = वह्यते वस् = उष्यते

- धातु के अंतिम अक्षर के पहले यदि कोई अनुनासिक, किसी वर्ग का पांचवीं अक्षर, हो तो उसका लोप हो जाता है यथा–

  बन्ध् = बन्यते भञ्ज् = भज्यते रञ्ज् = रज्यते
  ग्रन्थ = ग्रथ्यते स्तम्भ = स्तभ्यते मन्थ् = मथयते

Digital Learning Classes

- ऋकारान्त धातु में अंतिम ऋकार को 'य' परे होने पर 'रि' आदेश हो जाता है। यथा–

कृ = क्रियते	घृ = घ्रियते	मृ = म्रियते	दृ = द्रियते
वृ = व्रियते	हृ = ह्रियते	भृ = भ्रियते	

- यज् धातु तथा व्यध् में अंतिम के 'य' को 'इ' हो जाता है। यथा–

व्यध् = विध्यते यज् = इज्यते

- खन्, जन्, तन् धातुओं में 'न' को विकल्प से आ हो जाता है। यथा–

खन् = खन्यते / खायते जन् = जयन्ते / जायते तन् तन्यते / तायते

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य बनाना

- कर्मवाच्य के कर्ता में प्रयुक्त तृतीया विभक्ति को हटाकर इसके स्थान पर प्रथमा विभक्ति लगा दी जाती है।
- कर्मवाच्य के कर्म में प्रयुक्त प्रथमा विभक्ति को कर्तृवाच्य में द्वितीया विभक्ति में बदल दिया जाता है।
- कर्मवाच्य की क्रिया को साधारण क्रिया में बदलकर कर्तृवाच्य में किया जाता है।
- कर्मवाच्य में प्रयुक्त 'क्त' प्रत्यय वाली क्रिया को कर्तृवाच्य में 'क्तवतु' प्रत्यय में बदल दिया जाता है।
- कर्मवाच्य में प्रयुक्त 'तव्यत्' प्रत्यय वाली क्रिया को कर्तृवाच्य में लिङ्ग लकार में बदल दिया जाता है।

कर्मवाच्यम्	**कर्तृवाच्यम्**
देवैः गीतानि गीयन्ते।	देवाः गीतानि गायन्ति।
पुत्रेण पिता सेव्यते।	पुत्रः पितरं सेवते।
त्वया किं क्रियते।	त्वं किं करोषि।

वह फल खाता है।
कर्तृवाच्य. सः फलानि खादति।
कर्मवाच्य तेन फलानि खाते हो।

तुम भोजन खाते हो।
कर्तृ त्वं भोजनं खादसि।
कर्म. त्वया भोजनं खाद्यते

मैं दूध पीता हूँ।
कर्तृ. अहं दुग्धं पिबामि।
कर्म. मया दुग्धं पीयते

वह दो पत्र लिखती है।
कर्तृ. सा पत्रे लिखति
कर्म तया पत्रे लिख्येते।

रमा माला गुँथती है।
कर्तृ. रमा मालां गुम्फति।
कर्म रमया माला गुम्फ्यते।

दो बाल गाँ जाते हैं।
कर्तृ. बालकौ ग्रामं गच्छतः
कर्म बालकाभ्यं ग्रामं गम्यते।

सीता दो पाठ पढती है।
सीता पाठौ पठति।
सीतया पाठौ पठ्येते।

Digital Learning Classes

समृद्धि दूध जीती है।
समृद्धि दुग्धं पिबति।
समृद्ध्या दुग्धं पीयते।

अमित जयपुर जाता है।
अमितः जयपुरं गच्छति।
अमितेन जयपुरः गम्यते।

अर्षिया दो फल खाती है।
अर्षिया फले खादति।
अषियया फले खाद्येते

कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना

- कर्तृवाच्य में प्रयुक्त प्रथमा विभक्ति के कर्ता को भाववाच्य में तृतीया विभक्ति में बदल दिया जाता है।
- कर्तृवाच्य में प्रयुक्त क्रिया के स्थान पर भाववाच्य में कर्मवाच्य की भांति क्रिया बनाई जाती है। भाववाच्य की क्रिया सदैव प्रथम पुरूष एकवचन में ही रहती है।

कर्तृवाच्यम्	भाववाच्यम्
शिशुः स्पपिति।	शिशुना सुप्यते।
कन्याः हसन्ति।	कन्याभि हस्यते।
पुष्पाणि विकसन्ति।	पुष्पैः विकस्यते।

भाववाच्य से कर्तृवाच्य बनाना

- भाववाच्य में प्रयुक्त कर्ता की तृतीया विभक्ति को कर्तृवाच्य में प्रथमा विभक्ति को बदल दिया जाता है।
- भाववाच्य की क्रिया को कर्तृवाच्य की साधारण क्रिया में बदल दिया जाता है।

कर्तृवाच्यम्	भाववाच्यम्
बालकेन क्रीड्यते	बालकः क्रीडति।
वानरैः कूर्धते।	वानराः कूर्दन्ति।
मयूरैः नृत्यते।	मयूराः नृत्यन्ति।

Digital Learning Classes

14. समास प्रकरण

सम् + अस् + घञ् = समासः

परस्पर सम्बद्ध अर्थ वाले (समर्थ) दो या दो से अधिक पदों को मिलाकर जब एक पद बनाया जाता है तो इस वृत्ति को समास–वृत्ति कहा जाता है। इस प्रक्रिया द्वारा बने हुए पद को समस्त पद कहा जाता है।

समस्त पद बनाने की विधि

समस्त पद बनने पर पदों का परस्पर सम्बन्ध बताने वाली बीच की विभक्तियों का लोप हो जाता है तथा केवल अंतिम पद में ही प्रकरण के अनुसार विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे – राज्ञः पुरुषः = राजपुरूषः = राजपुरूषः। यहाँ पर समस्त पद 'राजपुरूषः' में राज्ञः की विभक्ति का लोप करके केवल राज (न्) शब्द का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार 'रामः च लक्ष्मणः च' में प्रथमा विभक्ति हटाकर समस्त पद रामलक्ष्मणौ बनता हैं।

जब समस्त पद के सभी पदों को पुनः पृथक् करके विभक्ति आदि पूर्ववत् लगा दिया जाये तो उसे विग्रह करना कहा जाता है। जैसे राजपुरूषः का विग्रह होगा – राज्ञः पुरूषः, रामलक्ष्मणौ का विग्रह होगा – रामः च लक्ष्मण च!

समास के भेद

'द्वन्द्वोऽस्मिद्विगुरपि च, ग्रहे च मे सततमव्ययीभावः
तत्पुरूषः कर्मधारय, येनाहं स्यां बहुब्रीहिः'

समास के 5 भेद होते हैं –

1. केवल समास
2. अव्ययीभाव
3. तत्पुरूष (अ) कर्मधारय (ब) द्विगु
4. बहुब्रीहि
5. द्वन्द्व समास

केवल समास अप्रायोगिक है जो विशेष नाम से रहित है। इसमें प्रायः विभक्ति का लोप नहीं होता। जैसे जीमूतस्य इव = जीमूतस्येव, वागर्थो इव = वागर्थाविव, पूर्व भूतः = भूतपूर्वः इत्यादि।

1. अव्ययीभाव समास

'प्रायेणपूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावो द्वितीयः'

इस समास में पूर्व पद का अर्थ प्रधान होता है। दोनों पदों में पूर्व प्रायः अव्यय होता है और उत्तर पद संज्ञा। समस्त पद भी अव्यय बन जाता हैं तथा वह **नपुंसकलिंग एकवचन** में प्रयुक्त होता है।

समस्त पद बनाने के नियम

(क) संज्ञा के अंतिम दीर्घ स्वर को ह्रस्व हो जाता है। जैसे – गोपाः तस्मिन् = अधिगोपम्, वध्वाः समीपम् = उपवधू।

(ख) नकारान्त शब्द के 'न्' का लोप हो जाता है। जैसे – राज्ञः समीपम् = उपराजम्।

(ग) नदी, पौर्णमासी, आग्रहायणी तथा गिरि शब्दों के अंतिम स्वर का विकल्प से 'अ' हो जाता है। जैसे :– नद्याः समीपम् = उपनदि, उपनदम्ः, पौर्णमास्याः समीपम् = उपपौर्णमासि, उपपौर्णमासम्ः, आग्रहायण्याः समीपम् = उपाग्रहायणि, उपाग्रहायणमः गिरेः समीपम् = उपगिरि, उपगिरम्।

(घ) कुछ हलन्त शब्दों के अंतिम व्यंजन में विकल्प से 'अ' जोड़ दिया जाता है। जैसे – समाधिः, समीपम् = उपसमित्ः उपसमिधम्। चर्मणः समीपम् = उपचर्म, उपचर्मम्।

(ङ) कुछ हलन्त शब्दों के अंतिम व्यंजन में नित्य रूप में 'अ' जोड़ दिया जाता है। जैसे – शरदः समीपम् = उपशरदम् अक्ष्णः योग्यम् = समक्षम् इत्यादि।

अव्ययीभाव समास में प्रयुक्त अव्यवों का निम्नलिखित अर्थो में समास होता हैं –

1. '**विभक्ति**' के अर्थ में = (सप्तमी विभक्ति के अर्थ में अधि अव्यय का प्रयोग होता है।)
   हरौ इति = अधिहरि (हरि में)
   आत्मनि इति = अध्यात्मम् (आत्मा में)
   वैकुण्ठे इति = अधिवैकुण्ठम् (वैकुण्ठ में)
   गंगायाम् इति = अधिगंगम् (गंगा में)

2. **'समीप'** अर्थ में **'उप'** अव्यय का प्रयोग होता है – हरौ इति
गंगायाः समीपम् = उपगंगम् (गंगा के समीप)
यमुनायाः समीपम् = उपयमुनम् (यमुना के समीप)
गुरोः समीपम् = उपगुरु (गुरु के समीप)
3. **'समृद्धि'** के अर्थ में **'सु'** अव्यय का प्रयोग होता है –
पाञ्चालानाम् समृद्धिः = सुपाञ्चालम् (पाञ्चाल देश का ऐश्वर्य)
मद्राणां समृद्धिः = समुद्रम् (मद्रदेशवासियों का ऐश्वर्य)
4. **'व्यर्द्धि'** के अर्थ में **'दुर्'** अव्यय का प्रयोग होता है –
यवनानां व्यर्द्धिः = दुर्यवनम् (यवनों की दुर्गति)
5. **'अभाव'** अर्थ में **'निर्'** अव्यय का प्रयोग होता है।
जनानाम् अभावः = निर्जनम् (सुनसान)
विघ्नानाम् अभावः = निर्विघ्नम् (बाधा–रहित)
मनुष्याणाम् अभावः = निर्मनुष्यम् (मनुष्य–रहित)
मक्षिकाणाम् अभावः = निर्मक्षिकाणाम् (मक्खियों रहित)
6. **'अव्यय'** (नाश) अर्थ में **'अति'** के साथ समास होता है –
यौवनस्य अत्ययः = अतियौवनम् (जवानी का बीतना)
हिमस्य अत्ययः अतिहिमम् (हिम की समाप्ति)
7. **'असम्प्रति'** (अनौचित्य) के अर्थ में भी **'अति'** के साथ समास होता है –
निद्रा सम्प्रति न युज्यते = अतिनिद्रम् (निद्रा का अनौचित्य)
पठनम् सम्प्रति न युज्यते = अतिपठनम् (पठन का अनौचित्य)
8. **'शब्दप्रादुभार्व'** अर्थ में **'इति'** के सा समास होता है –
हरिशब्दस्य प्रकाशः = इतिहरिः
भारतशब्दस्य प्रकाशः = इतिभारतम्
9. **'पश्चात्'** अर्थ में **'अनु'** के साथ समास होता है –
विष्णोः पश्चात् = अनुविष्णु (विष्णु के पीछे)
गंगायाः पश्चात् = अनुगंगम् (गंगा के पीछे)
10. **'योग्यता'** अर्थ में **'अनु'** के साथ समास होता है –
रूपस्य योग्यम् = अनुरूपम् (रूप के योग्य)
गुणानां योग्यम् = अनुगुणम् (गुणों के योग्य)
11. **'वीप्सा'** (दोहराना) अर्थ में **'प्रति'** अव्यय का संज्ञा शब्दों से समास होता है –
अर्थम् अर्थम् प्रति = प्रत्यर्थम् (हर अर्थ)
एकम् एकम् प्रति = प्रत्येकम् (हर एक)
गृहम् गृहम् प्रति = प्रतिगृहम् (हर घर)
12. **'अनतिक्रम्य'** (अतिक्रमण का उल्लंघन न करने) के अर्थ में **'यथा'** अव्यय के साथ दो शब्दों का समास होता है –
इच्छाम् अनतिक्रम्य = यथेच्छम् (इच्छानुसार)
शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार)
शास्त्रम् अनतिक्रम्य = यथाशास्त्रम् (शास्त्र के अनुसार)
13. **'आनुपूर्व्य'** (क्रम) अर्थ में **'अनु'** अव्यय का समास होता है –
ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण = आनुज्येष्ठम् (ज्येष्ठ के क्रम में)
कनिष्ठमस्य आनुपूर्व्येण = आनुकनिष्ठम् (कनिष्ठ के क्रम में)
14. **'सादृश्य'** (समानता) में **'सह'** (स) का समास होता है –
हरेः सादृश्यम् = सह+हरि = सहरि
सख्याः सादृश्यम् = सह+सखि = ससखि
15. **'यौगपद्य'** (युगपद् या एक साथ होना) अर्थ में **'सह'** अव्यय का समास होता है –
चक्रेण युगपद् = सचक्रम् (चक्र के साथ)

Digital Learning Classes

16. **'सादृशः'** (समान) अर्थ में **'सह'** अव्यय का समास होता है –
 संख्या सादृश : = ससखि
17. **'सम्प्रति'** के अर्थ में भी **'सह'** अव्यय का समास होता है –
 क्षत्राणां सम्प्रतिः = सक्षत्रम् (क्षात्र सम्पदा)
 ब्रह्माणा सम्प्रतिः = सब्रह्म (ब्रह्म सम्पदा)
18. **'साकल्प'** (सम्पूर्णता) अर्थ में भी **'सह'** अव्यय का समास होता है –
 तृणम् अपि अपरित्यज्य = सतृणम् (तिनको–समेत)
 बुसम् अपि अपरित्यज्य = सबुसम् (फूस–समेत)
19. **'अन्त'** (पर्यन्त) के अर्थ में भी **'सह'** अव्यय के साथ समास होता है –
 अग्निग्रन्थपर्यन्तम् अधीते = साग्नि ('अग्नि' के अध्याय तक)

नोट :– यदि पूर्वपद संख्यावाची हो, उत्तर पद संज्ञावाची हो तो द्विगु समास होता है। परंतु पूर्वपद संख्यावाची तथा उत्तरपद में किसी नदी विशेष का नाम हो तो **नदीभिश्च सूत्र** से अव्ययीभाव समास होता है।

जैसे – पञ्चगङ्गम् (पञ्चानां गङ्गानां समाहारः)

द्वियमुनम् (द्वयोः यमुनयोः समाहारः)

2. तत्पुरुष समास

(प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानास्तत्पुरुषस्तृतीयः)

जिस समास में उत्तर पद का अर्थ प्रधान होता है वह **तत्पुरुष समास** कहलाता है। जैसे – राज्ञः गृहम् = राजगृहम् में अर्थ में दृष्टि से गृहम् (अर्थात् घर) प्रधान है अतः 'राजगृहम्' तत्पुरुष समास का उदाहरण है।

तत्पुरुष के भेद

1. विभक्ति तत्पुरुष
2. अलुक् तत्पुरुष
3. प्रादि तत्पुरुष
4. गति तत्पुरुष
5. उपपद तत्पुरुष
6. नञ् तत्पुरुष

इन भेदों के अतिरिक्त कर्मधारय तथा द्विगु समास भी तत्पुरुष के ही भेद हैं क्योंकि इनमें भी उत्तर पद का अर्थ प्रधान होता है।

1. विभक्ति तत्पुरुष

इसे सामान्य तत्पुरुष भी कहते हैं। विभक्ति तत्पुरुष में समस्त पद के पूर्व पद की द्वितीया से लेकर सप्तमी तक की किसी न किसी विभक्ति का लोप हो जाता है–

(क) द्वितीया तत्पुरुष – इस समास का उत्तर पद **श्रितः, अतीतः, पतितः, गतः, अत्यस्यः, प्राप्तः, आपत्रः, गमी तथा बुभुक्षुः** आदि से कोई एक होता है। जैसे –

राम आश्रितः = रामाश्रितः (राम का आश्रय लेने वाला)

दुःखम् अतीतः = दुःखातीतः (दुःखों से परे गया वाला)

नरकं पतितः = नरकपतितः (नरक में गिरा हुआ)

शोकं पतितः = शोकपतितः (शोक में पड़ा हुआ)

गृहं गतः = गृहगतः (घर पहुँचा हुआ)

(ख) तृतीया तत्पुरुष – तृतीयान्त पूर्व पद का पूर्व, **सदृश, सम, ऊन, ऊनार्थक शब्द, श्लक्ष्ण, मिश्र, कलह**, अर्थ इत्यादि के साथ तथा कृदन्त पदों के साथ समास होता है। जैसे – मासेन पूर्वः = मासपूर्वः (एक महीना पहले)

शाङ्कुलया खण्डः = शाङ्कुलाखण्डः

नखैः भिन्नः = नखभिन्नः

धान्येन अर्थः = धान्यार्थः

मात्रा सदृशः = मातृसदृशः (माता के समान)

पित्रा समः = पितृसमः (पिता के समान)

पादेन ऊनः = पादोनः (पौना 3/4)

माषेण विकलः = माषविकलः (एक मासा कम)

दध्ना ओदनः = दध्योदनः (दही–भात)

गुडेन मिश्रः = गुडमिश्रः (गुड मिला हुआ)

मासेन अवरः = मासावरः (महीना छोटा)

Digital Learning Classes

(ग) चतुर्थी तत्पुरुष :– चतुर्थी विभक्ति वाले शब्दों का तदर्थ, अर्थ, बलि, लोभ, हित, सुख, रक्षित आदि शब्दों के साथ समास होता है।

यूपाय दारुः = यूपदारुः

भूतेभ्यः बलिः = भूतबलिः (भूतों के लिए अन्न)

धनाय लोभः = धनलोभम् (धन के लिए लोभ)

गोभ्यः हितम् = गोहितम् (गाय के लिए हितकर)

पाकाय शाला = पाकशाला (पकाने के लिए घर)

भिक्षायै अटनम् = भिक्षाटनम् (भिक्षा के लिए घूमना)

(घ) पंचमी तत्पुरुष :– पंचमी विभक्त्यन्त शब्दों का **भय वाचक शब्दों के साथ तथा अपेत, अपोढ़, मुक्त, च्युत, पति, अपत्रस्त** के साथ समास होता है –

दूरात् आगतः = दूरादागतः

स्तोकात् मुक्तः = स्तोकान्मुक्तः

विद्यायाः विहीनः = विद्याविहीनः

चौराद् भयम् = चौरभयम् (चोर के डर)

वृकाद् भीतिः = वृकभीतिः (भेड़िये से घर)

व्याघ्राद् भीत = व्याघ्रभीत (व्याघ्र से डरा हुआ)

सुखाद् अपेतः = सुखापेतः (सुख से वंचित)

कल्पनायाः अपोढः = कल्पनापोढ = (कल्पनाशून्य, विचारहीन, मूर्ख)

(ङ) षष्ठी तत्पुरुष :– षष्ठी विभक्त्यन्त पूर्व पद का उत्तर पद के साथ समास होता है –

विद्यायाः आलय = विद्यालयः

रत्नानाम् आकरः = रत्नाकरः

राज्ञः पुत्रः = राजपुत्रः (राजा का पुत्र)

राज्ञः पुरुषः (राजा का पुरुष)

ब्राह्मणानां याजकः = ब्राह्मणयाजकः (ब्राह्मणों की पूजा करने वाला)

देवानां पूजकः = देवपूजकः (देवताओं की पूजा करने वाला)

वेदानाम् अध्यापकः = वेदाध्यापकः (वेदों का शिक्षक)

(च) सप्तमी तत्पुरुष :– **शौण्ड, धूर्त, कितव, प्रवीण, संवती, अन्तर, अधि, पटु, पण्डित, कुशल, चपल, निपुण, सिद्ध, शुष्क, पक्व, बंध** – ये शब्द सप्तमी विभक्ति वाले शब्दों के पश्चात् आयें तो सप्तमी तत्पुरुष होता है–

अक्षेषु शौण्डः = अक्षशौण्डः (जुएं में कुशल)

अक्षेषु धूर्तः = अक्षधूर्तः (जुएँ में धूर्त)

द्यूते कितवः = द्यूतकितवः (जुएँ में धूर्त)

कार्ये प्रवीणः = कार्यप्रवीणः (काम में प्रवीण)

पुष्पे संवीतः = पुष्पसंवीतः (फूल में लगा हुआ)

मध्ये अन्तरः = मध्यान्तरः (मध्य में अवकाश)

कार्ये पटुः = कार्यपटुः (कार्य में पटु)

न्याये पण्डितः = न्यायपण्डितः (न्याय शास्त्र में पण्डित)

कार्य कुशलः = कार्यकुशलः (काम में कुशल)

कर्मणि कुशलः = कर्मकुशलः

प्रादि तत्पुरुष

जिस समस्त पद का पूर्व भाग उपसर्ग (आदि) हो, तो प्रादि तत्पुरुष कहते हैं। जैसे –

कुत्सितः पुरुषः = कुपुरुषः (निन्दित मनुष्य)

प्रगतः आचार्यः = प्राचार्यः (मुख्य आचार्य)

संगतः अध्वानम् = संगध्व (रास्ते का साथी)

प्रकृष्टः वातः = प्रवातः (तेज हवा)

Digital Learning Classes

गति तत्पुरुष

कुछ शब्दों के अनन्तर क्त्वा, ल्यप् प्रत्ययान्त रूप आने पर जो तत्पुरुष समान होता है, उसे गति तत्पुरुष कहते हैं। जैसे –

सत् कृत्वा = सत्कृत्य (सत्कार करके)

तिरः कृत्वा = तिरस्कृत्य (सामने करके)

पुरः कृत्वा = पुरस्कृत्य (सामने करके)

ऊरी कृत्वा = ऊरीकृत्य (स्वीकार करके)

आगे के उदाहरणों में विकल्प से यह समास होता है।

जैसे – मनसि कृत्वा = मनसिकृत्य, मनसि कृत्वा (स्वीकार करके)

साक्षात् कृत्वा = साक्षात्कृत्य, साक्षात् कृत्वा (प्रत्यक्ष करके) प्रत्यय के साथ ही सह समान होता है।

जैसे – अशुक्ल शुक्ल = शुक्लीकृत्य (जो सफेद नहीं था उसे सफेद बनाकर)

अस्व स्वं कृत्वा = स्वीकृत्य (जो अपना नहीं था उसे अपना बनाकर)

उपपद तत्पुरूष

जब समास में उत्तर पद क्रिया का बना हुआ हो तो वहाँ उपपद तत्पुरूष होता है। यह उत्तर पद तिङ्न्त का रुप नहीं होता। क्रिया से बने इस पद का सुबन्त उपपद से समास होता है। जैसे –

कुम्भं करोति इति = कुम्भकारः (घड़ा बनाने वाला, कुम्हार)

सामं गायति इति = सामगः (सामवेद के मंत्र गाने वाला)

जलं ददाति इति = जलदः (बादल)

उदकं हरति इति = उदकहारः (जल लाने वाला, कहार)

नञ् तत्पुरुष

निषेध अर्थ को बताने के लिए नञ् शब्द का किसी भी शब्द के साथ समास होता है। यदि उत्तर पद का प्रथम वर्ण स्वर हो तो 'नञ्' का अन् हो जाता है, किंतु यदि उत्तर पद का प्रथम वर्ण व्यंजन हो तो 'नञ्' का अन् हो जाता है, किंतु यदि उत्तर पद का प्रथम वर्ण व्यंजन हो तो नञ् 'अ' हो जाता हैं। जैसे –

न आदि = अनादि

न अन्तम् = अनन्तम्

न उपस्थितः = अनुपस्थितः

न ऋतम् = अनृतम्

न एकः = अनेकः

न सत्यम् = असत्यम्

न विद्या = अविद्या

Digital Learning Classes

कर्मधारय समास

(विशेष्येण विशेषणं बहुलम्)

विशेष्य से विशेषण की बहुलता होती है, वह कर्मधारण समास कहलाता है।

(तत्पुरुषभेदः कर्मधारयः)

जिस समास में विशेषण–विशेष्य अथवा उपमान–उपमेय का एक साथ प्रयोग हो, वह कर्मधारय समास होता हैं। प्रायः दोनों पदों में प्रथमा विभक्ति होती है।

भूषिता च सा कन्या = भूषितकन्या

सुन्दरी च सा नारी = सुन्दरनारी

महान् च असौ ऋषिः = महर्षिः

महान् च असौ जनः = महाजनः

नीलम् उत्पलम् = नीलोत्पलम्

कृष्णः च असौ सर्पः = कृष्णसर्पः

देवपूजकः ब्राह्मणः = देवब्राह्मणः

शाकप्रियः पार्थिवः = शाकपार्थिवः

प्रधानः आचार्यः = प्रधानाचार्यः

नवनीतम् इव कोमलम् = नवनीतकोमलम्
धनः इव श्यामः = घनश्यामः
मुख चन्द्रः इव = मुखचन्द्रः
मुखम् एवं चन्द्रः = मुखचन्द्रः

द्विगु समास

सूत्र – संख्यापूर्वो द्विगुः

यदि कर्मधारय समास पूर्व पद संख्यावाची शब्द हो तो वह द्विगु समास कहलाता है। द्विगु प्रायः नपुंसक होता है किन्तु अकारान्त द्विगु समास स्त्रीलिंग होता है तथा अकारान्त द्विगु विकल्प से स्त्रीलिंग होता है। इसके स्त्रीलिंग होने पर अन्त में ई लगता है।

अष्टानाम् अध्यायानां समाहार = अष्टाध्यायी
शतानां अब्दानां समाहार = शताब्दी
सप्तानां शतानां समाहार = सप्तशती
सप्तानाम् अह्नां समाहारः = सप्ताहः
पञ्चानां वटानां समाहारः = पञ्चवटी
पञ्चानां पात्राणां समाहारः = पञ्चपात्रम्
पञ्चानां तन्त्राणां समाहारः = पञ्चतन्त्रम्
त्रयाणां भुवनानां समाहारः = त्रिभुवनम्
त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी

बहुब्रीहि समाज

''प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुब्रीहिश्चतुर्थः''

सूत्र – अनेकमन्यपदार्थे बहुब्रीहि
(अनेकं प्रथमान्तमन्यस्य पदस्यार्थे वर्तमानं वा समस्यते सः बहुब्रीहि)
सूत्र – सप्तमी विशेषणे बहुब्रीहौ
सूत्र – हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्

जिस समास में न तो पूर्व पद का अर्थ अभीष्ट होता है न उत्तर पद का अर्थ अभीष्ट होता है अपितु कोई अन्य पद ही अभीष्ट होता है, उसे **बहुब्रीहि समास** कहते हैं। बहुब्रीहि समास में दो या अधिक संज्ञा पद होते हैं तथा पदों का समास होने के उपरान्त समास पद से किसी अन्य ही संज्ञा का बोध होता है।

बहुब्रीहि समास व कर्मधारय समास के भेद – कर्मधारय समास में प्रथम शब्द दूसरे शब्द का विशेषण होता है जबकि बहुब्रीहि समास में दोनों शब्द मिलाकर (अर्थात् समस्त पद) किसी तीसरे शब्द के विशेषण हो जाते हैं। **पीताम्बरम्** में कर्मधारय समास है, इसमें पीतम् शब्द अम्बरम् का विशेषण है। **पीताम्बरः** में पीतम् व अम्बरम् दोनों विष्णु के विशेषण हैं अतः यह बहुब्रीहि समास है।

Digital Learning Classes

जलजे इव अक्षिणी यस्या सा	=	जलजाक्षी
प्रपतितानि पर्णानि यस्मात् सः	=	प्रपर्णः
चित्राः गावः यस्य सः	=	चित्रगुः
लम्बौ कर्णौ यस्य सः	=	लम्बकर्णः
दश आननानि यस्य सः	=	दशाननः
पिनाकं पाणौ यस्य सः	=	पिनाकपाणिः
पीतम् अम्बरं यस्य सः	=	पीताम्बरः
प्रियं सर्पिः यस्य सः	=	प्रियसर्पिष्कः
निर्गतं भयं यस्मात् सः	=	निर्गतभयः (पुरुषः)
उद्धतः ओदनः यस्याः सा	=	उद्धतौदना (स्थाली)
शुभम् आननम् यस्याः सा	=	शुभानना (स्त्री)
महान् आशयः यस्यः सः	=	महाशयः (पुरुषः)
महान् अनुभावः यस्य सः	=	महानुभावः (पुरुषः)
प्राप्तम् उदकं यम् असौ	=	प्राप्तोदक (ग्रामः)
जितानि इन्द्रियाणि येन सः	=	जितेन्द्रियः (पुरुषः)

ऊढः रथः येन असौ	=	ऊढरथः (अनड्वान्)
पराजिताः अरयः येन सः	=	पराजितारि (नृप)
उपहृतः पशुः यस्मै सः	=	उपहतपशुः (रूद्रः)

द्वन्द्व समाज

(प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः पञ्चमः)

सूत्र – चार्थे द्वन्द्वः

(अनेकं सुबन्तं चार्थे वर्तमानं वा समस्यते, स द्वन्द्व समुच्चय)

जिस समास में पूर्व पद तथा उत्तर पद दोनों पदों की प्रधनता होती है, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं।

(क) इतरेतर द्वन्द्व– इस समास के अन्तर्गत सभी पद प्रधान होते हैं तथा अपना अस्तित्व बनाये रखते हैं। समस्त पद के अन्त में संख्या के अनुसार वचन होता है। जैसे –

रामश्च लक्ष्मणश्च	=	रामलक्ष्मणौ
माता च पिता च	=	मातपितरौः
सीता च रामः च	=	सीतारामौ
पार्वती च परमेश्वरः च	=	पार्वतोपरमेश्वरौ
पत्रं च पुष्पं च फलं च	=	पत्रपुष्पफलानि
धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्च	=	धर्मार्थकाममोक्षज्ञः

(ख) समाहार द्वन्द्व– इसमें प्रत्येक पद की प्रधानता नहीं होती अपितु उससे एक सामूहिक अर्थ प्रकट होता है। यह समास सदा एकवचन नपुंसकलिंग में होता है। जैसे –

पाणी च पादौ च एषां समाहार	=	पाणिपादम्
सर्पश्च नकुलश्च अनयोः समाहार	=	सर्पनकुलम्
त्वक् च स्त्रक् च अनयोः समाहार	=	त्वकस्त्रञ्वम्
चरश्च अचरश्च अनयोः समाहारः	=	चराचरम्

(ग) एकशेष द्वन्द्व– जहाँ द्वन्द्व समास में केवल एक ही पद शेष रहे वहाँ पर एकशेष द्वन्द्व होता है। जैसे –

माता च पिता च	=	पितरौ
भ्राता च भगिनी (अथवा स्वसा) च	=	भ्रातरौ
श्वश्रूश्च श्वशुरश्च	=	श्वशुरौ
पुत्रश्च पुत्री (दुहिता) च	=	पुत्रौ

विशेष : द्वन्द्व समास के निम्नलिखित उदाहरणों में समस्त पदों की रचना में सामान्य नहीं लगते, अपितु कुछ विशेष नियम रहते हैं –

द्वौ च दश च	=	द्वादश
द्वौ च विंशतिश्च	=	द्वाविंशतिः
अष्टौ च विंशतिश्च	=	अष्टाविंशतिः

महत्त्वपूर्ण उदाहरण

शब्द	लौकिक विग्रह	समास
भूतपूर्वः	पूर्व भूतः	केवल समासः
नैकधा	न एकधा	केवल समासः
अदृष्टपर्वः	पूर्वम् अदृष्टः	केवल समासः
वागर्थाविव	वागर्थो इव	केवल समासः
अधिहरि	हरौ इति	अव्ययीभाव समासः
अध्याग्नि	अग्नौ इति	अव्ययीभाव समासः
अधिविष्णु	विष्णौ इति	अव्ययीभाव समासः
उपकृष्णम्	कृष्णस्य समीपम्	अव्ययीभाव समासः
उपकण्ठम्	कण्ठस्य समीपम्	अव्ययीभाव समासः
सुमद्रम्	मद्राणां समृद्धिः	अव्ययीभाव समासः

Digital Learning Classes

सुभारतम्	भारस्य समृद्धि	अव्ययीभाव समासः
निर्मक्षिकम्	मक्षिकाणाम् अभावः	अव्ययीभाव समासः
निष्क्रियम्	क्रियाणाम् अभावः	अव्ययीभाव समासः
अतिशीतम्	शीतस्य अत्ययः	अव्ययीभाव समासः
अतिपुष्पम्	पुष्पाणाम् अत्ययः	अव्ययीभाव समासः
अतिरोदनम्	रोदनम् सम्प्रति न युज्यते	अव्ययीभाव समासः
अतिनिद्रम	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	अव्ययीभाव समासः
अतिपठनम्	पठनम् सम्प्रति न युज्यते	अव्ययीभाव समासः
इतिकृष्णम्	कृष्ण शब्दस्य प्रादुर्भावः	अव्ययीभाव समासः
इतिहरिः	हरि शब्दस्य प्रादुर्भावः	अव्ययीभाव समासः
अनुविष्णु	विष्णोः पश्यात्	अव्ययीभाव समासः
अनुगंगम्	गंगायाः पश्चात्	अव्ययीभाव समासः
सहरि	हरेः सादृश्ययम्	अव्ययीभाव समासः
सविष्णु	विष्णोः सादृश्यम्	अव्ययीभाव समासः
सजन्म	जन्मना युगपद्	अव्ययीभाव समासः
सपरिवारम्	परिवारेण युगपद्	अव्ययीभाव समासः
सचक्रम्	चक्रेण युगपद्	अव्ययीभाव समासः
अनुकनिष्ठम्	कनिष्ठस्यानुपूर्व्येण	अव्ययीभाव समासः
अनुबालकम्	बालकस्यानुपूर्व्येण	अव्ययीभाव समासः
अनुच्येष्ठम	ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण	अव्ययीभाव समासः
प्रतिदिनम्	दिनं दिनं प्रति	अव्ययीभाव समासः
प्रतिदेशम्	देशं देशं प्रति	अव्ययीभाव समासः
प्रत्यक्षम्	अक्षरं अक्षरं प्रति	अव्ययीभाव समासः
अनुरूपम्	रूपस्य योग्यम्	अव्ययीभाव समासः
अनुपुण्यम्	पुण्यस्य योग्यम्	अव्ययीभाव समासः
अनुगुणम्	गुणस्य योग्यम्	अव्ययीभाव समासः
अनुकूलम्	कुलस्य योग्यम्	अव्ययीभाव समासः
कृष्णाश्रितः	कृष्णं आश्रितः	द्वितिया तत्पुरूष समास
दुःखातीतः	दुःखं अतीतः	द्वितिया तत्पुरूष समास
दुःखापन्नः	दुःखं आपन्नः	द्वितिया तत्पुरूष समास
ग्रामगतः	ग्रामं गतः	द्वितिया तत्पुरूष समास
सुखप्राप्तः	सुखं प्राप्तः	द्वितिया तत्पुरूष समास
नरकपतितः	नरकं पतितः	द्वितिया तत्पुरूष समास
शंकुलाखण्ड	शंकुलया खण्डः	तृतीया तत्पुरूष समास
हरित्रातः	हरिणा त्रातः	तृतीया तत्पुरूष समास
नखभिन्नः	नखैः भिन्नः	तृतीया तत्पुरूष समास
लोभाविष्टः	लोभेन आविष्टः	तृतीया तत्पुरूष समास
भूतबलिः	भूतेभ्यो बलिः	चतुर्थी तत्पुरूष
यूपदारू	यूपाय दारू	चतुर्थी तत्पुरूष
गोहितम्	गोभ्यः हितम्	चतुर्थी तत्पुरूष
भिक्षाटनम्	भिक्षायै अटनम्	चतुर्थी तत्पुरूष
रोगमुक्तः	रोगात् मुक्तः	पंचमी तत्पुरूष
दूरादगतः	दूरात् आगतः	पंचमी तत्पुरूष
वृक्षपतितः	वृक्षात् प्रतितः	पंचमी तत्पुरूष
स्तोकान्मुक्त	स्तोकात् मुक्तः	पंचमी तत्पुरूष
राजपुरूषः	राज्ञः पुरूषः	षष्ठी तत्पुरूष

Digital Learning Classes

विद्यालयः	विद्यायाः आलयः	षष्ठी तत्पुरूष
राष्ट्रपतिः	राष्ट्रस्य पतिः	षष्ठी तत्पुरूष
राजदन्तः	दन्तानां राजा	षष्ठी तत्पुरूष
अपरकायः	अपंर कायस्य	षष्ठी तत्पुरूष
रणवीरः	रणे वीरः	सप्तमी तत्पुरूष
वनवासः	वने वासः	सप्तमी तत्पुरूष
सभापण्डितः	सभायां पण्डितः	सप्तमी तत्पुरूष
अक्षशौण्डः	अक्षेषु शौण्डः	सप्तमी तत्पुरूष
अक्षकौशलः	अक्षेषु कौशलः	सप्तमी तत्पुरूष
महर्षिः	महान् च असौ ऋषिः	कर्मधारय समास
कृष्णसर्पः	कृष्णः चासौ सर्पः	कर्मधारय समास
धीरपुरूषः	धीरः चासौ पुरूषः	कर्मधारय समास
पीताम्बरम्	पीतम् च तत् अम्बरम्	कर्मधारय समास
महेशः	महान् चासौ ईशः	कर्मधारय समास
महात्मा	महान् चासौ आत्मा	कर्मधारय समास
कुपुरूषः	कुत्सितः पुरूषः	कर्मधारय समास
घनश्यामः	घन इव श्यामः	कर्मधारय समास
परमराजः	परमः चासौ राजा	कर्मधारय समास
करकमलम्	करौ कमलम् इव	कर्मधारय समास
सप्तर्षिः	सप्तानां ऋषीणां समाहारः	द्विगु तत्पुरूष
शतकम्	शतस्य समाहारः	द्विगु तत्पुरूष
त्रिभुवनम्	त्रयाणां भुवनानां समाहारः	द्विगु तत्पुरूष
त्रिलोकी	त्रणायां लोकानां समाहारः	द्विगु तत्पुरूष
चतुष्पदी	चतुर्णां पदानां समाहारः	द्विगु तत्पुरूष
पञ्चपात्रम्	पञ्चानां पात्राणं समाहारः	द्विगु तत्पुरूष
अशुभम्	न शुभम्	नञ् तत्पुरूष समास
अपुत्रः	न पुत्रः	नञ् तत्पुरूष समास
असत्यम्	न सत्यम्	नञ् तत्पुरूष समास
अहितम्	न हितम्	नञ् तत्पुरूष समास
अमित्रम्	न मित्रम्	नञ् तत्पुरूष समास
अज्ञानम्	न ज्ञानम्	नञ् तत्पुरूष समास
अनश्वरः	न नश्वरः	नञ् तत्पुरूष समास
नास्तिकः	न आस्तिकः	नञ् तत्पुरूष समास
अनृतम्	न ऋतम्	नञ् तत्पुरूष समास
प्राचार्यः	प्रगतः आचार्यः	प्रादि तत्पुरूष समास
सुजनः	शोभनःजनः	प्रादि तत्पुरूष समास
दुर्जनः	दुष्टःजनः	प्रादि तत्पुरूष समास
निश्चिन्तः	निर्गतः चिन्तायाः	प्रादि तत्पुरूष समास
विश्वंभरः	विश्वं भरित इति (विष्णु)	अलुक् तत्पुरूष समास/बहुब्रीहि
मृत्युंजयः	जयति इति (शंकर)	अलुक् तत्पुरूष समास/बहुब्रीहि
वसुन्धरा	वसुं धारयति इति (पृथ्वी)	अलुक् तत्पुरूष समास/बहुब्रीहि
धनञ्जयः	धनं जयति इति (शंकर)	अलुक् तत्पुरूष समास/बहुब्रीहि
कुम्भकारः	कुम्भं कराति इति	उपपद तत्पुरूष समास
जलदः	जलं ददाति इति	उपपद तत्पुरूष समास
जलजः	जलं जायते इति	उपपद तत्पुरूष समास
स्वर्णकारः	स्वर्णं करोति इति	उपपद तत्पुरूष समास

Digital Learning Classes

मर्मज्ञः	मर्म जनाति इति	उपपद तत्पुरूष समास
चित्रकारः	चित्रं करोति इति	उपपद तत्पुरूष समास
खगः	खे गच्छति इति	उपपद तत्पुरूष समास
पञ्चदश	पञ्चाधिका दश	लुप्तपद तत्पुरूष समास
अष्टादश	अष्टाधिका दश	लुप्तपद तत्पुरूष समास
शाकपार्थिवः	शाकप्रियः पार्थिवः	लुप्तपद तत्पुरूष समास
गुड्धानाः	गुडमिश्राः धानाः	लुप्तपद तत्पुरूष समास
रामलक्ष्मणौ	रामः च लक्ष्मणः च	इतरेतर द्वन्द्व समास
हरिहरौ	हरिः च हरः च	इतरेतर द्वन्द्व समास
पत्रपुष्पफलानि	पंत्र च पुष्पं च फलं च	इतरेतर द्वन्द्व समास
सुरासुरौ	सुरः च असुरः च	इतरेतर द्वन्द्व समास
कृष्णार्जुनौ	कृष्णः च अर्जुनः च	इतरेतर द्वन्द्व समास
लाभालाभौ	लाभः च अलाभः च	इतरेतर द्वन्द्व समास
द्वादशः	द्वौ च दश च तयोः समाहारः	समाहार द्वन्द्व
चराचरम्	चरः च अचरः च तयोः समाहारः	समाहार द्वन्द्व
हस्तपादम्	हस्तौ च पादौ च तैषां समाहारः	समाहार द्वन्द्व
अहर्निशम्	अहम् च निशा च तयोः समाहारः	समाहार द्वन्द्व
पितरौ	माता च पिता च	एकशेष द्वन्द्व
शूद्रौ	शूद्री च शूद्रः च	एकशेष द्वन्द्व
मयूरौ	मयूरी च मयूरः च	एकशेष द्वन्द्व
चटकौ	चटका च चटकः च	एकशेष द्वन्द्व
शूलपाणिः	शूलं पाणौ यस्य सः	बहुव्रीहि व्यधिकरण
धर्मनिष्ठः	धर्मे निष्ठा यस्य सः	बहुव्रीहि व्यधिकरण
चन्द्रचुडः	चन्द्रः चूडे यस्य सः	बहुव्रीहि व्यधिकरण
जलजाक्षी	जलजे इव अक्षिणी यस्य सः	बहुव्रीहि व्यधिकरण
निर्धनः	निर्गतं धनं यस्ताम् सः	बहुव्रीहि समानाधिकरण
प्राप्तोदकः	प्राप्तं उदकं यं सः	बहुव्रीहि समानाधिकरण
वीरपुरूषः	वीराः पुरूषाः यस्मिन् सः	बहुव्रीहि समानाधिकरण
पीताम्बरः	पीतं अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समानाधिकरण
निर्जनम्	निर्गताः जनाः यस्मात् सः	बहुव्रीहि समानाधिकरण

Digital Learning Classes

15. समास (टैस्ट)

1. का व्युत्पत्तिः समासशब्दस्य खलु?
   (1) सम् + आस् + घञ् (2) स + मस् + घञ्
   (3) सम + अस् + अच् (4) सम् + आस् + क
2. प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानः समासः किं नामा?
   (1) तत्पुरुषः (2) कर्मधारयः
   (3) बहुव्रीहिः (4) अव्ययीभावः
3. उत्तरपदार्थप्रधानता कस्मिन् समासे भवति?
   (1) अव्ययीभावे (2) तत्पुरुषे
   (3) द्वन्द्वे (4) बहुव्रीहौ
4. संख्यापूर्वकः समाहारर्थकः समासः को भवति?
   (1) बहुव्रीहिः (2) द्विगुः
   (3) कर्मधारयः (4) द्वन्द्वः
5. अधिहरि इत्यस्मिन् अव्ययीभावे लौकिकविग्रहः कः?
   (1) हरेः समीपम् (2) हरेः सादृश्यम्
   (3) हरौ इति (4) हरिशब्दस्य प्रकाशः
6. उपराजम् इत्यत्र समासस्य नाम किम्?
   (1) केवलसमासः (2) तत्पुरुषः
   (3) अव्ययीभावः (4) द्वन्द्वः
7. कृष्णस्य समीपम् समासपदमस्ति–
   (1) कृष्णसमीपः (2) उपकृष्णम्
   (3) कृष्णस्य समीपः (4) उपकृष्णः
8. अनुरूपम् इत्यत्र समासोऽस्ति–
   (1) अव्ययीभावः (2) तत्पुरुषः
   (3) बहुव्रीहिः (4) द्विगुः

9. राजपुरुषः इत्यस्य विग्रहपदमस्ति–
(1) राज्ञः पुरुषः (2) राजन् तत्पुरुषः
(3) राज तत्पुरुषः (4) राज्ञा तत्पुरुषः

10. अक्षशौण्डः इत्यत्र समासोऽस्ति–
(1) कर्मधारयः (2) तत्पुरुषः
(3) द्वन्द्वः (4) बहुव्रीहिः

11. यूपदारु पदे समासोऽस्ति–
(1) तत्पुरुषः (2) चतुर्थीतत्पुरुषः
(3) तृतीयातत्पुरुषः (4) द्वितीयातत्पुरुषः

12. भूतबलिः अत्र समासो वर्तते–
(1) कर्मधारयः (2) बहुव्रीहितः
(3) तत्पुरुषः (4) द्विगुः

13. पीताम्बरम् इत्यत्र विग्रहपदमस्ति–
(1) पीतस्य अम्बरम् (2) पीतम् अम्बरं यस्य
(3) पीतेन अम्बरम् (4) पीता अम्बरम्

14. चित्रगुः इत्स्त्र समासस्य नाम किम्?
(1) चित्रा गाव। (2) चित्रा गावो यस्मिन्
(3) चित्रं गोषु यस्य। (4) चित्रा गावो यस्य सः

15. अब्राह्मणः इत्यत्र समासस्य नाम किम्?
(1) कर्मधारयः (2) बहुव्रीहि
(3) तत्पुरुषः (4) नञ् तत्पुरुषः

16. प्राचार्यः इत्यत्र समासोऽस्ति–
(1) कर्मधारयः (2) बहुव्रीहिः
(3) तत्पुरुषः (4) द्विगु

17. कृष्णसर्पः अत्र को भवेत समासः?
(1) तत्पुरुषः (2) द्वन्द्वः
(3) द्विगुः (4) कर्मधारयः

18. धनश्यामः इति पदेऽस्ति समासः–
(1) तत्पुरुषः (2) कर्मधारयः
(3) द्वन्द्वः (4) बहुव्रीहिः

19. त्रयोदश इत्यत्र कः स्यात्समासः?
(1) द्वन्द्वः (2) द्विगुः
(3) बहुव्रीहिः (4) कर्मधारयः

20. महाराजः इत्यत्र कः समासः?
(1) बहुव्रीहिः (2) द्वन्द्वः
(3) तत्पुरुषः (4) कर्मधारयः

21. हरित्रातः अत्र कः समासः?
(1) तृतीयातत्पुरुषः (2) षष्ठी तत्पुरुषः
(3) पंचमीतत्पुरुषः (4) कर्मधारयः

22. नीलोत्पलम् इत्यत्र समासनाम किम्?
(1) द्वन्द्वः (2) तत्पुरुषः
(3) अव्ययीभाव (4) कर्मधारयः

23. दशाननः इत्यत्र कः समासः?
(1) द्विगुः (2) कर्मधारयः
(3) बहुव्रीहिः (4) तत्पुरुषः

24. अष्टाध्यायी इत्यत्र किंनामधेयः समासः?
(1) द्विगुः (2) बहुव्रीहिः
(3) तत्पुरुषः (4) कर्मधारयः

25. इतरेतद्वन्द्वस्योदाहरणं किम्?
(1) मातरौ (2) मातापितरौ
(3) पितृमातरौ (4) पितरौ

26. 'पितरौ' इत्यत्र कः समासः?
(1) एकशेषद्वन्द्व (2) द्विगुः
(3) कर्मधारयः (4) अव्ययीभावः

27. 'प्रियसर्पिष्कः' इत्यत्र कः समास?
(1) बहुव्रीहिः (2) अव्ययीभावः
(3) तत्पुरुषः (4) द्वन्द्वः

28. निम्नलिखित उचित क्रमं योजयत–
(1) धनश्यामः A. तत्पुरुष
(2) प्राचार्यः B. कर्मधारय
(3) लम्बोदरः C. द्वन्द्व
(4) पाणिपादम् D. बहुव्रीहिः

कूट–	1	2	3	4
(1)	A	B	C	D
(2)	B	A	D	C
(3)	B	A	C	D
(4)	C	D	B	A

29. अधस्तनयुग्मानां समीचीनं तालिकां चिनुतः–
(1) सहरि A. तत्पुरुषः
(2) कण्ठेकालः B. द्वन्द्वः
(3) पाणिपादम् C. अव्ययीभावः
(4) अनश्वः D. बहुव्रीहिः

कूट–	1	2	3	4
(1)	A	B	D	C
(2)	C	B	A	D
(3)	B	D	C	A
(4)	C	D	B	A

30. अधस्तनयुग्मानां समीचीनं तालिकां चिनुतः–
(1) कर्मधारयः A. पीताम्बरः
(2) अव्ययीभावः B. त्रिभुवनम्
(3) द्विगुः C. निर्मक्षिकम्
(4) बहुव्रीहिः D. कृष्णसर्पः

कूट–	1	2	3	4
(1)	A	C	B	D
(2)	C	A	D	B
(3)	B	C	D	A
(4)	D	C	B	A

Digital Learning Classes

16. छन्द

छन्द शब्द में **छद् धातु** है जिसका शाब्दिक अर्थ **आवरण अथवा ढकना होता है।** छन्द के जनक **'आचार्य पिङ्गल'** है। आचार्य पिङ्गल की पुस्तक **'छन्दः' सूत्रम्** में छन्द की परिभाषा 'चिदाह्लयाद्जनकं छन्दः' दी गई है अर्थात् मन को प्रसन्न करने वाले कारक को ही छन्द कहते है।

छन्द के दो भेद हैं– **1. वर्णिक छन्द, 2. मात्रिक छन्द।**

1. वर्णिक छन्द – जिन छन्दों की पहचान वर्णो के आधार पर होती है वह वार्णिक छन्द कहलाते है।

2. मात्रिक छन्द– जिस छन्द की पहचान मात्राओं के आधार पर होती है वह मात्रिक छन्द कहलाता है। मात्रिक छन्द एकमात्र 'आर्याछन्द' है।

छन्द में प्रायः तीन बातें प्रमुख होती है। –

1. **पाद/चरण–"ज्ञेयः चतुर्थांशः पादः"**

श्लोक के एक चतुर्थांश को पाद अथवा चरण कहा जाता है। एक श्लोक में चार चरण होते है।

2. **यति– विरामोऽवस्था** यतिः। अर्थात् श्लोक उच्चारण के समय जो विराम किया जाता है अर्थात् श्वास के लिए रूका जाता है उसे यति कहते हैं। यति सूचक शब्दों का प्रयोक छन्द के लक्षण में दिया हुआ होता है। यदि श्लोक में यति सूचक शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है तो पाद के अंत मे यति सूचक शब्द निम्न संख्याओं को निर्धारित करते हैं। जैसे –

यति सूचक शब्द	निर्धारित संख्या
ईश्वर/लोक (संसार)/भुवन	1
पक्ष	2
काल	3
जलधि/वेद/आश्रम/पुरूषार्थ	4
भूत	5
रस (कटु,कषाय, तिक्त, अम्ल, मधुर, लवण)	6
ऋषि/मुनि/लोक/अश्व/अगैः/पर्वत	7
वस/करि/भोगि	8
ग्रह	9
दिक्	10
रूद्र	11
सूय/भास	12

Digital Learning Classes

3. **गण– "त्रिवर्णात्मको गणः "।**

तीन वर्णो के समूह को गण कहते हैं। गणों की संख्या 8 होती है जिनको समझने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है।

"यमाताराजमानसलगाः"

क्रं. सं.	वर्ण	गण	मात्रा
1.	यमाता	यगण	ISS
2.	मातारा	मगण	SSS
3.	ताराज	तगण	SSI
4.	राजभा	रगण	SIS
5.	जभान	जगण	ISI
6.	भानस	भगण	SII
7.	नसल	नगण	III
8.	सलगाः	सगण	IIS

मात्राज्ञान

मात्रा – उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहते हैं। मात्राएँ तीन प्रकार की होती हैं–

1. **लघु मात्रा**– यह ह्रस्व स्वरों (अ इ उ ऋ लृ) लगती है। इसको चिह्नित करने के लिए लम्बवत् रेखा (1) प्रयुक्त होती है।
2. **गुरू मात्रा** – यह मात्रा दीर्घ स्वरों,अनुस्वार युक्त वर्णो युक्त वर्णो तथा संयुक्ताक्षर वर्णो के लगती है। इस मात्रा को चिह्नितकरने के लिए अवग्रह चिह्न (s) प्रयुक्त किया जाता है तथा इस मात्रा का उच्चारण काल लघु मात्रा से दुगुना होता है।

3. प्लुत् मात्रा – यह मात्रा प्लुत् स्वरों के लगती है। इस मात्रा को चिह्वित करने के लिए हिन्दी संख्या (३) का प्रयाग किया जाता है। प्लुत् मात्रा में उच्चारण में लघु मात्रा से तिगुना समय लगता है। उपर्युक्त तीनों मात्राएँ वैदिक काल में प्रायोगिक थी। परन्तु लौकिक काल में प्लुत् मात्रा अप्रायोगिक हैं। अतः छन्दों में लघु व गुरू मात्रा का ही प्रयोग किया जाता है।

वार्णिक छन्द

1. अनुष्टुप् छन्द–

लक्षण –श्लोके षष्ठं गुरूर्ज्ञेयं, सर्वत्र लघुपञ्चमम्।

द्वि चतुष्पादयोर्ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घ मन्ययोः।।

अर्थ– जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 8 वर्ण होते हैं। सम्पूर्ण छन्द की वर्ण संख्या 32 होती है तथा पाद के अंत में यति होती है और जिस छन्द के प्रत्येक चरण में छठा वर्ण गुरू होता है। तथा पांचवाँ वर्ण लघु होता है और पहले तथा तीसरे चरण में 7वां वर्ण गुरू होता है तथा दूसरे व चौथे चरण में 7 वां वर्ण लघु होता है। वह अनुष्टुप् छन्द कहलता है।

। ऽऽ   । ऽ।

तवास्मि गीत रागेण, हारिणा प्रसभंहृतः।

। ऽऽ   । ऽ।

एष राजेव दुष्यन्तः, सारगेणातिरंहसा।।

उपर्युक्त उदाहरण में सभी चरणों में पंचम वर्ण लघु षष्ठम् वर्ण गुरू तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में सप्तम् वर्ण ह्रस्व और प्रथम व तृतीया चरण में सप्तम् वर्ण दीर्घ है। अतः इस उदाहरण में अनुष्टुप् छन्द का लक्षण घटित हो रहा है।

2. इन्द्रवजा छन्द–

लक्षण –"स्यादिन्द्र वज्रा यदि तौ जगौ गः।"

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते है तथा पाद के अंत में यति होती है और जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो तगण, एक जगण और अंत मं दो गुरू वर्ण होते हैं वह इन्द्रवज्रा छन्द कहलाता है।

नोट– 11 वर्ण वाले छन्दों में यदि अंतिम वर्ण गुरू न हो तो इसका गुरू मान लिया जाता है।

जैसे – अर्थो हि कन्या परकीय एव

तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।

जातो ममायं विशदः प्रकामं

प्रत्यार्पितन्यास इवान्तरात्मा

3. उपेन्द्रवज्रा–

लक्षण –"उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततौ गौ"

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं तथा सम्पूर्ण छन्द्र की वर्ण संख्या 44 होती है और पाद के अंत में यति होती है तथा जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण–तगण–जगण और अंत में दो गुरू वर्ण होते हैं वह उपेन्द्रवज्रा छन्द्र कहलाता है।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव

त्वमेव सर्वं मम देव देवः।।

4. उपजाति छन्द – अनन्तरोदीरित लक्ष्मीभाजौ, पादौ यदियावुपजातयस्ता।।

इन्द्रवज्रा व उपेनद्रवज्र छन्दों के मिश्रण को उपजाति छन्द कहते हैं। इस छन्द मे इन्द्रवज्रा व उपेन्द्रवज्रा के मिश्रण का अनुपात समान न होकर असमान भी हो सकता है। अर्थात् इस छन्द में दो चरणों में इन्द्रवज्रा दो उपेन्द्रवज्रा तथा यह अनुपात 1 : 3 और 3 : 1 भी हो सकता है तथा इसी कारण इस छन्द को मिश्रित छन्द के नाम से जाना जाता है। इस छन्द के प्रत्यक चरण में भी 11 वर्ण होते हैं और पाद के अंत में यति होती है।

येषां न विद्या न तपो न दानं

ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।

ते मृत्युलोके भुवि भारभूताः

मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

इस श्लोक में प्रथम तीन पादों में इन्द्रवज्रा छन्द तथा अंतिम पाद में उपेन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण घटित होता है। अतः यहाँ उपजाति छन्द है।

5. वंशस्थ छन्द – जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं तथा सम्पूर्ण छन्द की वर्ण संख्या 48 होती है और पाद के अंत में यति होती है तथा जिसके प्रत्यक चरण में क्रमशः जगण–जगण– नगण–रगण होते हैं वह वंशस्थ छन्द कहलाता है।

उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्

घनोदयः प्राक् तदनन्तरं पयः।

निमित्त नैमित्तिकयोरयं क्रमः

तव प्रसादस्य पुरस्तु सम्पदः।।

6. द्रुतविलम्बित् छन्द – दृतविलम्बितमाह नभौ भरौ।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं तथा सम्पूर्ण छन्द की वर्ण संख्या 48 होती है और पाद के अंत में यति होती है तथा जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण दो भगण–रगण होता हैवह द्रुतविलाम्बित छन्द कहलाता है।

अभिमुखे मयि संहृतमीक्षितम्

हसितमन्यनिमितकथोदयम्।

विनयवारितवृत्तिरतस्तया

न विवृतो मदनो न च संवृतः।।

7. भुजङ्गप्रयात् छन्द– भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः 12 वर्ण होते हैं तथा सम्पूर्ण छन्द की वर्ण संख्या 48 होती है और पाद के अंत में यति होती है तथा जिसके प्रत्येक चरण में क्रमश : चार यगण होते हैं वह भुजङ्गप्रयात छन्द कहलाता है।

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता

न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।

न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव

गतिस्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।

8. वसन्ततिलका छन्द– ज्ञेय उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौगः–

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 14 वर्ण हों। सम्पूर्ण छन्द की वर्ण संख्या 56 होती है तथा पाद के अंत में यति होती है और जिसके प्रत्येक चरण में क्रमश तगण–भगण दो जगण और अंत में दो गुरू वर्ण होते हैं वहाँ वसन्ततिलका छन्द कहलता है।

यात्केकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना

माविष्कृतोऽरूणपुरः सर एकातोऽर्कः।

तेजोद्वस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां

लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।।

9. मालिनी छन्द–

लक्षण– ननमययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं। सम्पूर्ण छन्द की वर्ण संख्या 60 होती है तथा भोगि अर्थात् 8 वें वर्ण पर लोक अर्थात् 7 वें वर्ण पर यति होती है। निष्कर्षतः जिस छन्द के क्रमश 8वें व 7वें वर्ण पर यति होती है तथा जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो नगण–मगण दो यगण होते हैं मालिनी छन्द कहलाता है।

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापिरम्यं

मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।

इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी

किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।

10. शिखरिणी छन्द–

लक्षण–"रसैः रूद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी"।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं तथा सम्पूर्ण की वर्ण संख्या 68 होती है तथा 6वें 11वें वर्ण पर यति होती है और जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः यगण–मगण–सगण–नगण–भगण तथा अंत में एक लघु व एक गुरू वर्ण होते हैं। वह शिखारिणी छन्द कहलाता है।

Digital Learning Classes

अनाघातं पुष्पं किसलयमलूनं कररूहै

रनविद्धं रत्नं मधुनवमनास्वदितरसम्।

अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद् रूपमनघं

न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।

11. मन्दाक्रान्ता छन्द–

लक्षण – मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्भर्भोनतौ ताद् गुरू चेत्।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते है तथा सम्पूर्ण छन्द की वर्ण संख्या 68 होती है और जिसके प्रत्येक पाद 4, 6, 7 वर्णो पर यति होती है तथा जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण – भगण–नगण–तगण–तगण तथा अंत में दो गुरू वर्ण होते हैं वह मन्दाक्रान्ता छन्द कहलाता है।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं

विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिध्यर्निगम्यं

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

12. शर्दूलविक्रीडित् छन्द–

लक्षण– सूर्याश्वर्यदिमः सजौस्ततगाः शर्दूलविक्रीडितम्।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 19 वर्ण होते है तथा सम्पूर्ण छन्द की वर्ण संख्या 76 होती है तथा जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः 12वें व 7वें वर्ण पर यति होती है तथा जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण–सगण–जगण–सगण दो तगण और एक गुरू वर्ण होता है वह शार्दूलविक्रीडित् छन्द कहलाता है।

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति ह्रदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया

कण्ठः स्तम्भितवाष्पृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।

वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः

पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुः खैर्नवैः।

13. स्रग्धरा छन्द – म्रम्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनि यतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 21 वर्ण होते हैं तथा सम्पूण छन्द की वर्ण संख्या 84 होती है तथा जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः 7, 7, 7 वर्णो पर यति होती है तथा जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण–रगण–भगण–नगण–तीन यगण होते है वह स्रग्धरा छन्द कहलाता है।

ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः

पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्।

दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखं भ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा

पश्योदग्रप्लुतत्वाद् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयातिः।।

मात्रिक छन्द

1. आर्याछन्द –

यस्या पादे प्रथमे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पंचदश सऽऽर्या।।

जिस छन्द के प्रथम चरण में 12 मात्रा होती है तथा तृतीय चरण में भी 12 मात्राएँ होती है। द्वितीय चरण में 18 मात्राएँ होती हैं और चतुर्थ चरण में 15 मात्राएँ होती हैं वह आर्या छन्द कहलाता है। इस छन्द में 12 + 18 + 12 + 15 = 57 मात्राएँ होती है। अतः इस छन्द को मात्रिक अथवा जाति छन्द के नाम से भी जाना जाता है।

आपरितोषाद् विदुषां 12

न साधुमन्ये प्रयोग विज्ञानम्। 18

बलवदपि शिक्षिताना 12

मात्मन्यं प्रत्ययं चेतः।।

17. सूक्तयः

- **माता समं नास्ति शरीरपोषणम्।**
  मां के समान शरीर को पुष्टि पहुंचाने वाला दूसरा नहीं है।
- **मानं हि महतां धनम्**
  मान ही बड़े लोगों का धन है। मानजीन अपना सब कुछ खोकर भी मानरक्षा को बड़ी बात समझते हैं।
- **मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता।**
  कम अक्षरों में सार वचन बोलना ही वाग्मिता है।
- **मूर्खस्य नास्त्यौषधम्।**
  मूर्ख की दवा नहीं है।
- **मोक्तिकं न गजे गजे।**
  हर हार्थी में मोती नहीं होता।
- **मौनं सर्वार्थसाधकम्।**
  चुप रहना से सब कामों सिद्ध करता है।
- **यतो धर्मस्ततो जयः।**
  जहां धर्म है वहीं जय होती है।
- **यथा देशः तथा वेशः।**
  जैसा देश वैसा वेश।
- **याचनान्तं हि गौरवम्-याचना माननाशाय।**
  प्रतिष्ठा तभी तक रहती है जब तक मांगता नहीं।
- **यद्यपि शुद्धं लोकविरूद्धं न करणीयम्।**
  यद्यपि शुद्ध है पर लोक विरूद्ध है तो उसे नहीं करना चाहिए।
- **यशः पुण्यं दानेन।**
  योग्य का मिलन योग्य के साथ अच्दा होता है।
- **रत्नं समागच्छतु काञ्चनेन।**
  रत्न सोने में मिलने से शोभा पाता है।
- **राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा?**
  राजा किसी का मित्र हुआ है- किसने कभी देखा या सुना?
- **राजा बन्धुरबन्धुनाम्**
  जिसका कोई बन्धु नहीं उस का बन्धु राजा है।
- **लज्जा स्त्रीभूषणं सदा।**
  लज्जा स्त्रियों के लिए सदा आभूषण है।
- **लोकज्ञस्य समस्तशास्त्रविदुषो धर्मे मर्दिर्दुर्लभा।**
  लोकचातुरी मे निपुण, सब शास्त्र में पंडित की भी बुद्धि धर्म में होना दुलर्भ है।
- **लोभः पापस्य कारणम्।**
  लोभमूलानि पापानि।
  लालच सब पापों की जड़ है।
- **वक्ता श्रोता च यत्रास्ति रमन्ते तत्र सम्पदः।**
  जहां अच्दी बात के कहने और सुनने वाले होते है वहां सब संपदाएँ आकर बसती हैं।
- **वर प्राणत्यागो न पुनधमानामुगमः**
  मरना अच्छा पर अधम मनुष्यों की चापलूसी करना अच्छा नहीं।
- **वरं वासोऽरण्ये न पुनविवेकाधिपपुरे।**
  वन में बसना अच्छा पर अविवेकी राजा के राज्य में बसना अच्छा नहीं।

Digital Learning Classes

- **वसुमत्याः द्विपपाः कलत्रिणः।**
  राजा लोग पृथ्वी से स्त्रीवान् हैं।
- **वाग्भूषणं भूषणम्।**
  वाग्भूषण अर्थात् पाण्डित्य मनुष्य के लिए उत्तम भूषण है।
- **विदेशेषु धनं विद्या।**
  प्रवास में विद्या ही धन है।
- **विद्या गुप्तं धनं स्मृतम्।**
  विद्या सुरक्षित धन है।
- **विद्याधनं सर्वधनंप्रधानम्।**
  विद्या धन सब धनों में प्रधान है।
- **विद्यारत्नं सरसकविता**
  विद्या में रत्न सरस कविता है।
- **विद्याविहीनः पशुः।**
  जिसमें विद्या नहीं वह पशु है।
- **विद्या सर्वस्य भूषणम्।**
  विद्या सब का भूषण है।
- **विनयात् याति पात्रताम्।**
  नम्रता से मनुष्य सुपात्र बन जाता है।
- **विना गोरसं को रसो भोजनानाम्।**
  गोरस (गाय से प्राप्त होने वाले दूध, दही, घी, मक्खन आदि) के बिना भोजन का क्या रस?
- **विपदि हन्त सुधाऽपि विषायते।**
  विपत्ति के समय अमृत भी विष हो जाता है।
- **विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।**
  जिन्हें विवेक नहीं है वे सौ-सौ बार नीचे को गिरते हैं।
- **विश्वासः संपदां मूलम्**
  विश्वास सम्पत्ति का कारण है।
- **वीरभोग्या वसुन्धरा।**
  पृथ्वी का भोग वे ही करहते हैं जो वीर हैं।
- **वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलब्धाः स्वयमेव सम्पदः।**
  विचार कर काम करने वाले को गुण की लोभी सम्पत्तियां स्वयं वरण करती है।
- **वृद्धस्य भार्या करदीपकेव।**
  बूढ़े की भार्या हाथ में दीपक के समान है।
- **व्यसनानन्तरं सौख्यं स्ल्पमप्यधिकं भवेत्।**
  बड़ा दुःख सहने के उपरान्त थोड़ा भी सुख बहुत मालूल होता है।
- **शठे शाठ्यं समाचरेत्।**
  शठ के साथ शठता करे।
- **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।**
  शरीर धर्म का पहला साधन है।
- **शान्तिहीनो तपसे वृथा फलम्।**
  बिना शान्ति के तपस्या व्यर्थ है।
- **शीलं हि विदुषां धनम्।**
  विद्वानों का धन शील ही है।

Digital Learning Classes

- **शुद्ध हि बुद्धिः किल कामधेनुः।**
  शुद्ध (निष्पाप) बुद्धि कामधेनु के समान है।
- **शूरस्य मरणं तृणम्**
  शूर की मृत्यु तिनके की तरह तुच्छ हैं। (शूर मौत को तिनके बराबर मानता है।)
- **संसर्गजाः दोषगुणाः भवन्ति।**
  गुण और दोश आदमील मं संगर्ग से होते है।
- **स तापसो यः परतापकर्षणः**
  वही तपस्वी है जो दूसरे के ताप का दूर कर दे।
- **सत्संगतिः कथन किन्न करोति पुंसाम्।**
  सत्संगति मनुष्य के लिए क्या नहीं कर सकती।
- **स धार्मिको यः परमर्म न स्पृशेत्।**
  वही धर्मात्मा जो दूसरे को मर्म दूःखी न करे।
- **सन्तोषी ब्राह्मणः शुचिः।**
  सन्तोषी ब्राह्मण पवित्र है।
- **समुद्रमंथनाल्लेभे हरिर्लक्ष्मी हरो विषम्।**
  समुद्र मन्थन में विष्णु ने लक्ष्मी पायी और महादेव ने विष अर्थात् उद्यम करने पर भी भाग्यानुकूल फल मिलता है।
- **सर्वं शून्यं दरिद्रस्य।**
  दरिद्र क लिए सब सूना है।
- **सर्वस्य गात्रस्य शिरप्रधानम्।**
  शरीर के सब अंगों में सिर सब में प्रधान है।
- **सर्वांगे दुर्जने विषम्।**
  दुर्जन क सब अंगों में विष भरा है।
- **स पुरुषो यः खिद्यते नेन्द्रियैः।**
  पुरुष वही है जो इन्द्रियों द्वारा पीड़ित न हो।
- **साधवो नहि सर्वत्र।**
  साधुजन सब जगह नहीं मिलते।
- **साम्ना मूर्खं वशे कुर्यात्।**
  मधुर वाणी से मूर्ख को अपने वश में लावे।
- **सिद्धमत्रं परित्यज्य भिक्षामरित दुर्मतिः।**
  ऐसे वचन दुर्लभ हैं जो सबों के मन को प्रसन्नता दें।
- **सुविद्यो जातवंशोऽपि निर्धनः परिहीयते।**
  बड़ा विद्वान अच्छे कुल में उत्पन्न भी निर्धनी हुआ तो सबों से उसकी हार होती है।
- **स्तोत्रं कस्य न तुष्टये**
  स्तुति किसको प्रसन्न नहीं कर देती।
- **स्त्रीग्रहो बलवान् खलु।**
  स्त्रियों का हठ बड़ा कठिन होता है।
- **स्त्रीपुंवच्च प्रभवति गृहे तद्धि गेहं विनष्टम्।**
  जिस घर में स्त्री पुरूष के समान हुई वह घर नष्ट हुआ।
- **स्थितस्य गतिश्चिन्तनीया।**
  जो हो गया उसे छोड़ जो विद्यमान है उस का विचार करे।
- **स्वकार्य मुद्धरेत् प्राज्ञः कार्य्यभ्रंशो हि मूर्खता।**
  बुद्धिमान अपना काम साधे, अपना काम बिगाड़ना मूर्खता है।

Digital Learning Classes

- **स्वयं तीर्त्वा परान् तारयति।**
  स्वयं तैरकर दूसरों को भी पार लगाता है।
- **स्वभावो दुरतिक्रम:।**
  जो जिसका स्वभाव है व उसका उल्लंघन नहीं कर सकता।
- **स्वस्थ: को व न पंडित:।**
  स्वस्थता के समय कौन पंडित नहीं बनता।
- **स्वात्मनां सर्वतो रक्षेत्।**
  अपनी रक्षा सब भांति से करे।
- **हतारूपवती वन्ध्या।**
  रूपवती किन्तु बांझ स्त्री नष्ट हे
- **न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा।**
  वह सभा नहीं जहां बूढ़ न हो।
- **नहि दुष्करमस्तीहं किंचिदध्यवसायिनाम्।**
  प्रयत्न करने वाले के लिए कोई बात दुष्कर नहीं है।
- **नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा:।**
  सोते हुए सिंह के मुख में मृग अपने आप नहीं घुसते।
- **नास्तिको धर्मनिन्दक:।**
  धर्म की निन्दा करने वाला नास्तिक होता है।
- **नास्तिको वेदनिन्दक:।**
  वेदों की निन्दा करने वाला नास्तिक है।
- **नास्तिक्रोधसमो रिपु:।**
  क्रोध के समान कोई शत्रु नहीं है।
- **नीचैर्गच्छतयुपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।**
  मनुष्य के जीवन की दशा वैसी ही ऊँची नीची
- **परदु: खेनापि दु:खिता: विरला:।**
  जो दूसरे के दु:ख से दु:खी होते हैं ऐसे विरले ही होते हैं।
- **परोपकाराय सतां विभूतय:।**
  सज्जनों की संपत्ति परोपकार के लिए है।
- **परोकारार्थमिदं शरीरम्।**
  यह शरीर दूसरे के उपकार के लिए है।
- **पात्रत्वात् धनमाप्नोति।**
  योग्यता से धन की प्राप्ति होती है।
- **पुत्रोत्सवे माद्यति को न हर्षात्।**
  पुत्र के जन्मोत्सव में कौन आनंद में मतवाला नहीं हो जाता।
- **प्रतिभाश्च पश्यन्ति सर्वं प्रज्ञावन्त: धिया।**
  बुद्धिमान अपनी सूक्ष्मबुद्धि के बल से सब बात देख लेते हैं।
- **प्रमाणिं परमं श्रुति।**
  वेद सबअसे बढ़कर प्रमाण है।
- **प्राणव्ययेनापि कृतोपकारा: खला: परं वैरमिवाद्वहन्ति।**
  खल के साथ कितना ही उपकरा करो यहां तक कि उसके लिए प्राण तक दे डालो तब भी वैर ही करेगा।
- **प्राणेभ्योपि हि वीराणां प्रिया शत्रुप्रतिक्रिया**
  वीरों को प्राण से अधिक प्यारा शत्रु से बदला चुकाना है।

- **प्राप्ते तु षोड्शे वर्षे गर्दभ्यूप्यप्सरायते।**
  16 वर्ष के होने पर तो गधी भी अपने आप को अप्सारा समझती है।
- **प्राप्तकालो न जीवति।**
  जिसका समय आ पहुंचा है वह नहीं जीता।
- **प्रायोग गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः।**
  बहुधा भाग्यहीन जहां आते हैं विपत्तियाँ भी वहां आ जाती है।
- **फलं भाग्यानुसारतः।**
  फल भाग्य के अनुसार मिलता है।
- **बलं मूर्खस्य मौनत्वम्।**
  चुप रहना मूर्ख के लिए बल है।
- **बहुरत्ना वसुन्धरा।**
  पृथ्वी बहुत रत्नों वाली है।
- **बुद्धिः कर्मानुसारिणी।**
  बुद्धि कर्म के अनुसार होती है जैसा कर्म करोगे वैसी बुद्धि होगी।
- **बुद्धिर्यस्य बलं तस्य।**
  जिसके बुद्धि होती है उसी में बल रहता है।
- **बुभुक्षितः किं न करोति पापम्।**
  भूखा मरता हुआ कौन सा पाप नहीं करता?
  'मरता क्या न करता'
- **भवितव्यता बलवती।**
  होनहार बलवान् है।
- **भार्यामित्रं गृहेषु च।**
  घर में मित्र भार्या होती है।
- **भुजंग एवं जानाति भुजंग चरणौ सखे।**
  सांप के पांव को सांप ही जानता है।
- **मद्यपाः किं न जल्पन्ति।**
  शराबी क्या नहीं बकते?
- **मधुरापि हि मूर्छयते विषविरपि समाश्रिता वल्ली।**
  विष के पड़ पर चढ़ी मीठी लता भी मूर्च्छित करने वाली हो जाती है।
- **मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न सुखम्।**
  मनस्वी और जो अपना काम साधना चाहते हैं वे दुःख सुख को कुछ नहीं गिनते।
- **मनोऽनुवृत्तिं प्रभोः कुर्यात्।**
  मालिक के मन के अनुसार चलें।
- **महान् महत्येव करोति विक्रमम्।**
  बड़े महान् पर ही अपना बल प्रकट करता है।
- **अकुलीनोऽपि शास्त्रज्ञो दैवतैरपि पूज्यते। (हितोपदेश)**
  नीच कुल वाला श्री शास्त्र जानता हो तो देवताओं द्वारा भी पूजा जाता है।
- **अक्षरशून्यो हि अन्धो भवति।**
  "निरक्षर (मूर्ख) अन्धा होता है।"
- **अगाधजलसंचारी रोहितः नैव गर्वितः।**
  अगाध जल में तैरने वाली रोहू (मछली) घमण्ड नहीं करती।
- **अंगार शतधौतने मलिनत्वं ज मुञ्चति।**
  कोयला सैकड़ों बार धोने पर भी मलिनता नहीं छोड़ता। (कोइला होय न ऊपरी सौमन साबुन लगाय)

V2 Digital Learning Classes

- **अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति।**
  पुण्यात्मा जिस बात को स्वीकार करते हैं उसे निभाते है।
- **अजीर्णे हि अमृतं वारि, जीर्णे वारि बलप्रदम्।**
  अजीर्ण में जल अमृत के समान होता है और भोजन के पचने पर बल देता है।
- **अज्ञात कस्य नामेह नोपहासाय जायते।**
  मुर्खता पर किसे हंसी नही आती।
- **अज्ञातकुलशीलस्य वासो न देयः।**
  जिस का कुल और शील मालूम नहीं हो उसको अपने घर में नहीं टिकाना चाहिए।
- **अनभ्यासे विषं शास्त्रम्।**
  अभ्यास न करने पर शास्त्र विष के तूल्य है। (काला अक्षर भैंस बराबर)
- **अभ्याससारिणी विद्या**
  विद्या अभ्यास से आती है।
- **अर्द्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।**
  घड़ा आधा भरा हो तो अवश्य छलकता है। (अधजल गगरी छलकत जाए।)
- **अल्पानामपि वस्तुनां सहितः कार्यसाधिका।**
  छोटे लोगों का एकजूट होना भी काम साध लेता है। (एकता में बल है।)
- **अविद्याजीवनं शून्यम्।**
  बिना विद्या के जीवन सूना है।
- **असांधु साधुना जयेत्।**
  असाधु को साधुता दिखलाकर अपने वश में करें। दुष्ट को सज्जनता से जीते।
- **आज्ञां गुरूणां ह्यविचारणीया।**
  बड़े लोगों की आज्ञा बिना सोचे विचारे माननी चाहिए।
- **आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः।**
  जो अपनी तरह सब प्राणियों से देखता है वही पंडित है।
- **आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।**
  जो अपने प्रतिकूल हो, वैसा आचारण दूसरों के प्रति न करे।
- **आहारो हि मनुष्याणां जन्मना सह जायते।**
  आहार मनुष्यों के जन्म के साथ ही पैदा हो जाता है।
- **एको हि दाषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्क।**
  गुणों के समूह में एक दोष उसी प्रकार छुप जाता है जैसे चन्द्रमा की किरणों में उसका कलंक।
- **कर्मणो गहना गतिः।**
  काम की गति कठिन है।
- **कलौ वेदान्तिनो भान्ति फाल्गुने बालकाः इव।**
  फाल्गुन में बालकों के समान कलि युग में वेदान्ती सुशोभित होते हैं।
- **कष्टादपि कष्टतरं परगृहवासः परात्रं च।**
  कष्ट से भी बड़ा कष्ट दूसरे के घर में निवास एवं दूसरे का अन्न खाना है।
- **कुरूपता शीलतया विरायते कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते।**
  कुरूपता सदाचरण से सुशोभित होती है, फटा वस्त्र उज्जवलता से सुन्दर लगता है।
- **कुपुत्रें जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति।**
  पुत्र कुपुत्र उत्पन्न हो सकता है पर मां कभी कुमाता नहीं होती।
- **कोऽतिभारः समर्थानाम्?**
  समर्थ जनों के लिए क्या अधिक भार हैं?

- **क्रोधः पापस्य कारणम्।**
  क्रोधः पाप का कारण होता है।
- **क्षमा तुल्यं तपो नास्ति।**
  क्षमा के बराबर तप नहीं है।
- **क्षारं पिबति पयोधेर्वर्षत्यम्भोधरो मधुरमम्बुः।**
  बादल समुद्र का खारा पानी पीते हैं पर मीठा पानी बरसाते है।
- **गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः।**
  लोग अन्धपरम्परा (भेड़चाल) पर चलने वाले होते है असलियत पर नहीं जाते।
- **गतेऽपि वयसे ग्राह्य विद्या सर्वात्मना बुधैः।**
  बूढ़ा हो जाने पर भी विद्या सब भांति उपार्जना करता रहे।
- **गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिंग न च वयः।**
  गुणियों में गुण ही पूजा का कारण है न कि लिङ्ग या आयु।
- **घृतकुम्भ समा नारी तप्तांगारसमः पुमान्।**
  स्त्री घी के घड़े के समान है और पुरूष तपे अंगार के समान।
- **चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च।**
  सुख और दुःख चक्र के समान परिवर्तनशील है।
- **चौराणामनृतं बलम्।**
  चोरों के लिए झूठ ही बल है।
- **चौरे गते व किमु सावधानम्?**
  चोर जब चोरी कर चले गए तो फिर सावधानी से क्या?
- **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।**
  जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं।
- **जपतो नास्ति पातकम्।**
  जप करते हुए पाप नहीं लगता।
- **जातस्य हि ध्रुवों मृत्युः।**
  जो पैदा हुआ है, वह अवश्य मरेगा।
- **जामाता दशमो ग्रहः।**
  दामाद दसवां ग्रह हैं।
- **जीवो जीवस्य भोजनम्।**
  जीव, जीव का भोजन है।
- **ज्ञानं भारः क्रियां विना।**
  बिना आचरण के ज्ञान बोझ मात्र है।
- **ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः।**
  ज्ञान से रहित पशुओं के समान है।
- **झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः।**
  विज्ञा जन जल्दी ही दूसरे का आशय जान लेते हैं।
- **तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते श्रुतेन शीलेन कुलने कर्मणा।**
  आदमी चार बातों से परखा जाता है विद्या, शील, कुल और काम से।
- **तस्करस्य कुतो धर्म**
  चोर का क्या धर्म?
- **तृष्णा न जीर्णा व्यमेव जीर्णाः।**
  तृषा बूढ़ी नहीं होती, हम ही बूढ़े होते हैं।

- **त्जयेत् क्रोधमुखी भार्याम्।**
  क्रोधी पत्नी का त्याग करना चाहिए।
- **दन्तभंगो हि नागानां श्लाघ्यो गिरिविदारणे।**
  पहाड़ के तोड़ने में हाथी के दांत का टूट जाना भी तारीफ की बात है।
- **दरिद्रता धीरतया विराजते।**
  दरिद्रता धीरता से शोभित होती है।
- **दुर्बलस्य बलं राजा।**
  दुर्बल (बलहीन) का बल राजा होता है।
- **दुष्टजनं दूरत: प्रणमेत्।**
  दुष्ट आदमी का दूर से प्रमाण करना चाहिए।
- **दैवस्य विचित्रा गति:**
  दैव की गति विचित्र है।
- **धिक् कलत्रम् अपुत्रकम्।**
  ऐसी भार्या किस काम की जो बांण हो।
- **न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वहिन्ना गृहे?**
  घर में जब आग लग गई तब कुआं खोदना कैसा?
- **न च क्रोधसमो रिपु:।**
  क्रोध न समान शुत्र नहीं
- **न च धर्मो दयापर।**
  दया के बढ़कर धर्म नहीं
- **न च ज्ञानात् परं चक्षु:।**
  ज्ञान से बढ़कर कोई नेत्र नहीं है।
- **न धर्मात् परं मित्रम्।**
  न धर्मसृदशं मित्रम्।
  धर्म के समान मित्र नहीं।
- **न भूतो न भविष्यति।**
  न हुआ है न होगा।
- **नाराणां नापितो धूर्त:।**
  मनुष्यों में नाई धूर्त होता है।
- **श्व: कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम्।।**
  कल के कार्य को आज करें तथा शाम के कार्य को सुबह करें।
- **सत्य ब्रूयात प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात सत्यमप्रियम्।**
  सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए। कभी भी अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए।
- **मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि सुखी जन:।**
  मित्र के साथ कलह करके कोई व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं हो सकता।
- **अयं निज: परो वेति गणना लघुचेतसाम्।**
  उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।
  यह मेरा है, यह तुम्हारा है- ऐसा चिन्तन तो संकीर्ण बुद्धिवालों का है। उदार चरित वालों के लिए तो पूरी पृथ्वी ही परिवार की तरह है।
- **विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।**
  विद्याधन सभी धनों में श्रेष्ठ धन है।
- **विद्याविहीन: पशु:।**
  विद्या से विहीन व्यक्ति पशु ही होता है।

Digital Learning Classes

- **वाग्भूषणं भूषणम्।**
  वाणी का भूषण ही सबसे श्रेष्ठ भूषण है।
- **सत्यमेव जयते नानृतम्।**
  सत्य की ही जीत होती है, झूठ की नहीं।
- **न हि सत्यात् परो धर्मः।**
  सत्य की ही जीत होती है, झूठ की नहीं।
- **तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।**
  हमेशा प्रिय ही बोलना चाहिए बोलने में किस बात की गरीबी।
- **नमन्ति फलिनो वृक्षाः नमन्ति गुणिनोः जनाः।**
  शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन।।
  फलों वाले वृक्ष ही झुकते हैं तथा गुणों से युक्त व्यक्ति ही झुकते हैं। सूखे पेड़ और मूर्ख व्यक्ति कभी नहीं झुकते।
- **अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।**
  चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्।।
  वृद्धो की नित्य सेवा करने वाले तथा उनका अभिवादन करने वाले के आयु, विद्या, यश और बल-ये चारों बढ़ते है।
- **काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।**
  व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।
  बुद्धिमान लोगों का समय काव्यशास्त्र की बातों में गुजरता है। जबकि मूर्ख व्यक्तिों का समय व्यसन, निद्रा या कलह से गुजरता है।
- **आत्मदुर्व्यवहारस्य फलं भवति दुःखदम्।**
  तस्मात् सद्व्यहर्तव्यं मानवेन सुखैषिणा।
  अपने दुर्व्यवहार का फल भी दुःखदायी होता है। अतः सुख प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को हमेशा अच्छा व्यवहार करना चाहिए।
- **व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा।**
  व्यवहार से मित्र और शत्रु बनते है।
- **स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते।**
  राजा अपने देश में ही पूजा जाता है, जबकि विद्वान सभी जगह पूजा जाता है।
- **हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।**
  श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम्।।
  हाथ का आभूषण दान है, कण्ठ का आभूषण सत्य बोलना है तथा कानों का आभूषण शास्त्र है। अन्य आभूषणों से क्या?
- **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।**
  सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुखभाग्भवेत्।।
  सुभी सुखी होवें, सभी नीरोगी होवें तथा सभी का कल्याण हो। किसी को भी दुःख की प्रान्ति नहीं हो।
- **वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च।**
  अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।।
  प्रयास करके अपने आचरण की रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता है एवं चला जाता है। धन चले जाने पर तो कुछ भी नष्ट नहीं होता। आचरण से ही व्यक्ति वास्तव में मर ही जाता है।
- **आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।**
  स्वयं के प्रतिकूल कभी दूसरों के साथ आचरित न करे।
- **परोपकाराय सतां विभूतयः।**
  सज्जन परोपकार के लिए ही होते हैं।
- **परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।**
  परोपकारः पुण्य तथा परपीड़न पाप देने वाला होता है।

- **उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।**
  न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशनित मुखे मृगाः।।
  काम करने से ही कार्यो की सिद्धि होती है, केवल मनोरथ से नहीं। साते हुए सिंह के मुख में कोई पशु (मृग) प्रवेश नहीं करता।
- **आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिषुः।**
  शरीर में स्थित आलस्य ही मनुष्यों का सबसे बड़ा शत्रु है।
- **गुणो गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति।**
  गुणों को जानने वालों के लिए गुण गुण होते है।
- **गुणाः सर्वत्र पूज्यते।**
  गुणों की सभी जगह पूजा होती है।
- **साहित्य-सङ्गीत-कलाविहीनः, साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।**
  साहित्य, संगीत और कला से रहित व्यक्ति, पूंछ और सीगों से हीन साक्षात् पशु होता है।
- **लुब्धस्य प्रणश्यति यशः।**
  लोभी की कीर्ति नष्ट हो जाती है।
- **पुण्यैः यशो लभते।**
  पुण्यों से ही यश की प्राप्ति होती है।
- **सन्तः समसज्जनदुर्जनानां वचः श्रुत्वा मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।**
  सज्जन और दुर्जनों की समयवाणी को सुनकर सन्त व्यक्ति मधुर सूक्तियों को सर्जन करते है।
- **स्त्रियां रोचमानायां सर्वं तद् रोचते कुलम्।**
  स्त्री की सुन्दरता ही परिवार की सुन्दरता है।
- **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।**
  शरीर धर्म का प्राथमिक साधन है।
- **न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्।**
  रत्न ढुंढ़ता नहीं है, खोजा जाता है।
- **प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता।**
  प्रिय व्यक्ति को सुन्दर लगना सौभाग्य का फल है।
- **पुराणमित्येव न साधु सर्वम्।**
  कोई बात पुरानी मात्र होने से सही नहीं होती।
- **रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।**
  रिक्त व्यक्ति लघु होता है। पूर्णता गौरव के लिए होती है।
- **सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।**
  सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।।
  सत्य से ही पृथ्वी धारण कराती है, सत्य से ही सूर्य तपता है,
  सत्य से ही वायु बहती हे, सब कुछ सत्य में ही प्रतिष्ठिता है।
- **बहुरत्ना वसुन्धरा।**
  यह पृथ्वी अनेक रत्नों से युक्त है।
- **धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च।**
  आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।।
  धन धान्य मे प्रयोग में, विद्या के संग्रह में, भोजन में तथा व्यवहार में लज्जा से दूर रहने वाला व्यक्ति हमेशा सुखी रहता है।
- **विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।**
  अपण्डितों का चुप रहना ही आभूषण है।
- **मूर्खो हि शोभते तावद् यावत् किञ्चिन भाषते।।**
  मूर्ख तभी तक सुशोभित होता है, जब तक कि वह कुछ नहीं बोलता।

Digital Learning Classes

- **गुणेष्वेव हि कर्त्तव्यं प्रयत्नः पुरुषैः सदा।**
  मनुष्य को हमेशा गुणों में ही प्रयत्न करना चाहिए।
- **संसर्गजाः दोषगुणाः भवन्ति।**
  संसर्ग से ही दोष एवं गुण उत्पन्न होती हैं।
- **क्रोधो हि शत्रुः प्रथमो नराणाम्।**
  मुनष्यों का प्रथम शत्रु क्रोध ही है।
- **संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।**
  बड़े लोग सम्पत्ति और विपत्ति दोनों में समान रहते है।
- **अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।**
  आधा घड़ा आवाज करता है।
- **अहिंसा परमो धर्मः।**
  अहिंसा सबसे श्रेष्ठ धर्म है।
- **आज्ञा गुरुणाम् अविचारणीया।**
  गुरुजनों की आज्ञा बिना विचारें मान लेनी चाहिए।
- **ज्ञानं भारः क्रियां विना।**
  क्रिया के बिना ज्ञान भारस्वरूप है।
- **बुद्धिर्यस्य बलं तस्य, निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्।**
  जिसके पास बुद्धि है, उसी के पास बल है। बुद्धिहीन के लिए तो कोई बल नहीं।
- **संघे शक्तिः कलौ युगे।**
  कलियुगः में संघ में ही शक्ति है।
- **महाजनों येन गतः स पन्थाः।**
  जिस मार्ग से बड़े लोग चले, वो ही अच्छा मार्ग है।
- **सर्वे गुणाः काक्रचनमाश्रयन्ति।**
  सारे गुण धन को आश्रित करके ही होते है।
- **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।**
  माता और जन्मभूमि स्वर्ग से बढ़कर है।
- **धर्मो रक्षति रक्षितः।**
  बचाया हुआ धर्म ही रक्षा करता है।
- **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।**
  जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं।
- **पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्।**
  सापों को दूध पिलाना, जहर को बढ़ाना ही है।
- **छिद्रेष्वनर्थाः बहुली भवन्ति।**
  छेदों में अनके अनर्थ होते है।
- **हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।**
  हितकारी एवं मनोहारी वचन काफी दुर्लभ है।
- **न निश्चितार्थाद् विरमन्ति धीराः।**
  धैर्यशील व्यक्ति अपने प्रयोजन से दूर नहीं होते।
- **कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।**
  कुपुत्र हो सकता है, लेकिन कुमाता कहीं पर भी नहीं होती।
- **क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति।**
  कमजोर व्यक्ति ही दयाहीन होते हैं।
- **दुर्बलस्य बलं राजा।**
  दुर्बल का बल राजा होता है।

Digital Learning Classes

शिक्षण विधियाँ

Unit - 1

* संस्कृत शिक्षण विधियाँ *

1. शिक्षण विधियां
2. भाषा कौशल
3. शिक्षण सिद्धांत,
4. सहायक साधन
5. मूल्यांकन

1. **शिक्षण विधि** :– शिक्षक विषय वस्तु के प्रस्ततीकरण के समय जिन साधनों उपागमों का प्रयोग करता है, वे साधन ही शिक्षण विधियाँ होती है।

* जिससे छात्र के **तीन** उद्देश्य पूर्ण होते हैं।

1. पाठ्यक्रम पूर्ति
2. विषयवस्तु के प्रति रूचि
3. अनुशासन का प्रभाव

इन तीनों उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए शिक्षक अनेक शिक्षण विधियों का प्रयोग करता है जिनके काल (समय) की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जाता है।

1. परम्परागत शिक्षण विधियाँ
2. आधुनिक शिक्षण विधियाँ

1. **परम्परागत शिक्षण विधियां** : – प्राचीन काल से जिन शिक्षण विधियों का प्रयोग वर्तमान में भी उसी रूप में किया जा रहा हैं। अर्थात् जो शिक्षण विधियाँ प्राचीनकाल से एक परम्परा के रूप में चली आ रही है।

वे परम्परागत शिक्षण विधियां कहलाती है। जिनमें **गुरुकुल विधि, व्याकरण अनुवाद विधि**, और **पाठ्यपुस्तक विधि प्रमुख** है।

(i) **गुरुकुल विधि** :– **इसे पाठशाला विधि तथा पाण्डित्य विधि के नाम** से भी जाना जाता है। इस विधि के अनुसार बालक एक निश्चित आयु में **उपनयन संस्कार (यज्ञोपवित)** सम्पन्न करके गुरुकुल का **अन्तेवासि** बनाया जाता है तथा वह बालक गुरुकुल में रहकर ही **12 वर्ष तक सम्पूर्ण वेदाध्ययन** सम्पन्न करता हैं।

इस विधि के अनुसार नियमित रूप से बालक शिक्षण कार्य से पूर्व सदैव **आचमन क्रिया (प्रार्थना सभा)** सम्पन्न करता है।

इस विधि के अनुसार **गुरुप्रवचन (आदर्शवचन) को सन्धान** (मेल) तथा **विद्या प्राप्ति को संधि (परिवर्तन)** नाम से जाना जाता था।

गुरुप्रवचन → सन्धान (मेल)

विद्या प्राप्ति → सन्धि (परिवर्तन)

इस विधि के अनुसार छात्र गुरुकुल में गुरु का ही अनुसरण करता है स्वयं किसी प्रकार का कोई निर्णय नहीं लेता है। इस विधि से छात्र कर्त्तव्य, संस्कार, दायित्व तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण के नियम सीखता है।

विद्यालयि शिक्षा शिक्षण के अन्त में आशीर्वादात्मक क्रिया सम्पन्न की जाती है।

विद्यालय शिक्षण के उद्देश्य :–

1. भारतीय संस्कृति का संरक्षण करना।
2. आदर्श विद्वानों का निर्माण करना।
3. शास्त्रार्थ (वाद–विवाद) का परिचय प्रदान करना तथा प्रशिक्षण देना।
4. उच्चारण सामर्थ्य प्रदान करना।
5. मौखिक अभ्यास पर ध्यान करना।
6. स्मरण शक्ति को बढ़ाना।
7. स्वाध्याय के प्रति रुचि जागृत करना।
8. छात्र में आत्मसंयम, तर्क शक्ति, मौलिक चिंतन, अनुशासन आदि गुणों का विकास करना।

Digital Learning Classes

विद्यालय के गुण :-

1. गुरु, शिष्य के संबंध सुदृढ़ होते हैं।
2. छात्र में स्वनिर्णय प्रक्रिया गौण रहकर अनुशासन की प्रक्रिया सक्रीय होती है।
3. छात्र का सर्वांगिण विकास होता हैं।
4. छात्र के मौलिक कर्तव्य, दायित्व, संस्कार व देशभक्ति की भावना विकसित होती है।
5. छात्र की अधिगम क्षमता सक्रीय होती है।
6. छात्र के ज्ञान प्राप्ति केन्द्र का स्थायीकरण होता है।

विद्यालय के दोष :-

1. छात्र में अनुशासन व आत्मसंयम की अधिकता से कुण्ठा उत्पन्न होती है।
2. छात्र स्वक्रियान्वित न होकर अनुसरण का पालन करता है।
3. विद्यालय में छात्र अनुरूप शिक्षा न होकर विषयवस्तु व शिक्षक अनुरूप ही होता है।

2. **व्याकरण अनुवाद/भण्डारकर विधि :-** यह विधि भाषा शिक्षण का अभिन्न अंग है। **इस विधि के प्रवर्तक डॉ. रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर है। एक भाषा को दूसरी भाषा में स्थानान्तरित करना ही अनुवाद कहलाता है।**

इस विधि का प्रयोग करने के लिए व्याकरण ज्ञान सहायक प्रणाली होती है।

भण्डारकर की पुस्तक **संस्कृतमन्दिरान्तः प्रवेशिका में शब्दकोष** प्रणाली प्रयोग में ली गई है।

डॉ. **श्रीराम आप्टे** ने अपनी पुस्तक **अमरकोष** में इसी विधि का प्रवर्धन किया तथा भाषा अनुवाद को एक सरल रूप में विश्लेषित किया है।

भण्डारकर ने अनुवाद के चार चरण (सोपान) निर्धारित किये हैं – जिनमें

1. व्याकरण पाठ :- वाक्य में उपस्थित कर्ता, कर्म, क्रिया का परिचय करवाना।
2. द्वितीय भाषा को पुनः प्रथम भाषा में परिवर्तित करना।
3. शब्दकोष का वर्धन।

उपर्युक्त चारों चरणों के माध्यम से भाषा का अनुवाद सुगम तरीके से सम्पन्न किया जाता है। वह प्रधान भाषा होती है। अर्थात् हिन्दी का संस्कृत भाषा में अनुवाद किया जाता है तथा वहां संस्कृत भाषा प्रधान और हिन्दी भाषा गौंण होती है तथा ऐसी स्थिति में हिन्दी भाषा प्रथम एवं संस्कृत भाषा द्वितीय होती है।

* **अतः प्रथम भाषा गौंण और द्वितीय भाषा प्रधान होती है।**

इस विधि का प्रयोग भाषा शिक्षण के समय शिक्षक एक व्यवस्थित इकाई के रूप में करता है। इस विधि में प्रत्येक पाठ के प्रारम्भ में पाठ में आए हुए व्याकरणित भागों जैसे संधि, समास, प्रत्यय, उपसर्ग इत्यादि का संक्षिप्त विवेचन (विश्लेषण) किया जाता है तथा भाषा का वर्गीकरण करके उसे सरल रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

इस अनुवाद प्रक्रिया में सभी नियमों का प्रयोग न करके आवश्यक पदों का परिचय किया जाता है और उन्हीं पदों के नियमों का प्रयोग किया जाता है।

गुण :-

1. यह विधि प्रारम्भिक स्तर के लिए अत्यन्त व उपयोग है।
2. इस विधि में दो भाषाओं के व्याकरण ज्ञान का परिचय होता है।
3. इस विधि से भाषा के गुण और दोषों का अभिज्ञान (परिचय) होता है।
4. यह विधि भाषा शिक्षण का सक्रिय व सरल उपागम (तरीका) है।
5. इस विधि से अल्पसमय में अधिक अभ्यास किया जा सकता है।
6. इस विधि से छात्रों से शब्दकोश वर्धन होता है।

दोष :-

1. इस विधि से भाषा भ्रम उत्पन्न होता है।
2. यह विधि नीरस होती है।
3. इस विधि में साहित्य ज्ञान का अभाव होता है।

Digital Learning Classes

3. **पाठ्यपुस्तक विधि** :– इस विधि के प्रवर्तक **Pr. - वेस्ट (West)** महोदय है।

''पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम से निर्धारित होती है, पाठ्यक्रम छात्र की मानसिक योग्यता से निर्धारित होता है और छात्र की मानसिक योग्यता आयु से निर्धारित होती है।''

पाठ्यपुस्तक की दो विशेषताएं/लक्षण होती है।

(1) आंतरिक विशेषताएं **(2) बाह्य विशेषताएं**

↓

पाठ्यपुस्तक :– 1. उपदेश परक कथाओं से युक्त होती है।

2. रुचिवर्धक होनी चाहिए।
3. ज्ञानवर्धक होनी चाहिए।
4. सरल व सुन्दर होनी चाहिए।
5. मनोरंजनदायक होनी चाहिए।
6. कल्पना शक्ति पोशक होनी चाहिए।
7. शील(चरित्र) निर्माण युक्त होनी चाहिए।

(2) बाह्य विशेषताएं :–

1. पाठ्यपुस्तक का मुखावरण पृष्ठ (Cover page) रुचिवर्धक, आकर्षक और प्रभावशाली होना चाहिए।
2. पाठ्यपुस्तक में नीहित विषयवस्तु का नामकरण ही मुखावरण पृष्ठ पर होना चाहिए।
3. पाठ्यपुस्तक की न्यूनतम कीमत होनी चाहिए।

*** पाठ्यपुस्तक में पाठ का वर्गीकरण** :–

1. प्रारम्भिक स्तर पर पाठ का निर्माण चित्र सहित होना चाहिए।
2. प्रारम्भ में सरल एवं छोटे–छोटे वाक्य होने चाहिए।
3. पाठ अनुच्छेदों (Paragraph) में विभक्त होना चाहिए।
4. पाठ में नवीन कथाओं का समावेश होना चाहिए।
5. नवीन शब्दों का अभ्यास करने के लिए उनकी बार–बार आवृत्ति होनी चाहिए।

*** पाठ्यपुस्तक में नितान्त आवश्यक बातें** :–

1. पाठ में आए हुए नवीन व कठिन शब्दों के अर्थ का विश्लेषण होना चाहिए।
2. पाठ के अंत में कठिन व नवीन शब्दों की व्याकरणात्मक टिप्पणी होनी चाहिए।
3. पठित पाठ के अभ्यास के लिए आवश्यकतानुसार प्रश्नावली होनी चाहिए।
4. पाठ के अन्त में आवश्यकतानुसार शिक्षक सुझाव अथवा निर्देश होने चाहिए।

Digital Learning Classes

विधि :– शिक्षक शिक्षण कार्य के दौरान पाठ्यपुस्तक के अंतर्गत पाठों के शब्दों का अर्थ तथा वाक्यों का अर्थ विस्तृत रूप से बताता है तथापि प्रसंग के अनुसार व्याकरणात्मक ज्ञान का सहयोग प्रणाली के माध्यम से प्रयोग करता है।

तथा पठित अंश को याद रखने के लिए तथा विषयवस्तु का स्थायीकरण करने के लिए **अभ्यास कार्य (कक्षा कार्य व गृह कार्य)** करवाता है तथा इसी पाठ्यपुस्तक के माध्यम से मूल्यांकन सम्पन्न करता है।

गुण :–

1. इस विधि से छात्र में स्वाध्याय क्रिया विकसित होती है।
2. स्वयंपाठी छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।
3. कक्षा में उत्पन्न श्रवण दोष दूर किया जाता है।
4. पाठ्यपुस्तक से छात्र की कल्पना शक्ति, तर्क शक्ति व अधिगम क्षमता विकसित होती है।
5. इस विधि से छात्र का आत्मविश्वास विकसित होता है। क्योंकि पाठ्यपुस्तक से निश्चित पाठ्यक्रम का ज्ञान होता है।

दोष :–

1. इस विधि से छात्र में रटन्त प्रवृत्ति सक्रिय होती है।
2. इस विधि के कारण छात्र में अनुसंधान (Reaserch) की हुई विषयवस्तुओं के प्रति भ्रम उत्पन्न होता है।
3. पाठ्यपुस्तक से शिक्षक के प्रति संशय क्रिया सक्रिय होती है क्योंकि पाठ्यपुस्तक में त्रुटि होना स्वाभाविक क्रिया है।
4. इस विधि में से छात्र अकारण ही विद्यालय त्याग देते है।

* आधुनिक शिक्षण विधियाँ :– 1835 में लॉर्ड मैकाले शिक्षापद्धति के बाद से सक्रिय होने वाली सभी शिक्षण विधियां आधुनिक होती है। जिनमें **वार्तालाप विधि, प्रत्यक्ष विधि, और संयुक्त विधि प्रमुख होती है।**

1. **वार्तालाप विधि** : – लोक व्यवहार में प्रचलित अर्थदान कथन को वार्तालाप कहते है। वार्तालाप को संवाद के नाम से ही जाना जाता है। भाषा शिक्षण में उच्चारण शुद्धता के अभ्यास के लिए तथा अनुपस्थित विषयवस्तु का ज्ञान प्रदान करने के लिए इस विधि का प्रयोग किया जाता है।

इस विधि का प्रयोग करने के लिए शिक्षक को विभिन्न **चार विशेषताओं** का प्रयोग करना होता है।

I. **भाषा शुद्धता** :– वार्तालाप के समय भाषा व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध होनी चाहिए तथा लोक व्यवहार में प्रचलित भाषा का प्रयोग ही होना चाहिए।

II **सुरुचि एवं प्रभाव** :– वार्तालाप के समय शिक्षक द्वारा अस्वीकृत शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए तथा सामाजिक सदाचारों का उल्लंघन नहीं करना चाहिए और देशकाल परिस्थितियों के अनुरूप ही भाषा प्रयोग किया जाना चाहिए।

III **प्रभावोत्पादकता** :– विषय ज्ञान के अतिरिक्त शिक्षक का व्यक्तित्व भी प्रभावशाली होना चाहिए तथा शिक्षक के हाव–भाव व वेशभूषा शोभनीय होनी चाहिए। जिसके छात्र का केन्द्र बिंदु विषयवस्तु न होकर शिक्षक होता है।

IV **वाक् पटुता** :– शिक्षक को सदैव वाणी–चातुर्यता का प्रयोग करना चाहिए। शिक्षण कार्य के दौरान छात्र से किसी प्रकार की बहस नहीं करनी चाहिए और छात्र के संशय का अतिरिक्त समय में समाधान करना चाहिए।

– उपर्युक्त चारों विशेषताओं का प्रयोग करने पर ही शिक्षण कार्य में वार्तालाप, सक्रिय होता है तथा छात्रों में विषयवस्तु का स्थाई ज्ञान प्राप्त होता है जिससे सभी छात्र सक्रिय रहते हैं।

गुण :–

1. इस विधि में भाषा कौशल के दो प्रारम्भिक **चरण (श्रवण व भाषण)** सक्रिय होते है।
2. इस विधि से उच्चारण सामर्थ्यता विकसित होती है।
3. इस विधि से छात्र की अभिव्यक्ति व अभिरुचि सक्रिय होती है।
4. इस विधि से शिक्षक का प्रभुत्व विकसित होता है।

दोष :–

1. इस विधि में छात्र विषयवस्तु के मार्ग से भटक जाते हैं।
2. इस विधि में विषयवस्तु की अपेक्षा व्यावहारिक ज्ञान का प्रस्तुतीकरण होता है।

(2) **प्रत्यक्ष विधि** :– इसे निर्बाध विधि/सुगम/मातृ/प्राकृतिक विधि के नाम से भी जाना जाता है। इसमें भाषा शिक्षण के समय शिक्षक किसी अन्य भाषा का सहायक रूप में प्रयोग नहीं करता है।

अतः इस विधि के अनुसार शिक्षक कार्य के दौरान **अनुवाद का प्रयोग नहीं** किया जाता है।

हिन्दी भाषा को हिन्दी माध्यम में पढ़ाया, संस्कृत भाषा को संस्कृत माध्यम में पढ़ाना, और अंग्रेजी भाषा को अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाना ही प्रत्यक्ष विधि कहलाती है।

निष्कर्ष रूप में इस विधि में भाषा शिक्षक के समय अनुवाद का विरोध होता है इसी कारण यह प्रत्यक्ष विधि, **भण्डारकर की व्याकरण अनुवाद विधि की आलोचनात्मक विधि है।**

इस विधि का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांस में प्रो. गुईन ने फ्रैंच भाषा में किया था तथा **भारत देश में 1934 में Pr. बोकिल ने मुम्बई के अल्फिन्स्टोन विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम आंग्ल (अंग्रेजी) भाषा में किया था।**

तभी से इस विधि का प्रयोग उच्च स्तर पर अत्यन्त सक्रियता से किया जा रहा है।

अतः इस विधि के **प्रवर्तक Pr. बोकिल** है।

गुण :–

1. यह विधि उच्च स्तर के लिए अत्यन्त उपयोगी है।
2. इस विधि से छात्र की कल्पना शक्ति, अवबोधन शक्ति तथा अभिव्यक्ति क्षमता विकसित होती है।
3. इस विधि से उच्चारण स्पष्टता अथवा **धारा प्रवाह** सक्रिय रहती है।
4. इस विधि से अल्प समय में अधिक शिक्षण कार्य संभव है।
5. इस विधि से छात्रों में भाषा के प्रति आत्मविश्वास जागृत होता है तथा रूचि, योग्यता और भाषा की निरन्तरता सक्रिय रहती है।

Digital Learning Classes

दोष :–

1. यह विधि प्रारम्भिक स्तर के लिए अप्रायोगिक है।
2. इस विधि में व्याकरण ज्ञान का प्रभाव रहता है।
3. यह विधि भण्डारकर विधि की विपरीत है।

(3) **संयुक्त विधि** :– यह स्वतंत्र विधि नहीं है। इस विधि का प्रयोग भाषा शिक्षण के समय मिश्रण के रूप में किया जाता है तथा इस विधि में शब्द रूप, धातु रूप, रचना (अनुवाद), व्याकरण, गद्य, पद्य, इन सभी का सम्मिलित रूप में अध्ययन करवाकर सम्पूर्ण संस्कृत का ज्ञान प्रदान किया जाता है।

इस विधि के अनुसार स्तर पर अधिक से अधिक मौखिक कार्य करवाया जाता है और माध्यमिक/उच्च स्तर पर अधिक से अधिक लिखित कार्य करवाया जाता है।

इस विधि के अनुसार भाषा शिक्षण में सभी का मिश्रण करके शिक्षक पाठ्यक्रम (Syllabus) आवश्यकतानुसार उपागम (तरीका) प्रयोग करता है। सामान्यतः यह विधि सभी स्तरों के लिए उपयोग है परंतु प्रारम्भिक स्तर पर इस विधि का प्रयोग भाषा शिक्षण के समय अनिवार्य रूप से किया जाता है।

* **Pr. बोकिल ने इस विधि को नवीन विधि तथा श्रीराम आप्टे ने इस विधि को मनोवैज्ञानिक विधि और हयूपरिकर ने इसे विश्लेषणात्मक विधि के नाम से सम्बोधित किया है।**

सभी विधियों का मिश्रण होने के कारण **इसे समाहार विधि** के नाम से भी जाना जाता है।

अंग्रेजी भाषा में इसे The doctor method के नाम से जाना जाता है।

* भाषा शिक्षण विषयवस्तु के पाँच अंग होते हैं।

1. व्याकरण शिक्षण
2. गद्य शिक्षण
3. पद्य शिक्षण
4. नाट्य शिक्षण
5. अनुवाद शिक्षण

1. व्याकरण शिक्षण :–

व्याकरण शब्द की व्युत्पत्ति :–

वि + आङ् + कृ + ल्युट् = व्याकरणम्

\\/ ↓ ↓

उपसर्ग धातु प्रत्यय

व्याकरण की परिभाषा :–

1. **"व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेनति व्याकरणम्।"** (पाणिनी ने)
   अर्थात् जो शुद्ध शबदों का निर्माण करता है अथवा शुद्ध शब्दों की उत्पत्ति करता है उसे व्याकरण कहते हैं।
2. **"शब्दानुशासनं व्याकरणम्"** (पतञ्जली ने)
   शब्दों के अनुशासित रूप को व्याकरण कहते है। व्याकरण की व्याख्या पंतञ्जली ने की है।
   पतञ्जली ने व्याकरण शब्द की तुलना वृषभ (बैल) से की है।
   व्याकरण रूपी **वृषभ के चार सिंग, तीन पैर, सात हाथ, दो सिर है और ये व्याकरण रूपी वृषभ तीन जगह से बंधा हुआ है।** अर्थात्

1. चत्वारः श्रृंगाः– (चार पद होते है)
   (i) सुबन्त (शब्दरूप)
   (ii) तिङन्त (धातु रूप)
   (iii) उपसर्ग
   (iv) निपात् (अव्यय)
2. त्रयः पादाः – (तीन काल होते है)
   (i) भूतकाल

Digital Learning Classes

(ii) वर्तमान काल

(iii) भविष्यत् काल

3. सप्त हस्त :– (सात विभक्तियां होती है)
प्रथम, द्वितीया......... सप्तमी।

4. द्वे शिरसी :– (शब्द के दो भेद होते है।)
(i) ध्वनि (वाणी/बैखरी)
(ii) स्फोट (भाव)

5. त्रिद्वा बद्धा/ :– (उच्चारण स्थान के तीन भेद होते है)
(i) उरस् (ह्दय)
(ii) कण्ड
(iii) शिरम् (दंत/तालु/मूर्धा/ओष्ठ)

*** व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य :–**

1. व्याकरण शिक्षण से बालकों ने भाषा शुद्धता तथा गुणवत्ता की पहचाान होती है।
2. संस्कृत भाषा के नियम व सूत्र का ज्ञान प्रदान करने के लिए।
3. संस्कृत भाषा के ध्वनि तत्व परिचय प्रदान करने के लिए।
4. वाक्य रचना अभ्यास के लिए।
5. शब्द रूप, धातु रूप का उचित ज्ञान प्रदान करने के लिए।
6. भाषा के गुण दोषों की तुलना के लिए।
7. छात्रों की रचना शक्ति व तर्क शक्ति के विकास के लिए।
8. छात्रों के चार मूलभूत कौशलों के विकास के लिए।
9. भाषा स्थानान्तरण अर्थात् अनुवाद के लिए।
10. भाषा में शुद्ध–अशुद्ध की पहचान के लिए।

1. **पारायण विधि :– इस विधि के प्रवर्तक महर्षि पाणिनि** है। पारायण शब्द का शाब्दिक अर्थ ''**नियमित रूप से किसी विषय वस्तु का पाठ करके उसको कंठस्थ करना होता है।**''
यह सर्व प्राचीन विधि है। इस विधि का सर्वप्रथम प्रयोग पाणिनी की रचना अष्टाध्यायी के सूत्रों को कण्ठस्थ करने के लिए किया गया था। इस विधि का प्रयोग छात्र में स्वाध्याय क्रिया सक्रिय रखने के लिए किया जाता है जिससे छात्र की कल्पना शक्ति, स्मरण शक्ति और अधिगम क्षमता विकसीत होती है।
इस विधि का प्रयोग करने से छात्र क्लिष्ट (कठिन) से क्लिष्ट विषयवस्तु को भी कंठस्थ किया जा सकता है।
इस विधि का प्रयोग **शिक्षणोपरान्त** किया जाता है।
इस विधि का उद्देश्य **दोहरान** होता है।
इस विधि के प्रयोग का उचित समय **प्रातः काल** होता है।
इस विधि में प्रयोगकर्ता शिक्षक न होकर **छात्र** होता है।

2. **आगमन विधि** :– इस विधि से शिक्षक सर्वप्रथम उदाहरण प्रस्तुत करता है और उदाहरण का विश्लेषण है तत्पश्चात् नियम प्रस्तुत करके परीक्षण करता है। इसी क्रिया का आगमन विधि के नाम से जाना जाता है।
इस विधि का प्रयोग करने के लिए **शिक्षक चार चरणों (सोपान) का क्रमशः उपयोग करता है** –
(i) उदाहरण प्रस्तुतीकरण
(ii) उदाहरण विश्लेषण
(iii) नियमीकरण/सूत्रीकरण
(iv) परीक्षण
– इन चारों चरणों के माध्यम से यदि शिक्षक व्याकरण शिक्षक कार्य करवाता है। तो प्रारम्भिक स्तर के छात्र अत्यन्त लाभान्वित होते है तथा विषयवस्तु के प्रति जिज्ञासावान होकर सक्रिय रहते हैं।
इस विधि से व्याकरण का ज्ञान सरल व सुगम तरीके से सम्पन्न किया जाता है।
इस विधि का प्रयोग करने के लिए शिक्षक निम्न शिक्षण सूत्रों का प्रयोग करता है –
1. उदाहरण से नियम की ओर
2. विशिष्ट से सामान्य की ओर

Digital Learning Classes

3. प्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर
4. स्थूल से सूक्ष्म की ओर
5. ज्ञात से अज्ञात की ओर

इन शिक्षण सूत्रों के माध्यम से यदि व्याकरण शिक्षण करवाया जाये तो छात्रों को सूक्ष्मतिसूक्ष्म ज्ञान प्रदान किया जा सकता है।
यह **विधि पतञ्जली परम्परा** का अनुसरण करती है। इस विधि से विषयवस्तु का **स्थायीकरण** होता है। जिससे छात्र सक्रिस रहते है और विषयवस्तु के प्रति आत्मविश्वास बढ़ता है।

गुण :–
1. यह विधि मनोवैज्ञानिक होती है।
2. प्रारम्भिक स्तर के लिए अत्यन्त उपयोगी होती है।
3. यह विधि सरल व सक्रिय होती है।
4. इस विधि में छात्र की अधिगम क्षमता विकसीत होती है क्योंकि विषय वस्तु के प्रति आत्मविश्वास बढ़ता है।

दोष :–
1. यह विधि परिश्रमी व समय व्यापी है।
2. नियमों की पूर्णसत्यता परीक्षण नहीं होता है।
3. इस विधि का प्रयोग प्रशिक्षित अथवा अनुभवशाली शिक्षक ही कर सकता है सामान्य शिक्षक नहीं।

3. **निगमन विधि** :– इस विधि में शिक्षक सर्वप्रथम नियम प्रस्तुत करता है तथा नियम का स्पष्टीकरण करता है तत्पश्चात् उदाहरण के माध्यम से सत्यापन करता है इसी प्रक्रिया को निगमन विधि के नाम से जाना जाता है।
इस विधि में शिक्षक **चार चरणों** का क्रमशः उपयोग करता है।
(i) नियम बोधनम्/बोधसूत्र प्रस्तुतीकरण
(ii) नियम स्पष्टीकरण
(iii) उदाहरण प्रयोग
(iv) सत्यापन

इन चारों चरणों के माध्यम से शिक्षक अल्प समय में अधिक व्याकरणित ज्ञान प्रस्तुत कर सकता है जिससे उच्च स्तर के छात्र अत्यन्त लाभान्वित होते है और छात्रों की कल्पना शक्ति विकसित होती है।
इस विधि का प्रयोग करने के लिए शिक्षक निम्न शिक्षण सूत्रों की सहायता लेता है :–
1. नियम से उदाहरण की ओर
2. सामान्य से विशिष्ट की ओर
3. प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर
4. अज्ञात से ज्ञात की ओर
5. सूक्ष्म से स्थूल की ओर

इन शिक्षण सूत्रों के उपयोग से सुगम व सरल तरीके से व्याकरण शिक्षण करवाता है जिससे छात्र की अवबोधनात्मक शक्ति (गहन ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति) विकसित होती है।
इस विधि से छात्र में विषयवस्तु के तर्क–वितर्क के भाव उत्पन्न होते हैं। **यह विधि पाणिनि परम्परा का अनुसरण करती है।**

गुण :–
1. यह विधि उच्च स्तर के लिए अत्यन्त उपयोगी है।
2. इस विधि से छात्र की कल्पना शक्ति व तर्क शक्ति विकसित होती है।
3. इस विधि से अल्प समय में अधिक व्याकरण का ज्ञान प्रस्तुत किया जा सकता है।
4. यह विधि शिक्षक के लिए सुगम व सरल होती है।

दोष :–
1. यह विधि अमनोवैज्ञानिक है।
2. यह विधि प्रारम्भिक स्तर के लिए अनुपयोगी है।
3. इस विधि में छात्र निष्क्रिय रहते है अतः यह विधि शिक्षक उपयोगी है छात्र उपयोगी नहीं।

Digital Learning Classes

नोट :–

आगमन व निगमन दोनों विधियाँ एक दुसरे की सहायक न होकर, पूरक (विपरीत) होती है।

जॉसफ लैण्डन ने इन दोनों विधियों को व्याकरण शिक्षण के लिए श्रेष्ठ माना है।

4. **सूत्र विधि** :– सूत्र व्याकरण का हृदय होता है **सूत्र की पाँच विशेषताएं (लक्षण) होती** है।

1. सूत्र अल्प अक्षरों से युक्त होना चाहिए।
2. सूत्र असंदिग्ध होना चाहिए।
3. सूत्र सारांश युक्त होना चाहिए।
4. सूत्र अन्वय (क्रम) युक्त होना चाहिए।
5. सूत्र सभी भावों में प्रायोगिक होना चाहिए।

इन पाँचों विशेषताओं से युक्त सूत्र ही मान्य होता है। पाणिनि की रचना अष्टादायी के अनुसार सूत्र 6 प्रकार के होते है।

1. **संज्ञा सूत्र**
2. **परिभाषा सूत्र**
3. **विधि सूत्र** – (प्रत्यय/उपसर्ग में प्रायोगिक)
4. **नियम सूत्र** – (अपवादों में प्रायोगिक)
5. **अतिदेश सूत्र/आगम सूत्र** – (वर्ग आगम में प्रायोगिक)
6. **अधिकार सूत्र** – (विभक्तियों में प्रायोगिक)

इन 6–प्रकार के सूत्रों से सम्पूर्ण व्याकरण का अध्ययन तथा अष्टदायी का ज्ञान प्रस्तुत किया जा सकता है।

विधि :– इस विधि के आधार पर सूत्रों का स्पष्ट रूप से उच्चारण करके स्पष्टीकरण करता है तथा अनुकरण प्रवृति के माध्यम से बार–बार अभ्यास करवाकर सूत्रों का स्मरण करवाता है जिससे छात्रों का विषय वस्तु के प्रति आत्मविश्वास बढ़ता है इस विधि का एकमात्र उद्देश्य पाठ्यक्रम में आवश्यकतानुसार सूत्रों को याद करवाना होता है।

अतः इस विधि को **रटन्त विधि** अथवा **शुक** (सुग्ग) विधि के नाम से जाना जाता है।

नोट :– **सूत्र का कभी भी विश्लेषण नहीं होता है स्पष्टीकरण होता है।**

अतः इस विधि को भाषा में संश्लेषण विधि के नाम .से जाना जाता है।

गुण :–

1. यह विधि व्याकरण का अभिन्न अंग है।
2. उच्च स्तर के लिए अत्यन्त उपयोगी है।
3. यह विधि भाषा का प्रमाण है।
4. यह विधि व्याकरण शिक्षण की सामान्य व स्वाभाविक प्रक्रिया है।

दोष :–

1. यह विधि नीरस व निष्क्रिय है।
2. प्रारम्भिक स्तर के लिए अनुपयोगी है।
3. इस विधि में साहित्य ज्ञान का अभाव होता है।
4. यह अमनोवैज्ञानिक है।

5. **समवाय विधि** : – साहित्य शिक्षण के समय व्याकरणित **ज्ञात** की प्रस्तुती देना ही समवाय विधि कहलाती है।

जैसे :– कथा शिक्षण के समय व्याकरणित ज्ञान का प्रस्तुतीकरण करना समवाय विधि होती है।

यह विधि सभी स्तरों के लिए उपयोगी है और मनोवैज्ञानिक है।

6. अव्याकृत विधि :– **इसे भाषा संसर्ग (सम् + सृज + घञ्) विधि** के नाम से भी जाना जाता है।

नोटः– किसी पद की **व्युत्पत्ति** (उपसर्ग + धातु + प्रत्यय) करना ही अव्याकृत विधि कहलाती है।

जैसे :– प्रकृति पद की व्युत्पत्ति अव्याकृत विधि है।

↳ (प्र + कृ + क्तिन्)

यह विधि सभी स्तरों के लिए उपयोगी है तथा मनोवैज्ञानिक है।

Digital Learning Classes

2. गद्य शिक्षण :–

गद्य शब्द में **गद् धातु** और यत् प्रत्यय है। जिसका शाब्दिक **अर्थ विश्लेषण** होता है।

परिभाषा :– ''अनियताक्षरो गद्यम्''

↓

जहां निश्चित वर्णो के संख्या नहीं होती है वह गद्य रचना कहलाती है। गद्य शिक्षण का मूलभूत उद्देश्य विचार विश्लेषण होता है।

गद्य के प्रकार – गद्य के दो प्रकार होते है।

1. कथा/कहानी
2. आख्यायिका/उपन्यास

जिसकी विषय वस्तु काल्पनिक होती है वह कथा कहलाती है। तथा जिसकी विषयवस्तु **ऐतिहासिक होती है वह आख्यायिका** कहलाती है।

गद्य शिक्षण के उद्देश्य :–

1. गद्य शिक्षण से छात्रों का शब्दकोष वर्धन होता है।
2. गद्य शिक्षण से छात्र की रूचि व मनोरंजन व्यक्त होता है।
3. इस शिक्षण से छात्र की कल्पना शक्ति, विचार शक्ति और रचना शक्ति विकसित होती है।
4. इस शिक्षण छात्र की अभिरूचि व्यक्त होती है।
5. इस शिक्षण से छात्रों को नवीनतम शब्दों के प्रयोग का अवसर प्राप्त होता है।
6. इस शिक्षण से छात्र को गद्यशैली का परिचय होता है।
7. इस शिक्षण से छात्र जीवन के मौलिक उद्देश्य सीखता है।

* **गद्य शिक्षण की विधियाँ :–**

1. उद्बोधक विधि :– **इसे संकेतक विधि** के नाम से भी जाना जाता है। यह विधि गद्य शिक्षण की **सर्वश्रेष्ठ विधि** होती है।
इस विधि का प्रयोग कथा शिक्षण के समय किया जाता है इस विधि में शिक्षक कथा शिक्षण के समय आवश्यक विषयवस्तु से संबंधित चित्र, मानचित्र, मॉडल, प्रतिकृति तथा वास्तविक पदार्थ संकेत के माध्यम से दिखाकर विषय वस्तु का शिक्षण सम्पन्न करते है जिससे छात्रों को विषयवस्तु का स्थायी ज्ञान प्राप्त होता है और छात्र रस की अनुभूति अथवा गद्य शिक्षण में रूचि सक्रिय रखते है।
इस विधि से ही साहित्य शिक्षण का प्रारम्भ होता है।

गुण :–

1. यह विधि मनोवैज्ञानिक है।
2. यह विधि प्रारम्भिक स्तर के लिए अत्यन्त उपयोगी है।
3. इस विधि में छात्र सक्रिय रहते है।
4. इस विधि से छात्र की अधिगम क्षमता विकसित होती है।
5. इस विधि से छात्रों की सहायक साधनों के प्रति रूचि जागृत होती है।
6. इस विधि से साहित्य/गद्य शिक्षण का प्रारमभ होता है।
7. यह विधि सरस होती है।

दोष :–

1. यह विधि परिश्रमी और समयव्यापी है।
2. यह विधि उच्चस्तर के लिए अप्रायोगिक है।
3. इस विधि से छात्र विषयवस्तु का मार्ग भटक जाते है।

Digital Learning Classes

2. **प्रश्नोत्तर विधि :– (सुकराती विधि)/(वाद–विवाद विधि)**

इस विधि के प्रवर्तक – **सुकरात** है।
अतः **इसे सुकराती विधि के नाम से जाना जाता** है। इस विधि का प्रयोग आख्यायिका शिक्षण के समय किया जाता है।
इस विधि में मूर्त (उपस्थित) विषय वस्तु से संबंधित अमूर्त (अनुपस्थित) विषयवस्तु प्रश्न के माध्यम से छात्र शिक्षक को पूछता है तथा शिक्षक सभी छात्रों को आधार मानकर उस विषयवस्तु का विश्लेषण करके प्रस्तुतीकरण करता है जिसके माध्यम से सभी छात्र लाभान्वित होते है। अतः इस विधि में प्रश्न कर्ता छात्र होता है और उत्तरदाता शिक्षक होता है।
भाषा शिक्षण में अमूर्त प्रश्न केवल आख्यायिका शिक्षण के समय ही होते है अतः प्रश्नोतर विधि को गद्य शिक्षण की आधारशिक्षा कहा जाता है। इस विधि से छात्र में विषयवस्तु के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

गुण :–

1. यह विधि छात्र में अभिव्यक्ति व्यक्त करती है।
2. यह विधि मनोवैज्ञानिक होती है। (केवल भाषा शिक्षण में)
3. यह विधि छात्र की कल्पना शक्ति और अवबोध शक्ति विकसित करती है।
4. इस विधि से गुरु–शिष्य संबंध मजबूत होते है।

दोष :–

1. यह विधि मंद–बुद्धि छात्रों के लिए उपयोगी है क्योंकि मंदबुद्धि छात्रों में अभिव्यक्ति क्षमता नहीं होती है।
2. इस विधि से छात्र विषय वस्तु का मार्ग भटक जाते है।

3. **व्याख्या विधि** :– व्याख्या साहित्य की कसौटी (कवच) होती है। साहित्य शिक्षण में व्याख्या अनिवार्य होती है।
''किसी विषय वस्तु को मनोभावों में व्यक्त करके विश्लेषण करना ही व्याख्या कहलाती है।''

व्याख्या के तीन प्रकार होते हैं :–

I. शब्द व्याख्या
II. वाक्य व्याख्या
III. सूक्ति व्याख्या

नोट :– पद की कभी व्याख्या नहीं होती व्युत्पत्ति होती है।

Digital Learning Classes

इन तीनों व्याख्या के प्रकारों से भी साहित्य शिक्षण सम्भव होता है। इस विधि के अनुसार शिक्षक सर्वप्रथम पाठ में आये हुए प्रत्येक शब्दों का विश्लेषण करता है तथा उसके बाद सम्पूर्ण वाक्य को विस्तार से समझाता है तथा पाठ के बीच में आई हुई सुक्तियों को विस्तृत रूप में उदाहरणों के माध्यम से विश्लेषित करता है।
इस विधि का मूल उद्देश्य विषयवस्तु को विस्तार से प्रस्तुत करना होता है।
अतः भाषा में इसे विश्लेषण विधि के नाम से भी जाना जाता है।
यह विधि गद्य, पद्य, नाट्य तीनों शिक्षणों के लिए प्रायोगिक है अर्थात् सम्पूर्ण साहित्य शिक्षण के लिए उपयोगी है।
इस व्याख्या विधि के अनुसार पाँच विशेषताएँ होती है।

1. पदच्छेद
2. पदार्थोक्ति
3. विग्रह–वाक्य योजना
4. आक्षेप/समस्या
5. समाधान

इन पाँचों विशेषताओं को एक चरण बद्ध तरीके से शिक्षक प्रयोग में लेकर व्याख्या सम्पन्न करता है तथा विषयवस्तु का अधिक से अधिक विस्तार करके छात्रों को ज्ञान प्रदान करता है।
इस व्याख्या विधि का एक भाग टीका के नाम से जाना जाता है।

व्याख्या :– ''विषयवस्तु को मनोभावों में व्यक्त करके विश्लेषित करना व्याख्या कहलाती है।''
यह स्थायी होती है इसका मूल आधार विषय वस्तु होती है। तथा शिक्षण में मान्य होती है।

व्याख्यान् :– ''व्यक्तिगत विचारों को मनोभावों में व्यक्त करके विश्लेषित करना व्याख्यान् कहलाता है।'' इसे उपदेश भी कहते है। यह क्षणिक होता है। इसका मूला आधार व्यक्तिगत विचार होते हैं। यह शिक्षण में अमान्य होता है।

टीका :– विषयवस्तु के अंश का विस्तृत रूप में विवेचन करके नयी रचना का निर्माण टीका कहलाती है। यह शिक्षण में मान्य होती है।

गुण :–
1. इस विधि से साहित्य ज्ञान का सम्पूर्ण परिचय होता है।
2. यह विधि सरस होती है।
3. उच्च स्तर के लिए अत्यन्त उपयोगी है।
4. इस विधि से गद्य, पद्य, नाट्य तीनों शिक्षण संभव है।

दोष :–
1. यह अमनोवैज्ञानिक विधि है।
2. इस विधि में व्याकरण ज्ञान का अभाव होता है।
3. इस विधि से विषयवस्तु में ब्रह्म उत्पन्न होता है।
4. इस विधि से शिक्षक अधिक सक्रिय रहता है।
5. प्रारम्भिक स्तर पर छात्र में साहित्य ज्ञान का अभाव होता है।

3. पद्य शिक्षण :–

पद्य शबद में पद् धातु और यत् प्रत्यय है।

परिभाषा – नियताक्षरः पद्यम्।

वृत्तबद्ध/छन्दोबद्ध रचना पद्यम्।

– जहां निश्चित वर्णों की संख्या होती है वह पद्य रचना कहलाती है।

अर्थात् पद्य रचना वृत्त अथवा छन्द में बंधी हुई है।

पद्य शिक्षण का मूलभूत उद्देश्य **रसानुभूति अथवा भाव सौन्दर्य होता है।**

Digital Learning Classes

पद्य शिक्षण के उद्देश्य :–
1. पद्य शिक्षण से छात्रों में कविता लेखन अथवा पद्य लेखन के प्रति रुचि जाग्रत होती है।
2. पद्य शिक्षण से छात्र में कल्पना अथवा भाव सक्रिय होते है।
3. पद्य शिक्षण से छात्रों में गति/यति/लय/ताल का परिचय प्रदान होता है।
4. पद्य शिक्षण से छात्रों में साहित्यक अंगों (रस/गुण/छन्द/अलंकार/शैली का परिचय होता है।
5. पद्य शिक्षण से छात्रों में साहित्य, रुचि अथवा सरसता उत्पन्न होती है।

पद्य शिक्षण की विधियाँ :–

1. **दण्डान्वय विधि** :– **इस विधि में दण्ड शब्द का अर्थ वाक्य होता है।** इस विधि के अनुसार शिक्षक सर्वप्रथम श्लोक का सस्वर उच्चारण (गति + यति + लय + ताल) तथा श्लोक में विद्यमान **कर्ता, कर्म और क्रिया** का विस्तृत रूप से विश्लेषण करके परिचय करवाता है। तत्पश्चात् उसी समय शिक्षक छात्रों से प्रश्न करते है कि इस श्लोक में कर्ता कौन है? कर्म कौनसा है ? क्रिया कौनसी है? इत्यादि प्रश्नों के उत्तर छात्र शिक्षक के निर्देशानुसार देते है इस व्याकरणिक प्रश्नोत्तरी क्रिया को दण्डान्वय निधि के नाम से जाना जाता है।
इस दण्डान्वय विधि से पद्य शिक्षण का प्रारम्भिक ज्ञान सक्रिय रूप में प्रदान किया जा सकता है तथा छात्रों में पद्य शिक्षण के प्रति रूचि जाग्रत होती है इस विधि से विषय–वस्तु का पूर्णतया स्थायीकरण होता है।

गुण :–

1. यह विधि मनोवैज्ञानिक है।
2. प्रारम्भिक स्तर के लिए अत्यन्त उपयोगी है।
3. इस विधि में छात्र सक्रिय रहते है।
4. इस विधि में पद्य शिक्षण का प्रारम्भ होता है।
5. इस विधि से छात्रों को वाक्य योजना का ज्ञान होता है।
6. इस विधि से विषयवस्तु में स्थायीकरण होता है जिससे अधिगम क्षमता विकसित होती है।

दोष :–

1. यह विधि उच्चस्तर के लिए अनुपयोगी है।
2. यह विधि परिश्रमी एवं समयव्यापी है।
3. इस विधि में साहित्य ज्ञान का अभाव होता है।

2. **खण्डान्वय विधि** :– **यह विधि पद्य शिक्षण की सर्वश्रेष्ठ विधि है।** इस विधि में शिक्षक सर्वप्रथम श्लोक का सस्वर उच्चारण करता है और श्लोक में विद्यमान **साहित्यक अङ्गो (रस, गुण, छंद, अल्ङ्कार, शैली)** का विस्तृत रूप से विश्लेषण करवाकर परिचय प्रदान करता है।

तत्पश्चात् उसी समय छात्रों से प्रश्न करता है कि इस श्लोक में रस कौनास है गुण कौनसा है? छन्द कौनसा है? अलंकार कौन है? शैली कौनसी है? अलंकार कौन है शैली कौनसी है? इत्यादि प्रशनों के उत्तर छात्र शिक्षक के निर्देशानुसार देते है।

इस साहितियक ज्ञान की प्रश्नोत्तरी क्रिया को खण्डान्वय विधि के नाम से जाना जाता है। इस विधि के माध्यम से उच्च स्तर के छात्र अत्यंत लाभान्वित होते है और साहित्य का संपूर्ण ज्ञान प्राप्त करते है जिससे छात्रों के भाव व कल्पनायें सक्रिय रहती है अर्थात् संपूर्ण पद्य साहित्य का ज्ञान इसी विधि से संभव है।

गुण :–

1. यह विधि मनोवैज्ञानिक है।
2. उच्च स्तर के लिए अत्यंत उपयोगी है।
3. इस विधि से छात्र की कल्पना शक्ति सक्रिय होती है।
4. इस विधि से छात्र में कविता लेखन व पद्य लेखन की अभिव्यक्ति विकसित होती है।
5. इस विधि से छात्र को संपूर्ण साहित्य ज्ञान प्राप्त होता है।
6. यह विधि सरस व सुगम है।

दोष :–

1. यह विधि प्रारम्भिक स्तर के लिए अनुपयोग है।
2. इस विधि में व्याकरण ज्ञान का अभाव होता है।
3. इस विधि से छात्र में पद्य के प्रति भय उत्पन्न होता है।

निष्कर्ष :– पद्य शिक्षण के लिए सस्वर उच्चारण क्रिया अनिवार्य होती है।

नोट :– दण्डान्वय व खण्डान्वय दोनों विधियाँ एक दूसरे से की पूरक न होकर सहायक होती है।

3. **गीत विधि** :– यह स्वतंत्र शिक्षण विधि नहीं होती हैं इस विधि में शिक्षक अबोध बालकों अथवा प्राथमिक स्तर के बालकों को सामूहिक रूप से श्लोक, कविता तथा प्रार्थना का सस्वर गान करवाकर कठस्थ करवाता है।
– जिससे पद्य शिक्षण का परिचय होता है यह विधि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अनुसरण करती है।

(A) नाट्य शिक्षण :–

नाट्य शब्द से नट् धातु तथा ण्यत् प्रत्यय है। **नाट्य शब्द का शाब्दिक अर्थ अनुकरण होता है।**
नाटक के जनक भरत मुनि है। जिनकी रचना नाट्य शास्त्र है।

→ ''पूर्व इतिहास में घटित घटनाओं का अनुकरण करना ही नाट्क कहलाता है अर्थात् **नाट्क की विषयवस्तु ऐतिहासिक होती है काल्पनिक नहीं।** नाटक का मूलभूत उद्देश्य अभिनय होता है।''

नाट्क शिक्षण के उद्देश्य :–

1. हितोपदेश जनक – (हितकारी उपदेश देने वाले)
2. विनोदजनक (मन को प्रसन्न करने वाला)
3. विश्रान्तिजनक (मानसिक थकावट को दूर करने वाला)

इन तीनों उद्देश्यों के अतिरिक्त नाट्य शिक्षण से छात्रों में अभिनय कला तथा अभिव्यक्तिक क्षमता विकसित होती है।

* **नाट्य शिक्षण की विधियाँ :–**

1. अभिनय विधि :– अभिनय नाट्क का अभिन्न अंग होता है। **अभिनय 4 प्रकार का होता है।**

(i) वाचिक अभिनय (वाणी के माध्यम से अनुकरण करना)
(ii) आङ्गिक अभिनय (हाव–भाव के माध्यम से अनुकरण करना)
(iii) आहार्य अभिनय (वेश–भूषा के माध्यम से अनुकरण करना)
(iv) सात्विक अभिनय (आदर्श वचन, अनमोल वचन, व्यक्तिगत वचन प्रवचन इत्यादि के माध्यम से अनुकरण करना)

→ इन चारों अभिनयों में वाचिक और आङ्गिक अभिनय शिक्षण कार्य में उपयोगी होते है। जिनका उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति होता है।
आहार्थ अभिनय रंगमंच प्रस्तुति के समय प्रायोगिक होता है जिसका उद्देश्य मनोरंजन होता है।
सात्विक अभिनय अभिप्रेरणा जाग्रत करने के लिए प्रायोगिक होता है।

''इस विधि के अनुसार शिक्षक नाट्य शिक्षण के समय वाचिक व आङ्गिक अभिनय के माध्यम से विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण करता है तो वह आदर्श बाह्य अभिनय विधि के नाम से जानी जाती है।''
तथा शिक्षक नाट्य शिक्षण करवाते समय कक्षा में उपस्थित छात्रों के माध्यम से पात्रों के आधार पर अभिनय करवाकर शिक्षण कार्य सम्पन्न करता है तो वह कक्षा अभिनय अथवा छात्र अभिनय विधि के नाम से जानी जाती है।
इस विधि के माध्यम से छात्रों को सक्रिय करके विषय–वस्तु प्रस्तुत की जाती है।

गुण :–

1. यह विधि मनोवैज्ञानिक है।
2. यह विधि सभी स्तरों के लिए उपयोगी है।
3. यह विधि छात्र में अभिनय कला विकसित करती है।
4. यह विधि छात्र में अभिव्यक्ति क्षमता तथा सक्रियता उत्पन्न करती है जिससे छात्र की अधिगम क्षमता विकसित होती है।

दोष :–

1. यह विधि परिश्रमी व समयव्यापी है जिसके कारण उच्च स्तर में अप्रयोगिक है।
2. इस विधि से छात्र विषयवस्तु का मार्ग भटक जाते है।

2. **रंगमंच विधि** :– रंगमंच प्रस्तुतीकरण विद्यालय आयोजन तथा उत्सवों पर होता है जिससे छात्रों में मनोरजंन की अनुभूति होती है।
एक शिक्षण सत्र में 4 आयोजन व उत्सव होते है।

1. स्वतंत्रता दिवस
2. बाल दिवस
3. गणतंत्र दिवस
4. वार्षिकोत्सव

इन चारों आयोजनों पर छात्र आहार्य अभिनय के माध्यम से प्रस्तुतीकरण करते है।
जिसका उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति न होकर मनोरंजन की अनुभूति होती है।
यह विधि शिक्षण कार्यो में अप्रायोगिक होती है परंतु नाटक का प्रस्तुतीकरण साधन होती है।

गुण :–

1. इस विधि से छात्र की अभिनय कला का प्रदर्शन होता है।
2. छात्र में प्रोत्साहन अनुभूति विकसित होती है।
3. यह विधि शिक्षणोपयोगी नहीं है।
4. यह विधि अपव्ययी (खर्चीली) है।

नोट :– वार्षिकोत्सव में प्रोत्साहन के लिए पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

3. **समवाय विधि** :– नाट्य शिक्षण गद्य और पद्य का मिश्रण होता है। अतः किसी एक स्वतंत्र विधि से इसका शिक्षण कार्य असंभव है, अतः शिक्षक कक्षा के स्वर के अनुसार आवश्यकतानुसार सभी विधियों का मिश्रण करके शिक्षण कार्य करवाता है। जिससे छात्र के उद्देश्य पूर्ण होते है। जिससे छात्र के उद्देश्य पूर्ण होते है। अतः इस विधि को नाट्य शिक्षण की सर्वश्रेष्ठ विधि कहा जाता है।
यह पूर्णतः मनोवैज्ञानिक है तथा सभी स्तरों के लिए उपयोगी है।

5. **अनुवाद शिक्षण** :– एक भाषा को दूसरी भाषा में परिवर्तित करने की क्रिया को अनुवाद कहते है। अनुवाद क्रिया में प्रथम भाषा गौण होती है तथा द्वितीय भाषा प्रधान होती है।
अनुवाद शिक्षण का मूलभूत उद्देश्य ''द्विभाषाज्ञानम्'' होता है।
अनुवाद तीन प्रकार का होता है –
(i) वर्ण अनुवाद / अक्षर अनुवाद :– इसमें भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण को दूसरी भाषा में स्थानान्तरित किया जाता है।
(ii) भाव / छाया अनुवाद :– इसमें वाक्य का अनुवाद किया जाता है। यह सर्वश्रेष्ठ अनुवाद होता है।
(iii) तथ्य अनुवाद :– यह वर्ण तथा भाव अनुवाद का मिश्रण होता है।
इस अनुवाद का प्रयोग सूक्ति / लोकोक्ति और मुहावरों में किया जाता है।

अनुवाद शिक्षण की विधियाँ :–

1. **पाठ्य पुस्तक प्रयोग विधि** :– पाठ्य पुस्तक में अभ्यास कार्य के लिए दिये हुए वाक्यों का अनुवाद करना।
जैसें –रचना अुनवाद कौमुदि के माध्यम से अनुवाद का (रचनानुवाद) अभ्यास करवाना।
2. **विमाषा तुलना विधि** :– इस विधि में अनुवाद के माध्यम से दो भाषाओं में परस्पर तुलना होती है।
3. **द्विभाषी प्रयोग विधि** :– अनुवाद क्रिया में द्विभाषी का प्रयोग भी किया जाता है, जिसे दो भाषाओं के मध्य की कड़ी माना जाता है।

	शिक्षण		उद्देश्य	विषयवस्तु	सर्वश्रेष्ठ विधि
1.	व्याकरण	→	नियमीकरण / सूत्रीकरण	अशुद्धि संशोधन	आगमन / निगमन
2.	गद्य	→	विचार / विश्लेषण	काल्पनिक / ऐतिहासिक	उद्बोधक
3.	पद्य	→	भाव–सौन्दर्य–रसानुभूति	काल्पनिक	खण्डान्वय
4.	नाट्य	→	अभिनय	ऐतिहासिक	समवाय
5.	अनुवाद	→	द्विभाषा ज्ञानम्	मूर्त	भाव / छायानुवाद

Digital Learning Classes

Unit - 2

भाषा – कौशल

भाषा जन्मजात इकाई न होकर अर्जित इकाई होती है। भाषा की स्वाभाविक प्रक्रिया को सीखने के चार चरणबद्ध सोपान होते है जिनका क्रमशः उपयोग करने पर भाषा को सुगम व सरल तरीके से सीखा जा सकता है।

1. श्रवण कौशल
2. भाषण कौशल
3. पठन कौशल
4. लेखन कौशल

1. **श्रवण कौशल** :– यह प्रथम कौशल होता है **इस कौशल से भाषा का परिचय होता** है। यह कौशल **आदर्श वाचन क्रिया** से सम्पन्न होता है।

– इस कौशल से छात्र को भाषा के अनुकरण में सबसे अधिक सहायता मिलती है।

यह कौशल अन्य 3 कौशलों का आधार होता है इस कौशल से भाषा में छात्र की रूचि का प्रथम चरण सक्रिय होता है तथा भावों का आदान–प्रदान करने की क्रिया सम्पन्न होती है।

इस कौशल से दो उद्देश्य सम्पन्न होते है।

(i) शब्द के अर्थ भाव को ग्रहण करना

(ii) भाव प्रकटीकरण (सहमति देना)

– इन दोनों उद्देश्यों से श्रवण क्रिया को सक्रिय किया जाता है तथा संबंधित भाषा का अभ्यास करके उसे व्यवहार में शामिल किया जाता है।

श्रवण कौशल के साधन :–

1. परिवार के सदस्य
2. गुरुमुख (आदर्शवाचन)
3. आकाशवाणी
4. दूरदर्शन
5. दूरभाषा (टेलिफोन)
6. संगणक (कम्प्यूटर)
7. ध्वनि विस्तारक यंत्र
8. ध्वनि मुद्रण यंत्र

इन साधनों के माध्यम से भाषा का परिचय होता है इस कौशल को प्रयोग में लेने के लिए कुछ विधियों की सहायता ली जाती है जिनमें बालगीत, शिशुगीत कहानियां, सेमीनार, संगोष्ठियां, कार्यशाला, अभिनय, गीत इत्यादि को शामिल किया जाता है।

2. **भाषा कौशल** :– इसे वादन कौशल भी कहते है।

– कौशल अनुकरण वाचन से सम्पन्न होता है इस कौशल में विचारों का आदान–प्रदान होता है। शुद्ध भाषा का मूल्यांकन कौशल से ही होता है।

– ''वाणी रूपी में भाव को प्रकट करना ही भाषण कहलाता है।''

भाषण कौशल के दो साधन होते हैं –

1. अनुकरण 2. अभ्यास

– इन दोनों साधनों के माध्यम से भाषा की शुद्धता की पहचान होती है।

– उच्चारण शुद्धता का अभिज्ञान (परिचय) भाषण से ही सम्भव है तथा शिक्षण के लिए निश्चित कर्त्तव्य होने चाहिए।

* **भाषण कौशल विकास के लिए आवश्यक शिक्षक के कर्तव्य** :–

1. प्रारंभिक स्तर पर भाषण कौशल संपन्न कराने के लिए अधिक से अधिक मौखिक अभयास करवाकर परिश्रम करना चाहिए।

2. उच्च स्तर पर अनेक भाषण प्रतियोगिताऐं सम्पन्न करवानी चाहिए।
3. बाल गीत तथा वाद–विवाद प्रतियोगिता और शुद्ध उच्चारण अन्त्याक्षरी, शब्दार्थ, प्रतियोगिता आदि का सम्पन्न करवाना चाहिए।
4. प्रत्येक कक्षा में भाषा प्रतिनिधि छात्र नियुक्त करना चाहिए।

3. **पठन कौशल** :– यह कौशल भाषा में ज्ञान प्राप्ति का आधार होता है इस कौशल से छात्र की स्मरण शक्ति, कल्पना शक्ति, अधिगम क्षमता होती है।

→ **''लिखित रूप में विद्यमान किसी विषय वस्तु को मन में अथवा प्रकट रूप में ग्रहण करना ही पठन कहलाता है। ''**
पठन कौशल में अर्थ ग्रहण आवश्यक होता है। छात्र सुनने की अपेक्षा पढ़कर अधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।

पठन कौशल के उद्देश्य :–

1. प्रारंभिक स्तर पर पढ़ते समय क्रमानुसार उच्चारण सामर्थ्यता प्रदान करना।
2. माध्यमिक स्तर पर समान गति, अभिनय के साथ शैली के माध्यम से पढ़ने का अभ्यास करवाना।
3. उच्च स्तर पर तर्क–वितर्क, विचार एवं विराम चिह्न सहित पढ़ने का अभ्यास करवाना।

पठन के प्रकार :– दो प्रकार का होता है –

1. **मौन पठन** 2. **सस्वर पठन**

1. **मौन पठन** :– विषयवस्तु को बिना उच्चारण किये मन ही मन पढ़ना, मौन पठन कहलाता है। मौन पठन से अर्थग्रहण क्षमता सर्वाधिक होती है।

मौन पठन तीन प्रकार का होता है –
1. सामान्य मौन पठन
2. गंभीर मौन पठन
3. द्रुत (जल्दी) मौन पठन

2. **सस्वर पठन** :– विषयवस्तु का ध्वनि में उच्चारण करके पढ़ना ही सस्वर पठन कहलाता है। इस पठन को वाचन कहते है।

सस्वर पठन तीन प्रकार का होता है –
1. आदर्शवाचन (शिक्षक द्वारा सम्पन्न)
2. अनुकरण वाचन (छात्र द्वारा सम्पन्न)
3. समवेत वाचन (सामूहिक रूप से छात्रों द्वारा सम्पन्न)

Digital Learning Classes

नोट :– आदर्श वाचन का उद्देश्य प्रस्तुतीकरण अनुकरण वाचन का उद्देश्य काठिन्य निवारण, समवेत वाचन का उद्देश्य दोहरान।

सस्वर वाचन की सावधानियाँ :–

1. सस्वर वाचन सदैव खड़े होकर करना चाहिए।
2. सस्वर वाचन के समय पुस्तक बायें हाथ में होनी चाहिए।
3. पुस्तक पकड़े हुए हाथ का कोण लगभग 135^0 का होना चाहिए।
4. सस्वर वाचन सदैव आरोह अवरोह क्रम में होना चाहिए।
5. पुस्तक की आँखों से दूरी कम से कम 30 सेमी. होनी चाहिए।

हरबर्ट स्पेन्सर ने पठन क्रिया के क चरण निर्धारित किये है जिनका क्रम से उपयोग करना आवश्यक होता है। इन पांचों चरणों को स्पेन्सर ने एक सूत्र में परिभाषित किया है।

पठन सूत्र – **SQ3R**

S - Survey (सर्वेक्षण)
Q - Question (उद्देश्य)
R - Read (पठन)
R - Review (अवलोकन)
R - Reuision (दोहरान)

4. **लेखन कौशल** :– यह भाषा का अंतिम कौशल है तथा सबसे क्लिष्ट (कठिन) कौशल है।
लेखन कौशल स्थायी होता है कभी परिवर्तित नहीं होता है अतः इस कौशल को भाषा का प्रतिबिम्ब कौशल कहा जाता है।
''वाणी रूप को अथवा वाचिक क्रिया को वर्णों में लिखना ही लेखन कौशल कहलाता है।''
लेखन कौशल का आधार लिपि होती है।
इस कौशल में छात्र को अपने विचारों की अभिव्यक्ति सम्पन्न करनी होती है।
लेखन कौशल का प्रयोग करने के लिए चार विधियां उपयोगी है।

I. जैकपॉट/दृष्टलेखन विधि :–
– इस विधि में शिक्षक द्वारा लिखित विषय वस्तु को छात्र देख–देखकर लिखते है।
जिसका उद्देश्य सुलेख (सुन्दरलेख) होता है।

II. श्रुतलेख विधि :– इस विधि में शिक्षित के उच्चारण को सुनकर लिखता है।
इस विधि का उद्देश्य मात्रा – शुद्धि संशोधन होता है।

III. मॉन्टेसरी विधि :– इस विधि में लेखन क्रिया सिखाने के लिए छात्र को कलम पकड़ने को सही अवस्था का ज्ञान करवाया जाता है।

IV. किण्डर गार्डन विधि :– छात्र में लेखन के प्रति रूचि जागृत करने के लिए चित्र आकृतियों के माध्यम से तथा खेल–खेल में लेखन कला का विकास किया जाता है।

उपर्युक्त भाषा के चारों **कौशलों में श्रवण और पठन कौशल आंतरिक कौशल होते हैं जिनका उद्देश्य ग्रहण करना होता है तथा भाषण और लेखन कौशल बाहरी कौशल होते है जिसका उद्देश्य अभिव्यक्ति व्यक्त करना होता है।**

Digital Learning Classes

Unit - 4

* संस्कृतशिक्षणाभिरुचिप्रश्नाः *

* संस्कृत शिक्षण के प्रति रूचि विकसित करने के लिए शिक्षक के द्वारा जो प्रश्न किए जाते है, वे संस्कृत शिक्षण अभिरुचि प्रश्न कहलाते हैं।
* शिक्षार्थियों में संस्कृत के प्रति अभिरुचि बढ़ाने के लिए शिक्षक को संस्कृत शिक्षण के उद्देश्यों एवं शिक्षण की विभिन्न प्रणालियों का ज्ञान होना आवश्यक है।
* शिक्षार्थियों में संस्कृत के प्रति अभिरूचि बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं –

  1. प्रभावशाली ढंग से संस्कृत शिक्षण
  2. उत्तम श्लोकों/सूक्तियों/कथाओं के उद्धरणों एवं उदाहरणों का प्रस्तुतीकरण
* संस्कृत वाक्य रचना एवं कविता रचना का अभ्यास
* संस्कृत श्लोक/शब्द अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन
* संस्कृत काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन :– इस प्रतियोगिता में शिक्षार्थी विभिन्न कवियों द्वारा रचित पद एवं कविताएँ मधु कण्ठ से सुनाते है। अन्त्याक्षरी की अपेक्षा इसमें छात्रों को पूर्ण स्वतंत्रता रहती है। इस प्रकार के आयोजन भी शिक्षार्थियों में काव्यात्मक अभिरुचि बढ़ाने में सहायक होते है।
* समस्या–पूर्ति प्रतियोगिता – इस प्रतियोगिता में प्रतिभागी शिक्षार्थियों को एक पंक्ति बता दी जाती है जिसके आधार पर शिक्षार्थियों को सारी कविता स्वयं रचना होती है। समस्यापूर्ति के द्वारा शिक्षार्थियों की कल्पना–शक्ति का विकास होता है और वे काव्य रचना में रुचि लेने लगते हैं।
* कवि सम्मेलन का आयोजन – उच्चकोटि के कवियों को विद्यालय में आमन्त्रित करके कवि–सम्मेलन का आयोजन किया जा सकता है। इससे शिक्षार्थियों को उत्कृष्ट रचनाओं के रसास्वादन के अवसर मिलेंगे, वे श्रेष्ठ रचनाओं को पढ़ने के लिए प्रेरित होंगे तथा स्वयं भी काव्य–रचना के लिए उत्साहित होंगे।

  इस प्रकार के सम्मेलनों का आयोजन उच्च स्तर की कक्षाओं के शिक्षार्थियों के लिए अधिक उपयोगी होगा।
* कवि जयंती – विद्यालय में प्रसिद्ध कवियों की जयन्ती भी अवश्य मनाई जानी चाहिए। इस अवसर पर संबंधित कवि की रचनाओं का पाठ शिक्षार्थियों से कराया जाना चाहिए। इससे शिक्षार्थियों में कवि और कविता के प्रति अभिरुचि बढ़ेगी।
* कवि दरबार का आयोजन – इस प्रकार के आयोजन में शिक्षार्थी विभिन्न कवियों की वेशभूषा बनाकर मंच पर आते हैं और उनकी रचनाओं का पाठ करते हैं इससे अनेक श्रेष्ठ कवियों की रचनाओं को कंठस्थ करने से तथा उनका अभिनय पूर्ण वाचन करने से छात्रों में काव्यात्मक अभिरुचि बढ़ती है।

उपर्युक्त सभी साधनों का सम्यक् उपयोग निश्चित ही शिक्षार्थियों में काव्यात्मक अभिरुचि बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा।

Digital Learning Classes

Unit - 5

भाषा शिक्षण में उपयोगी सहायक सामग्री :–

भाषा शिक्षण में कठिनता, संशय, दुविधा, भ्रम इत्यादि को दूर करने के लिए सहायक साधनों का प्रयोग किया जाता है। जिनको तीन भागों में विभक्त किया गया है –

1. **श्रव्य साधन :– भाषा के उच्चारण शुद्धता के प्रमाण के लिए श्रव्य साधनों का प्रयोग किया जाता है।** जिनमें आकाशवाणी, रेडियो, ग्रामोफोन, लाउडस्पीकर, टैप रिकॉर्डर, लिंग्वा फोन (दूरभाष) इत्यादि।
2. **दृश्य साधन :– भाषा की मात्राएं लिपि तथा विषय वस्तु का स्पष्टीकरण दर्शाने के लिए शिक्षक इन दृश्य साधनों का प्रयोग करता है।**

   जिनमें – चित्र, मानचित्र, प्रतिकृति, समय सारणी पुस्तकालय, वास्तविक पदार्थ, भाषा प्रतिमूलन (पुराने ग्रंथों का प्रमाण) ऐपीयाड स्कौप (चित्र–विस्तारक), ग्लोब (दिग्दर्शिका) इत्यादि।
3. **मिश्रित साधन** :– जहा दृश्य और श्रव्य दोनों साधनों का मिश्रिण होता है वे मिश्रित साधन कहलाते है। जिनमें दुरदर्शन, चलचित्र (Moive), भाषा प्रयोगशाला इत्यादि।

उपर्युक्त इन साधनों के अतिरिक्त शिक्षक के अभिन्न पाँच सहायक साधन होते है – जिनमें

1. **श्यामपट्ट** :– यह **शिक्षक का मित्र** होता है। जिस पर शिक्षक कठिन और महत्वपूर्ण विषय वस्तुओं को लिखता है।

   श्यामपट्ट की आकृति **आयताकार** होती है जिसका **माप** 3 : 2 होता है।

   अस्थायी श्यामपट्ट को **लपेटफलक (Roll Board)** के नाम से जाना जाता है।
2. **सुधाखण्ड (चॉक)** :– श्यामपट्ट पर लेखन कार्य करने के लिए जिस लेखनी का प्रयोग किया जाता है उसे सुधाखण्ड कहते है। यह श्वेत रंग की होती है तथा रेखांकन करने के लिए रक्त व हरित वर्ण की सुधाखण्ड प्रायोगिक है।
3. **मार्जनी (डस्टर)** :– श्यामपट्ट पर लिखीत कार्य को साफ करने के लिए (परिमार्जन) मार्जनी का प्रयोग होता है। (उपदिष्टात् अधः स्तः) किया जाता है।
4. **दण्ड सूचक** :– श्यामपट्ट पर लिखित विषय–वस्तु का अवलोकन करवाते समय महत्वपूर्ण बिंदुओं को इंगित करने के लिए दण्ड सूचक का प्रयोग किया जाता है।
5. **पुस्तक** :– विषयवस्तु के प्रमाण को प्रदर्शित करने के लिए पाठ्यपुस्तक सहायक साधन के रूप में प्रयोग में ली जाती है।

Digital Learning Classes

नोट :– विधि तथा उद्देश्य (पाठ्यक्रम) पाठ्यपुस्तक साध्य होती है तथा प्रमाण में पाठ्यपुस्तक साधन होती है।

Unit - 6

संस्कृतभाशाषिक्षणस्य मूल्याङ्कनसम्बन्धिनः प्रश्नाः। भाषा शिक्षण में मूल्यांकन

मूल्यांकन की भूमिका –

* मूल्य + अंकन

भारत मेंसर्वप्रथम मूल्यांकन का प्रयोग अमेरिका के प्रोफेसर राईस ने किया।

* अध्यापन – अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। नए उद्देश्यों को तय करने, अधिगम अनुभव प्रस्तुत करने और विद्यार्थी की संप्राप्ति की जांच करने में मूल्यांकन–अधिगम काफी योगदान देता है। इसके महत्त्वपूर्ण शिक्षण और पाठ्य विवरण सुधारने में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यह समाज, अभिभावक और शिक्षा के ढांचे के प्रति उत्तरदायित्व को भी बताता है।

संक्षेप में इसके लाभ, इस प्रकार है –

1. शिक्षण – शिक्षण विधियाँ, शिक्षण तकनीकें आदि मूल्यांकन से कितने प्रभावित हुए हैं, यह पता लग सकता है। इससे अध्यापकों को अपने अध्यापन और अध्येताओं को अपने सीखने के बारे में पता चल जाता है।
2. पाठ्यचर्या – पाठ्यचर्या, विषय–समग्री पाठ्य पुस्तकें व शैक्षिक सामग्री में मूल्यांकन की सहायता से सुधार किया जा सकता है।
3. समाज – नौकरी बाजार की मांग और आवश्यकता के रूप में समाज के प्रति उत्तरदायित्व का हिसाब बताता है।
4. अभिभावक – मूल्यांकनि के द्वारा अभिभावकों को अपने बच्चों की प्रगति का विवरण स्पष्ट रूप से मिल जाता है।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा की कार्यप्रणाली के लिए मूल्यांकन अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे शिक्षा के अनके उद्देश्य पूरे होते है। जैसे, गुणवत्ता पर नियंत्रण, उच्च कक्षा में प्रवेश, अन्य क्षेत्रों के चयन में सहायता। मूल्यांकन की सहायता अपनाना चाहिए – यह निर्णय करने में दिशाज्ञान आसान हो जाता है। कुछ शिक्षाविद् मूल्यांकन को पूर्व में प्रयुक्त मूल्य निर्धारण का समानार्थक ही मानते है। इससे यह अर्थ नहीं निकालना चाहिए कि कार्यक्रम उद्देश्यों की खूब खुलके आलोचना की जा सकती है। कार्यक्रम के उद्देश्य और आवश्यकता को भलीभांति समझकर ही आलोचना करनी चाहिए। विद्यार्थी के जांच – परिणामों से जो जानकारी मिलती हैं उसके आधार पर ही अधिगम अनुभवों को बनाना या सुधारना चाहिए। विद्यार्थी के जांच–परिणामों से जो जानकारी मिलती है उसके आधार पर ही अधिगम अनुभवों को बनाना या सुधारना चाहिए। नीचे के चित्र में अध्यापन–अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन के स्थान को बड़ी सरलता से प्रदर्शित किया गया है –

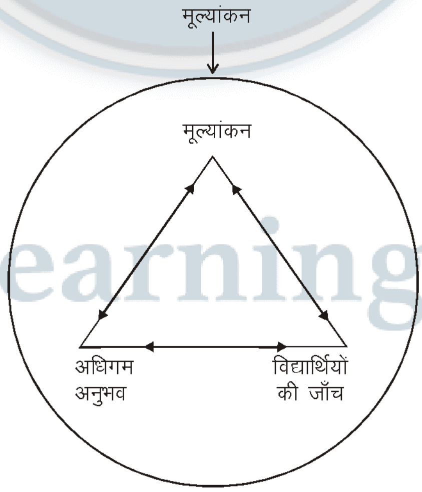

चित्र :– अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन के योगदान का चित्रण

मूल्यांकन के क्षेत्र में चार प्रमुख अंग है – उद्देश्य, अधिगम – अनुभव, विद्यार्थी की जांच और इनका आपस से संबंध।

मूल्यांकन की आवश्यकता और महत्त्व

अध्यापन – अधिगम प्रक्रिया का अपरिहार्य अंग है। मूल्यांकन किसी भी परिस्थिति साधारण अथवा कठिन परिस्थितियों में चाहे क्लासरूप में हो अथवा इससे संबंधित किसी अन्य क्रिया में कुछ भी निर्णय लेने हो तो मूल्यांकन अनिवार्य होता है। प्रधानाचार्य, शिक्षक या अन्य विद्यालय कर्मचारी जब भी प्रतिदिन विद्यार्थियों के बारे में निर्णय में उनकी सहायता करना चाहें तो मूल्यांकन आवश्यक हो जाता है। प्रभावशाली ढंग से निर्णय लेने में मूल्यांकन की आवश्यकता पड़ती है। उदाहरण के लिए एक पूरे समूह के विद्यार्थियों को कई श्रेणियों अथवा वर्गों में बांटना हो तो उनकी उपलब्धि में मूल्यांकन की आवश्यकता इतनी अधिक अनुभव की जाती है कि तुरन्त ही एक योजनाबद्ध व क्रमबद्ध मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। मूल्यांकन शिक्षक को सही दिशा में कदम बढ़ाने में सहायक होता है। हम सब जानते हैं कि अध्यापन–अधिगम प्रक्रिया में जो विभिन्न क्रियाएँ की जाती हैं वे इस प्रकार की होती है –

1. कथा के उद्देश्यों को पूरा करना।
2. विद्यार्थियों की अधिगम–कठिनाईयाँ मालूम करना।
3. नए अधिगम अनुभवों की तैयारी निश्चित करना।
4. विशिष्ट कार्यकलाप के लिए कक्षा में विद्यार्थियों के वर्ग बनाना।
5. समायोजन की समस्याओं के निराकरण में विद्यार्थियों की सहायता करना।
6. विद्यार्थियों की प्रगति की रिपोर्ट तैयार करना।

इन सभी क्रियाओं में हम मूल्यांकन संबंधी निर्णय लिए बिना नहीं रह सके। हम अपने विद्यार्थियों की जितनी सही जांच करेंगे उतना ही प्रभावशाली ढंग से सीखने में उनकी सहायता कर सकेंगे। यदि हम मूल्यांकन के सिद्धांतों और विधियों को सी प्रकार से समझ सकेंगे। यदि हम मूल्यांकन के सिद्धांतों और विधियों को सही प्रकार से समझ लेंगे तो उचित शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बच्चों को दिशा देने में उतनी ही समझदारी पूर्ण निर्णय ले सकेंगे।

मोफात के अनुसार – मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।

मूल्यांकन की परिभाषा – शैक्षिक मूल्यांकन के बारे में अलग–अलग लेखकों के अलग–अलग मत हैं। ऐसा इसलिए कि लेखकों की पृष्ठभूमि और इनका प्रशिक्षण एक सा नहीं है। इनकी शैक्षिक प्रक्रिया में भी अलग–अलग मत हैं। ऐसा इसलिए है कि लेखकों, की पृष्ठभूमि और इनका प्रशिक्षण एक सा नहीं है। इनकी शैक्षिक प्रक्रिया में भी अलग–अलग बातों पर बल दिया गया है। मूल्यांकन की सबसे विस्तृत परिभाषा C.E. Beeby (1977) नामक विद्वान ने दी थी जिसके अनुसार ''मूल्यांकन उस साक्ष्य का क्रमबद्ध संग्रह और उनका परिणाम निकालना है तो मूल्यों की जांच की प्रक्रिया के द्वारा कुछ करने के लिए प्रेरित करता है।''

इस परिभाषा में नीचे लिखे चार तत्व सम्मिलित हैं–

1. साक्ष्यों को क्रमबद्ध रूप में इकट्ठा करना।
2. उनका अर्थ एवं व्याख्या।
3. मूल्यों संबंधी निर्णय।
4. क्रियान्वयन की दृष्टि से।

पहले तत्व 'क्रमबद्ध संग्रह' का अर्थ है कि जो भी सूचना एकत्र की जाए वह क्रम से और योजनाबद्ध तरीके से सही मात्रा में प्राप्त की जाए। लेखक ठममइल की परिभाषा में 'साक्ष्य' की व्याख्या मूल्यांकन प्रक्रिया का आलोचनात्मक पक्ष है। मात्र साधनों का संग्रह अपने आप में मूल्यांकन नहीं है। वैसे किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम में मूल्यांकन के लिए जो सूचना एकत्र की जाती है उसकी बहुत सावधानी से व्याख्या करनी चाहिए। कभी–कभी बिना व्याख्या हुए साक्ष्य को शैक्षिक क्रिया में किसी गुण के होने या न होने के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण के लिए, प्रायः यह कहा जाता है कि विद्यार्थी की पढ़ाई छोड़ना शैक्षिक कार्यक्रमों की असफलता का घोतक है। हो सकता है यह कथन कुछ विद्यार्थियों के सामने में ठीक हो पर हर एक में नहीं। शैक्षिक कार्यक्रम के असफल होने और पढ़ाई छोड़ देने के व्यक्तिगत कारण हो सकते है जैसे अच्छी नौकरी न मिलना। इन कारणों का प्रभाव शैक्षिक कार्यक्रमों पर पड़ता है। कभी–कभी शैक्षिक कार्यक्रम इसलिए भी छोड़ दिया जाता है कि वह सफल हो गया। उदाहरण के लिए कम्प्यूटर के दो वर्ष के कार्यक्रम में यह देखा गया कि प्रवेश लेने वाले दो तिहाई विद्यार्थी कार्यक्रम पूरा नहीं कर पाए। गहराई से देखने पर पता चला कि अनेक विद्यार्थियों को एक वर्ष का कार्यक्रम पूरा करने के बाद ही अच्छी जगह नौकरी मिल गई और इसलिए उन्हें पढ़ाई बीच में एक साल बाद ही छोड़ दी। उन कम्पनी अधिकारियों ने यह अनुभव कि उन विद्यार्थियों के लिए एक वर्ष का प्रशिक्षण काफी ही नहीं था वरन् आगे बढ़ने का यथेष्ट आधार भी था। ऐसी दशा में कार्यक्रम समाप्ति से पूर्व ही उसको छोड़ने से यह समझना कि कम्प्यूटर कार्यक्रम सफल नहीं था ठीक नहीं है।

Beeby की परिभाषा का तीसरा बिंदु है 'मूल्यों का निर्णय'। यह निर्णय केवल यही नहीं बताता कि मूल्यांकन की शैक्षिक प्रक्रिया में क्या हो रहा है बल्कि यह भी बताता है कि वह प्रक्रिया कितनी महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार मूल्यांकन केवल कुछ सूचनाओं एकत्र करना और उनके परिणाम निकालना ही नहीं है कि शैक्षिक लक्ष्य कहाँ तक प्राप्त हुए परंतु उन लक्ष्यों के बारे में भी निर्णय लेना है कि वे कितने ठीक हैं।

Beeby की परिभाषा में अंतिम बिंदु 'क्रियात्मक की दृष्टि' में दो विशेष बातों में अंतर बताते हैं। पहला, परिणाम–उन्मुखी जिसमें बिना किसी कार्य विशेष का ध्यान रखे, और केवल मूल्य निर्णय की बात करें। दूसरा 'निर्णय–उन्मुखी', जो भविष्य में लिया जाने वाले कार्य को ध्यान में रखकर किए जाएँ। शैक्षिक मूल्यांकन स्पष्ट रूप से निर्णय–उन्मुखी होता है जिसके पीछे यह भावना होती है अंत में कुछ कार्य किया जाएगा। इनके पीछे भावना है शिक्षा में अधिक उपयोगी नीतियाँ और क्रियाओं को निश्चित करना।

अच्छे मूल्यांकन की विशेषताएँ

* वैधता–वैध मूल्यांकन वह होता है जो वास्तव में उसी बात का परीक्षण करे जिसके बारे में वह जानना चाहता है, अर्थात् उद्देश्य में वर्णित जो व्यवहार हम जांचना चाहते हैं केवल उसी की जांच की जाए। स्पष्टतः कोई व्यक्ति जानबूझकर ऐसे मूल्यांकन प्रश्न नहीं बनाएगा जो निरर्थक बातों को जांचे। वास्तविकता यह है कि अधिक शिक्षक ऐसे बिंदुओं को जांचते हैं जो प्रामाणिक नहीं होते। उदाहरण के लिए यदि विद्यार्थी की कुछ बिंदुओं को याद करने की शक्ति को जांचने के लिए प्रश्न बनाने है परंतु वास्तव में ऐसे प्रश्न बना दिए जाएँ जो उसकी तर्क शक्ति का जांचे अथवा ऐसे प्रश्न बनाए जाएँ तो विद्यार्थी के पूर्व को जांचने के बजाय उस जानकारी को जांचे जो उसके पास आवश्यक नहीं होती हैं।

* बहुत से बहुप्रचलित जांच प्रश्नों में वैधता की ही समस्या आमतौर पर होती है। उदाहरण के लिए बच्चों के एक विज्ञान प्रश्न को देखिए। उन पदार्थों के नाम बताओं जो ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होने पर कार्बन के दहन में सहायक होते हैं। इस प्रश्न में वैधता की समस्या है क्योंकि प्रश्न कुछ सीमा तक वैधता की समस्या है क्योंकि प्रश्न कुछ सीमा तक भाषा और शब्द भंडार कौशल का जांच रहा है न कि आध ारभूत विज्ञान की जानकारी को।
* **विश्वसनीयता** – विभिन्न परंतु समतुल्य परिस्थितियों में किसी प्रश्न, परीक्षण या परीक्षा का उत्तर पूर्णतः एक ही प्रकार का होगा तो ऐसा मापन विश्वसनीयता कहलाएगी। विश्वसनीय सामग्री वहीं है जिससे एक से स्तर के विद्यार्थी पुनः–पुनः परीक्षा में लगभग एक सा ही उत्तर देते हैं। अतः परीक्षक कैसी भी योग्यता के हों, मूल्यांकन प्रायः एक सा ही होता है। व्यवहार में यह बहुधा कठिन लगता है। वहाँ मूल्यांकन को विश्वसनीय होना बहुत महत्त्वपूर्ण है। यदि एक ही उत्तर पर एक परीक्षक 75 अंक देता है और दूसरा 35 तो मूल्यांकन विश्वसनीय नहीं माना जाएगा। इस प्रक्रिया में परीक्षक या जांचकर्ता की विश्वसनीयता की भूमिका भी होती है। अर्थात् परीक्षक किसी प्रश्न को कई बार जांचे और प्रत्येक बार समंक एक से ही हो। विश्वसनीयता को स्थापित करने के लिए मूल्यांकनात्मक प्रश्न को एक समय में एक ही बिंदु जांचना चाहिए और परीक्षार्थी के पास कोई दूसरा विकल्प नहीं होना चाहिए। मूल्यांकन करते समय उस इकाई के उद्देश्य स्पष्ट लक्षित होने चाहिए। यह भी ध्यान दें कि मूल्यांकन में विश्वसनीयता और वैधता में आपस में सीधा संबंध नहीं है। उदाहरण के लिए यह हो सकता है कि एक परीक्षा या टेस्ट पूरी तरह से विश्वसनीयता हो परंतु फिर भी उसमें वैधता कम हो। हाँ, इन दोनों मे आपस में घनिष्ठ संबंध है। वैधता में विश्वसनीयता अन्तर्निहित परंतु विश्वसनीयता में वैधता नहीं। यह हो सकता है कि विश्वसनीयता में वैधता नहीं। यह हो सकता है कि एक विश्वसनीय टेस्ट वैध न हो, जैसे अलग–अलग घड़ियों का समय विश्वसनीय (एकसा) हो सकता है परतु आवश्यक नही कि वह वैध हो।
* **व्यावहारिकता** – मूल्यांकन की प्रक्रिया, लागत, समय और प्रयोग–सरलता की दृष्टि से वास्तविक, व्यावहारिक और कुशल होनी चाहिए। हो सकता है कि मूल्यांकन का कोई तरीका आदर्श हो परंतु उसे व्यवहार में न लाया जा सके। यह ठीक नहीं है, इसको प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। उदाहरणार्थ विद्यार्थियों की प्रेक्टिकल की परीक्षा में सभी विद्यार्थियों को एक करवाने के लिए एक ही प्रयोग देने के स्थान पर अलग–अलग प्रयोग करवाना अधिक सुविधाजनक और व्यावहारिक है। एक ही प्रयोग सबसे करवाने के लिए एक ही प्रकार के अनेकों यंत्र उपलब्ध करवाने होंगे, हो सकता है, यह संभव नहीं हो।
* **न्याय संगतता** – मूल्यांकन सभी विद्यार्थियों के लिए समान रूप से न्याय संगत होना चाहिए। यह तभी हो सकता है जब किसी पाठ के उद्देश्यों के अनुरूप विद्यार्थियों के अपेक्षित व्यवहारों को दर्शाए। अतः, यह भी अपेक्षित है कि विद्यार्थी को पता हो कि उनका मूल्यांकन कैसे होना है। इसका अर्थ यह है कि विद्यार्थियों को मूल्यांकन के विषय में सूचना मिलनी चाहिए, जैसे वह सामग्री जिसमें उनका परीक्षण होना है उसकी प्रकृति (विषय संदर्भ व उद्देश्य), परीक्षा की संरचना, विस्तार और परीक्षा का परिणाम तथा अंकों के आधार पर प्रत्येक भाग का महत्त्व।
* **उपयोगिता** – मूल्यांकन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होना चाहिए। इसके परिणामों से विद्यार्थी को अवगत होना चाहिए ताकि वह अपनी कमजोरियों की और जिन बातों में (बिंदुओं) में उसे महारत है, उनका जान सके। इस प्रकार वह अधिक सुधार लाने की सोच सकता है। मूल्यांकन से ही उसे पता लग सकता है कि किस दिशा में सुधार करना है। यह सुधार पठन सामग्री में, अध्यापन विधि में अथवा सीखने की शैली में हो सकता है। इस प्रकार मूल्यांकन विद्यार्थियों की कमजोरियों को जानने और उन्हें दूर करने में बहुत लाभकारी होता है।

Digital Learning Classes

निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण

प्रायः यह देखा गया है कि छात्रों को कुछ संकल्पनाओं/अवधारणाओं को समझने और सीखने में कठिनाईयाँ होती हैं। ये कठिनाइयाँ प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक वर्ग अथवा विषय के अनुसार भिन्न–भिन्न हो सकती हैं। शिक्षण के समय कठिनाइयों का पता लगाना अनिवार्य है। ऐसा निदानात्मक परीक्षणों का प्रयोग करके किया जा सकता है। निदानात्मक परीक्षण में उन मदों को रखा जाता है जो सफल कार्य–निष्पादन में निहित निर्दिष्ट कौशलों के विस्तृत विश्लेषण पर आधारित हों तथा छात्रों द्वारा की जाने वाही सर्वाधिक सामान्य अशुद्धियों के अध्ययन के आधार पर बनाए गए हों। अतः एक अच्छा निदानात्मक परीक्षण छात्र का मापन को भी बताएगा।

निदानात्मक परीक्षण विभिन्न विषयों के लिए उपलब्ध है। निदानात्मक परीक्षण का चयन तथा प्रयोग करते समय कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए, जो इस प्रकार हैं –

1. किसी भी परीक्षण का चयन करते समय विशिष्ट प्रकार की वांछित सूचना के संदर्भ में निदानात्मक प्रविधियों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
2. निदानात्मक परीक्षण उन छात्रों के लिए तैयार किए जाते हैं जिनका निष्पादन किसी विषय विशेष में औसत से कम रहता हो। अतः ये परीक्षण अधिगम में पाई जाने वाली कमजोरियों को अभिचिह्नित करने में उपयोगी हैं, न कि प्रवीणता का स्तर दर्शाने के लिए। यदि कोई छात्र किसी उप–परीक्षण में अधिक अंक पाता है तो इसका सीधा सा अर्थ यह है कि उस छात्र को उस–परीक्षण द्वारा में अधिक अंक पाता है तो इसका सीधा सा अर्थ यह है कि उस छात्र को उस उप–परीक्षण द्वारा मूल्यांकित विषय के संबंध में कोई कठिनाई नहीं है।
3. निदानात्मक परीक्षण उन विशिष्ट त्रुटियों की ओर संकेत करता है जो छात्रों से प्रायः होती हैं। किंतु यह त्रुटियों के कारणों को इंगित नहीं करता। कुछ कारणों को तो की गई गलती के प्रारूप से या छात्र के इस स्पष्टीकरण प्राप्त करते हैं। इस जानकारी के पूरक या अनुपूरक रूप में प्रेक्षण जैसी अन्य पद्धतियों का प्रयोग करना होगा।

4. निदात्मक परीक्षण छात्र की कठिनाई के निदान के लिए केवल आंशिक रूप में जानकारी प्राप्त करते हैं। इस जानकारी के पूरक या अनुपूरक रूप में प्रेक्षण जैसी अन्य पद्धतियों का प्रयोग करना होगा।

5. विशिष्ट अधिगम कठिनाईयों के बारे में निदानात्मक परीक्षणों से प्राप्त परिणामों की विश्वसनीयता कम होती है, क्योंकि अपेक्षाकृत ऐसी बहुत कम मदें हो सकती है जो प्रत्येक प्रकार की अशुद्धि का मूल्यांकन कर सकें। अतः किसी छात्र विशेष की विशिष्ट शक्तियाँ या दुर्बलताओं से संबंधित निष्कर्षों के आधार पर संकेत पाकर उन्हें अन्य वस्तुनिष्ठ साक्ष्य के संदर्भ में तथा नियमित कक्षा–प्रेक्षण द्वारा सत्यापित किया जाना चाहिए।

सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि निदानात्मक परीक्षण अधिगम संबंधी कठिनाईयों के विश्लेषण के लिए एक उपयोगी साधन है। किंतु अधिगम संबंधी कठिनाईयों को जानने के लिए मात्र निदानात्मक परीक्षण ही पर्याप्त नहीं है।

अतः एक प्रभावी उपचारात्मक कार्यक्रम आरम्भ करने से पूर्व छात्र के शारीरिक, बौद्धिक सामाजिक तथा भावात्मक विकास से संबंधित अनुपूरक जानकारी भी आवश्यक है।

छात्रों में वंश, लिंग, आयु, परिवेश आदि विविध कारणों में वैयक्तिक विभिन्नता होती है। कुछ बुद्धिमान होते हैं तो कुछ मंदबुद्धि होते हैं। मंदबुद्धि छात्र मंद गति से अध्ययन करते हैं। क्योंकि इनके समक्ष अनेक प्रकार की कठिनाताएँ उत्पन्न होती हैं। इनमें से कुछ छात्र परीक्षा में अनुत्तीर्ण भी हो जाते हैं। कुछ विद्यालय का नाम सुनकर के ही उसके दूर भागने लगते हैं। इस प्रकार के छात्र विद्यालय के समझ समस्याएँ खड़ी करते हैं।

इन समस्याओं को दूर करने के लिए ही निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण काम में लिया जाता है। इस उपागम में शिक्षक निदानात्मक शिक्षण के द्वारा तो छात्रों की कठिनताओं निदान करता है एवं तत्पश्चात् छात्रों की व्यक्तिगत कठिनताओं को दूर करने के लिए उपचारात्मक शिक्षण का प्रयोग करता है।

निदानात्मक शिक्षण (Diagnostic Teaching)

* निदान का शाब्दिक अर्थहोता है – 'मूल कारण' अथवा 'रोग निर्णय'।
* अंग्रेजी में इसके लिए Diagnosis शब्द का प्रयोग किया जाता है।
* जिस प्रकार एक चिकित्सक रोगी के लक्षणों को जानकर रोग का निदान करता है, उसी प्रकार एक शिक्षक भी छात्रों की विषयगत कमजोरी, अधिगम संबंधी त्रुटि आदि को जानकर इनके कारणों का निदान करता है।

परिभाषाएँ :–

1. सी. वी. गुड के अनुसार – ''निदान का अर्थ है – अधिगम संबंधी कठिनाईयों एवं कमियों को दूर करना।''
2. योकम एवं सिम्पसन के अनुसार – ''निदान, किसी कठिनाई का उसके चिह्नों या लक्षणों से ज्ञान प्राप्त करने की कला या कार्य है। यह तथ्यों के परीक्षण पर आधारित कठिनाई का स्पष्टीकरण है।''
3. मरसेल के अनुसार – ''जिस शिक्षण में छात्रों की विशिष्ट त्रुटियों का निदान करने का विशेष प्रयास किया जाता है। उसको बहुधा निदानात्मक शिक्षण कहा जाता है।''
4. गुड व ब्राफी के अनुसार – ''निदानात्मक शिक्षण अधिगम में छात्रों की कठिनाईयों के विशिष्ट स्वरूप का निदान करने के लिए उनके उत्तरों की सावधानी से जांच करने की प्रक्रिया का उल्लेख करता है।''

निदानात्मक शिक्षण के उद्देश्य :–

1. छात्र की पाठ्य–विषय से संबंधित स्वाभाविक अथवा जन्मजात कठिनाई का ज्ञान प्राप्त करना।
2. छात्र की पाठ्य–विषय से संबंधित विशिष्ट कठिनाई से अवगत होना।
3. छात्रों के व्यक्तिगत का विश्लेषण करना।

निदानात्मक शिक्षण के क्षेत्र :–

निदानात्मक शिक्षण का प्रयोग सामान्यतः निम्न आधारभूत विषयों तक ही सीमित माना जाता है –

1. वाचन 2. लेख 3. उच्चारण
4. भाषा/व्याकरण 5. अंकगणित

निदानात्मक अवसर के समय द्रष्टव्य बिंदु :–

1. शारीरिक स्वास्थ्य 2. संवेगात्मक स्थिति 3. बुद्धि स्तर
4. सामाजिक स्तर 5. आर्थिक स्तर 6. शिक्षण पद्धति
7. छात्रों की अभिरुचि 8. कार्य संकल्प

Digital Learning Classes

निदानात्मक परीक्षण के प्रकार :–

1. व्यक्ति केन्द्रित 2. समूह केन्द्रित

* व्यक्तिकेन्द्रित – इसमें किसी छात्र विशेष की कमजोरियों या गुणों का परीक्षण किया जाता है।
* समूह केन्द्रित – इसमें एक विशिष्ट समूह की सामूहिक कमजोरियों, त्रुटियों या गुणों का परीक्षण किया जाता है।

निदानात्मक परीक्षण पत्र का निर्माण :–

विद्यालय स्तरीय छात्रों के निदानात्मक परीक्षण प्रश्न–पत्र में निम्न बिंदु शामिल किए जाते हैं –

1. त्रुटियों का संकलन 2. त्रुटियों के कारण
3. त्रुटि निवारण के उपाय 4. नील पत्र का निर्माण

निदानात्मक शिक्षण के परिणाम :–

1. यह छात्रों में विद्यालय के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास करता है।
2. यह छात्रों की अध्यापन संबंधी अनुचित आदतों पर अंकुश लगाता है।
3. यह छात्रों की विशिष्ट समस्याओं की संख्या को अधिक से अधिक कम करता है।
4. यह छात्रों की अध्ययन संबंधी अनुचित प्रवृत्तियों को वैज्ञानिक विधि से उनकी त्रुटियों का ज्ञान प्रदान करता है और उनको उनसे बचने की चेतावनी देता है।

उपचारात्मक शिक्षण

'उपचार' का शाब्दिक अर्थ होता हैं – **'इलाज'**। यह शब्द वैधशास्त्र से ग्रहण किया गया है। जिस प्रकार एक वैद्य या चिकित्सक व्यक्तियों के विभिन्न रोगों का उपचार करके उनको उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने की चेष्टा करता है, ठीक उसी प्रकार एक शिक्षक छात्रों के अधिगम संबंधी दोषों को दूर करके उनको ज्ञानार्जन की उत्तम दिशा की ओर ले जाने का प्रयास करता है।

परिभाषा :–

1. योकम व सिम्पसन के अनुसार :– ''उपचारात्मक शिक्षण उस विधि को खोजने का प्रयत्न करता है, तो छात्र को अपनी कुशलता या विचार की त्रुटियों को दूर करने में सफलता प्रदान करें।''
2. ब्लेयर व जोन्स के अनुसार :– ''उपचारात्मक शिक्षण वास्तव में उत्तम शिक्षण है जो उत्तम छात्र को अपनी वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्रदान करता है और जो सुप्रेरित क्रियाओं द्वारा उसको अपनी कमजोरियों के क्षेत्रों में अधिक योग्यता की दिशा में अग्रसर करता हैं।''

उपचारात्मक शिक्षण के उद्देश्य :–

Digital Learning Classes

* छात्रों की ज्ञान संबंधी त्रुटियों का अंत करना।
* छात्रों के अधिगम संबंधी दोषों को दूर करना।
* छात्रों की दोषपूर्ण आदतों, कुशलताओं एवं मनोवृत्तियों को समाप्त करना।
* अपेक्षित मनोवृत्तियाँ एवं अभ्यास मनोवृत्तियों की शिक्षा प्रदान करना।
* उत्तम भाषा प्रयोग की क्षमता विकसित करना।
* समय एवं शक्ति का संचरण करना।
* छात्रों की वैयक्तिक कठिनताओं को दूर करना।
* मन्दबुद्धि बालकों में आत्मविश्वास जाग्रत करना।
* संवेगात्मक बालकों की अक्षमताओं को दूर करना।
* संस्कृत/हिन्दी भाषा के प्रति /रूचि उत्पन्न करना।

उपचारात्मक शिक्षण की विधियाँ :–

* प्रत्येक छात्र के अधिगम संबंधी दोषों का व्यक्तिगत रूपसे अध्ययन करके उसे उनको दूर करने के उपाय बताना।
* छात्रों की त्रुटियों को यदा–कदा (अवसरानुसार) शुद्ध करना।
* छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार उनको विभिन्न समूहों में विभाजित करके उनके शिक्षण की व्यवस्था करना।

* छात्रों को छोटे–छोटे समूहों में विभाजित करकेउनको उनकी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करना।
* कक्षा के छात्रों के अधिगम संबंधी दोषों, कमजोरियों और बुरी आदतों का निदान करके उनको उनके मुक्त करना।

नोट – इनमें से पाँचवें क्रम की विधि सर्वश्रेष्ठ विधि मानी जाती है।

उपचारात्मक शिक्षण में द्रष्टव्य बातें :–

* प्रत्येक छात्र के स्तरानुसार उपचारात्मक शिक्षण दिया जाना चाहिए।
* प्रत्येक सप्ताह की प्रगति का विश्लेषण किया जाना चाहिए।
* यदि छात्रों में कोई कमजोरी/दोष हो तो उनको सबके सामने प्रकट नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से उनमें हीनभावना उत्पन्न होती है।

उपचारात्मक शिक्षण के परिणाम :–

* छात्रों में सामान्य समायोजन की क्षमता उत्पन्न होती है।
* छात्रों को अपनी विशिष्ट कठिनाईयों पर विजय प्राप्त होती है।
* छात्रों को मानसिक एवं संवेगात्मक संघर्षों से मुक्ति प्राप्त होती है।
* छात्रों में अपने विचारों को सुनियोजित करने की योग्यता प्राप्त होती है।
* छात्रों में अधिक स्पष्ट रूप से विचार करने और अपने विचारो को व्यक्त करने की योग्यता विकसित होती है।

व्यापक/समग्र मूल्यांकन

शिक्षा लक्ष्य निदेशित होती है और शिक्षण निष्पत्तियों की जांच प्राप्ति के रूप में की जा सकती है। प्रत्येक शैक्षिक कार्यक्रम का लक्ष्य विद्यार्थी के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना होना चाहिए। इसलिए विद्यालय में दिए जाने वाले शिक्षण संबंधी अनुभवों से अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता मिलनी चाहिए। किसी भी शिक्षक अथवा शैक्षिक योजनाकार को किसी शैक्षिक कार्यक्रम निष्पत्तियों को उस कार्यक्रम के अपेक्षित व्यवहार के रूप में बताना चाहिए।

शैक्षिक तथा गैर–शैक्षिक क्षेत्र :–

* वह वांछनीय व्यवहार,जिसका संबंधी अध्ययन विषयों के ज्ञान, अवबोध तथा किसी अनभिज्ञ अवस्थिति में उन्हें उपयोग करने संबंधी योग्यता से है, शैक्षिक क्षेत्र से संबंधित कहा गया है। ऐसा व्यवहार जिसका संबंधी विद्यार्थी की अभिवृत्तियों, रुचियों, वैयक्तिक और सामाजिक गुणों तथा उसके स्वास्थ्य से संबंधित गैर–शैक्षिक क्षेत्र में उल्लिखित किया जाएगा।
* शैक्षिक और गैर–शैक्षिक क्षेत्रों से संबद्ध उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विद्यार्थी को प्रगति के मूल्य–निर्धारण की प्रक्रिया 'व्यापक मूल्यांकन' कही जाती है। यह देखा गया है कि प्रायः मात्र शैक्षिक तत्व जैसे किसी विषय के तथ्यों, विचारों, सिद्धांतों आदि की जानकारी और अवरोध तथा सोचने के कौशल का ही निर्धारण किया जाता है। गैर–शैक्षिक तत्वों को या तो मूल्यांकन प्रक्रिया से बिल्कुल निकाल दिया जाता है या उन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। मूल्यांकन को व्यापक रूप देने के लिए शैक्षिक व गैर–शैक्षिक दोनों क्षेत्रों को उचित महत्त्व देना चाहिए। विकास के गैर–शैक्षिक पक्ष के निर्धारण संबंधी साधारण और व्यवस्थित तरीकों को व्यापक मूल्यांकन स्कीम में अनिवार्यतः शामिल किया जाना चाहिए।
* राष्ट्रीय शिक्षा नीति (186) के 1992 में संशोधित प्रलेख में भी यह उल्लिखित किया गया था कि इस मूल्यांकन स्कीम में शैक्षिक विषयों और गैर–शैक्षिक क्षेत्रों के सभी अधिगम अनुभवों को शामिल किया जाना चाहिए।
* व्यापक मूल्यांकन में विभिन्न प्रकार की तकनीकों और साधनों के उपयोग की आवश्यकता होगी। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि विद्यार्थी के विभिन्न विशिष्ट विषयों का कतिपय विशेष तकनीकों से ही मूल्यांकन किया जा सकता है। आंकड़ों के संग्रहण के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों/उपकरणों में भी उतनी ही भिन्नता होती है। मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त विभिन्न साधनों एवं तकनीकों का इस पाठ्यक्रम की अन्य इकाईयों में वर्णन किया गया है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) ने विद्यालय मूल्यांकन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण स्कीमें तैयार की हैं और शिक्षकों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न साधनों के सुझाव दिए हैं। उदाहरण के तौरपर विद्यालय मूल्यांकन की एक स्कीम की रूपरेखा नीचे दी गई है जिसमें मूल्यांकन किए जाने वाले विषयों एवं प्रस्तावित तदनुरूपी तकनीकों और साधनों को भी दर्शाया गया है।

सतत् मूल्यांकन

* **मूल्यांकन के परिणामः प्रभावी शिक्षण :– अधिगम के मूल तत्व** – एक शिक्षक के रूप में हमारी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हमारे अनुदेशात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो पाई है। वैसे भी उद्देश्यों की प्राप्ति की प्रगति का निर्धारण और मूल्यांकन किया ही जाना चाहिए, नहीं तो हम यह नहीं जान पाएंगे कि हम वहां पहुंचे हैं और हमें कहाँ पहुंचना है।
* विद्यालय स्तर पर मूल्यांकन के प्रयोजनों में से एक मुख्य प्रयोजन शैक्षिक विषयों में छात्रों की उपलब्धि में सुधार करना और विद्यालयी शिक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप उसमें सही आदतों और अभिवृत्तियों का विकास करना है।

* शैक्षिक मूल्यांकन की विद्यालय में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यह अनुदेशात्मक कार्यक्रम का महत्त्वपूर्ण अंतरंग भाग है। यह ऐसी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध कराता है जो विभिन्न शैक्षिक निर्णयों के लिए एक आधार प्रदान करती है। शैक्षिक मूल्यांकन में मुख्य बल विद्यार्थी और उसकी अधिगम–प्रगति पर दिया जाता है।
* विद्यार्थी कहाँ है और वह किस प्रकार प्रगति कर रहा है, यह जानकारी शिक्षक द्वारा प्रभावी–शिक्षक और विद्यार्थी द्वारा प्रभावी–अधिगम का मूलभूत तत्व है।
* इसके अतिरिक्त 'शिक्षा की राष्ट्रीय नीति' दस्तावेज में भी इस बात पर बल दिया गया कि विद्यालय स्तर पर मूल्यांकन रचनात्मक अथवा विकासशील होना चाहिए। क्योंकि इस स्तर पर विद्यार्थी अधिगम की विकासात्मक अवस्था में होता है। चूंकि बच्चा इस समय स्वयं विकास की रचनात्मक अवस्था मे होता है इसलिए अधिगम के सुधार पक्ष पर जोर दिया जाना चाहिए।
* हम किसी विद्यार्थी द्वारा अनुदेशात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के वर्तमान स्तर और उसकी प्रगति का कैसे पता लगा सकते हैं? अनुदेशात्मक उद्देश्यों के सतत् मूल्यांकन द्वारा उद्देश्यों की प्राप्ति के वर्तमान स्तर तथा प्रगति की दिशा का पता लगाया जा सकता है।
* यदि अध्यापक से यह अपेक्षा कि वह अधिगम अनुभवों में सुधार के लिए अपनी अध्यापक विधियों में वांछनीय परिवर्तन करे तो इसके लिए सतत् मूल्यांकन अनिवार्य होगा। अनुदेशात्मक उद्देश्यों के संदर्भ में विद्यार्थियों की प्रगति का निर्धारण करने की दृष्टि से उनकी अनुक्रियाओं का रिकार्ड रखना महत्त्वपूर्ण व उपयोगी होगा।

व्यापक और सतत् मूल्यांकन के प्रकार्य :–

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन के अंतर्गत शैक्षिक और गैर–शैक्षिक पहलुओं पर ध्यान दिया जाना अपेक्षित होता है। यदि विद्यार्थी किसी क्षेत्र में कमजोर है, तो नैदानिक मूल्यांकन और उपचारी प्रयास किए जाने चाहिए। सतत् और व्यपक मूल्यांकन के अंतर्गत आने वाले महत्त्वपूर्ण प्रकार्य या उद्देश्य नीचे दिए जा रहे हैं –

1. सतत् मूल्यांकन से विद्यार्थी की प्रगति की सीमा और स्तर के निर्धारण में नियमित सहायता मिलती है। (विशिष्ट शैक्षिक और गैर–शैक्षिक क्षेत्रों के संदर्भ में योग्यता और उपलब्धि)
2. सतत् मूल्यांकन से कमजोरियां का निदान किया जा सकता है इसकी सहायता से शिक्षक प्रत्येक अलग–अलग विद्यार्थी की शक्ति, कमजोरियां और उसकी आवश्यकताओं का पता लगा सकता है। इससे शिक्षक को तात्कालिक प्रतितुष्टि (फीडबैक) प्राप्त होती है, जो इसके आधार पर यह निर्णय करता है कि क्या किसी इकाई विशेष के विषय का पूरी कक्षा में पुनः शिक्षण किया जाए अथवा क्या कुछ विद्यार्थियों को उपचारी अनुदेश दिए जाने चाहिए।
3. इससे शिक्षक को प्रभावी शिक्षा कार्यनीति तैयार करने में सहायता मिलती हैं।
4. बहुधा कुछ व्यक्तिगत कारणों से, पारिवारिक समस्याओं से या समायोजन संबंधी समस्याओं के कारण विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के प्रति लापरवाह होने लगते हैं। जिसके परिणामस्वरूप उनकी उपलब्धि में अचानक गिरावट आने लगती हैं। इन्हें जांचने के लिए सतत् व व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता है।

– यदि शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावकों तीनों विद्यार्थी की उपलब्धि में इस प्रकार आने वाली अचानक गिरावट को नहीं जान पाते और विद्यार्थी की पढ़ाई के प्रति लापरवाही काफी समय तक बनी रहती है, तो उपलब्धि कम होने लगती है और विद्यार्थी के अधिगम में एक स्थायी न्यूनता आ जाती है।

– सतत् मूल्यांकन से विद्यार्थी, शिक्षक और अभिभावकों के समय–समय पर उपलब्धि के प्रति जागरूक बने रहने में सहायता मिलती है। वे उपलब्धि में होने वाली किसी प्रकार की गिरावट के सम्भावित कारणों के प्रति सतर्क बने रह सकते हैं और समय पर उसके उपचारी प्रयास कर सकते हैं, जिससे विद्यार्थी की प्रगति सम्बन्धी परिणाम के अपने अपेक्षित स्तर को बनाए रखने में सहायता मिलती है।

– सतत् मूल्यांकन से विद्यार्थियों को अपनी शक्ति और कमजोरियों की जानकारी मिलती है। इससे विद्यार्थी को उसके अध्ययन के सम्बन्ध में स्पष्ट वास्तविक जानकारी मिलती है। इससे विद्यार्थी को अपनी अच्छी अध्ययन आदते विकसित करने, गलतियों को सुधारने तथा अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत् होने की प्रेरणा मिलती है। इससे प्रत्येक व्यक्ति को अनुदेश के विशेष क्षेत्रों का पता लगाने में सहायता मिलती है जिनकी ओर अधिक ध्यान दिया जाना अपेक्षित है।

– इससे भविष्य के लिए अध्ययन क्षेत्रों, पाठ्यक्रमों और व्यवसायक के चयन के सम्बन्ध में निर्णय लेने में सहायता मिलती है।

– यह शैक्षिक और गैर–शैक्षिक क्षेत्रों में विद्यार्थी की प्रगति सम्बन्धी सूचना/रिपोर्ट उपलब्ध कराता है और इस प्रकार शिक्षार्थी की भावी सफलता का अनुमान लगाने में सहायता मिलती है।

Digital Learning Classes